हिन्दी दैनिक

रोजनामा इन्डो गल्फ

E-mail:newsindogulf730@gmail.com

सच्चाई में है दम, सच लिखते हैं हम

पटना, रविवार | 23 जून 2024 | वर्ष : 02 अंक : 41 | पृष्ठ -12 | PRGI NO - BIHHIN/2023/86924 | मूल्य - ₹ 3 | पटना संस्करण

भारत-बांग्लादेश के बीच कई समझौतों पर हस्ताक्षर, पीएम मोदी बोले-

हम अपने संबंधों को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हैं

प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत चिकित्सा उपचार के लिए बांग्लादेश से भारत आने वाले लोगों के लिए ई-मेडिकल वीजा सुविधा शुरू करेगा। उन्होंने कहा कि हमने बांग्लादेश के उत्तर पश्चिम क्षेत्र के लोगों की सुविधा के लिए रंगपुर में एक नया सहायक उच्चायोग खोलने की पहल की है।

एजेंसी

नई दिल्ली: भारत और बांग्लादेश ने दिल्ली के हैदराबाद हाउस में प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी और बांग्लादेशी की प्रधान मंत्री शेख हसीना की उपस्थिति में समझौता ज्ञापनों और समझौतों का आदान-प्रदान किया। इस दौरान मोदी ने सबसे पहले कहा कि पिछले 1 साल में हम 10 बार मिल चुके हैं, आज की मुलाकात एक विशेष मुलाकात है क्योंकि प्रधानमंत्री शेख हसीना हमारे तीसरे कार्यकाल में हमारी पहली राजकीय अतिथि हैं। उन्होंने कहा कि बांग्लादेश हमारी नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी, एक्ट ईस्ट पॉलिसी, विजन सागर और इंडो-पैसिफिक विजन के संगम पर स्थित है। मोदी ने कहा कि पिछले एक साल में हमने मिलकर जन कल्याण की कई महत्वपूर्ण परियोजनाएं पूरी की हैं...दोनों देशों के बीच भारतीय रुपये में व्यापार शुरू हो गया है।' उन्होंने कहा कि भारत और बांग्लादेश के बीच गंगा नदी पर दुनिया की सबसे लंबी नदी यात्रा सफलतापूर्वक पूरी हो गई है। भारत

और बांग्लादेश के बीच पहली सीमा पार मैत्री पाइपलाइन पूरी हो गई है। भारतीय ग्रिड के माध्यम से नेपाल से बांग्लादेश तक बिजली का निर्यात ऊर्जा क्षेत्र में उप-क्षेत्रीय सहयोग का पहला उदाहरण बन गया है। सिर्फ एक साल में इतने सारे क्षेत्रों में इतनी बड़ी पहल लागू करना हमारे संबंधों की गति और पैमाने को दशार्ता है।प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत चिकित्सा उपचार के लिए बांग्लादेश से भारत आने वाले लोगों के लिए ई-मेडिकल वीजा सुविधा शुरू करेगा। उन्होंने कहा कि हमने बांग्लादेश के उत्तर पश्चिम क्षेत्र के लोगों की सुविधा के लिए रंगपुर में एक नया सहायक उच्चायोग खोलने की पहल की है। मैं दोनों टीमों को आज शाम क्रिकेट विश्व कप मैच के लिए शुभकामनाएं देता हूं... बांग्लादेश भारत का सबसे बड़ा विकास भागीदार है और हम बांग्लादेश के साथ अपने संबंधों को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हैं। उन्होंने कहा कि मैं दोनों टीमों को क्रिकेट विश्व कप मैच के लिए शुभकामनाएं देता हूं... बांग्लादेश भारत का सबसे बड़ा विकास भागीदार है और हम बांग्लादेश के साथ अपने संबंधों को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हैं। उन्होंने कहा कि हमने कनेक्टिविटी, वाणिज्य और सहयोग को अपना फोकस रखा है। पिछले 10 वर्षों में, हमने 1965 से पहले मौजूद कनेक्टिविटी को बहाल कर दिया है। अब हम डिजिटल और ऊर्जा कनेक्टिविटी पर और भी अधिक ध्यान केंद्रित करेंगे। इससे दोनों देशों की अर्थव्यवस्था में तेजी आएगी. दोनों पक्ष हमारे आर्थिक संबंधों को नई ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए सीईपीए पर बातचीत शुरू करने के लिए तैयार हैं। मोदी ने कहा कि 54 नदियां भारत और बांग्लादेश को जोड़ती हैं - हमने बाढ़ प्रबंधन, प्रारंभिक चेतावनी और पेयजल परियोजनाओं पर सहयोग किया है।

ब्रीफ न्यूज

वार्षिक अम्बुबाची मेला शुरू होते ही कामाख्या मंदिर के कपाट बंद

एजेंसी

गुवाहाटी। असम के गुवाहाटी में नीलाचल पहाड़ियों पर स्थित कामाख्या मंदिर में वार्षिक अम्बुबाची मेला शनिवार को शुरू हो गया और देवी के अनुष्ठानिक वार्षिक मासिक धर्म चक्र के साथ ही अगले चार दिन के लिए मंदिर के कपाट बंद कर दिए गए हैं। मेले में लाखों श्रद्धालु आते हैं और कपाट खुलने के बाद पूजा फिर से शुरू होने का इंतजार करते हैं और देवी की अराधना करते हैं। मंदिर के अधिकारियों ने बताया कि ह्यप्रब्रितिह्ल की शुरूआत के साथ सुबह आठ बजकर 43 मिनट पर कपाट बंद कर दिए गए और 25 जून को ह्यनृब्रितिह्ल के बाद रात नौ बजकर सात मिनट पर कपाल खुलने के बाद पूजा फिर से शुरू होगी। उन्होंने बताया कि 26 जून को स्नान और नियमित पूजा के बाद मंदिर के कपाट भक्तों के लिए भी खोल दिए जाएंगे। माना जाता है कि जब देवी अपने मासिक धर्म से गुजरती हैं तब पूजा को रोक दिया जाता है। साल में एक बार इस दौरान मंदिर के कपाट चार दिन के लिए बंद कर दिए जाते हैं।

निर्मला सीतारमण ने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के वित्त मंत्रियों के साथ बजट-पूर्व परामर्श बैठक की

एजेंसी

नई दिल्ली: निर्मला सीतारमण ने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के वित्त मंत्रियों के साथ बजट-पूर्व परामर्श बैठक की। पूरा देश 2024-25 के लिए केंद्रीय बजट का इंतजार कर रहा है, सरकार उस दिशा में तैयारी कर रही है। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने शनिवार को बजट-पूर्व बैठक की अध्यक्षता की। उन्होंने सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के वित्त मंत्रियों के साथ बैठक की।आगामी केंद्रीय बजट 2024-25 के लिए सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के वित्त मंत्रियों से सुझाव लेने के लिए वित्त और कॉर्पोरेट मामलों के मंत्रालय द्वारा यह बजट-पूर्व बैठक आयोजित की गई थी। भारत मंडपम में आयोजित इस बैठक में राजस्थान से दीया कुमारी और यूपी से सुरेश कुमार खन्ना सहित अन्य राज्यों के वित्त मंत्री शामिल हुए।विशेष रूप से, वित्त मंत्रालय वर्तमान में बजट पर विभिन्न हितधारकों से परामर्श करने की प्रक्रिया में है। उन्होंने अर्थशास्त्रियों, वित्त और पूंजी बाजार विशेषज्ञों और उद्योग निकायों से मुलाकात की है। पहली प्री-बजट बैठक 19 जून को हुई थी। इस बैठक में केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी, वित्त सचिव, आर्थिक मामलों, राजस्व, वित्तीय सेवाओं और कॉर्पोरेट मामलों के विभागों के सचिव और मुख्य आर्थिक सलाहकार शामिल हुए थे।इसके अलावा, 21 जून को उन्होंने किसान संघों के नेताओं और कृषि अर्थशास्त्रियों से मुलाकात की। जीएसटी परिषद की बैठक आज होगी बजट पूर्व बैठक के अलावा सीतारमण आज 53वीं वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) परिषद की बैठक की अध्यक्षता भी करेंगी।दिन के दूसरे पहर में होने वाली यह बैठक नई सरकार के गठन के बाद जीएसटी परिषद की पहली बैठक है।

स्वाति मालीवाल से मारपीट मामले में बिभव कुमार को नहीं मिली राहत, 6 जुलाई तक बढ़ी न्यायिक हिरासत

एजेंसी

नई दिल्ली: नई दिल्ली की तीस हजारी अदालत ने स्वाति मालीवाल मारपीट मामले में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के सहयोगी बिभव कुमार की न्यायिक हिरासत शनिवार को 6 जुलाई तक बढ़ा दी। आप की राज्यसभा सांसद ने बिभव कुमार पर 13 मई को मुख्यमंत्री के आधिकारिक आवास पर उनके साथ मारपीट करने का आरोप लगाया था। बिभव कुमार को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए मेट्रोपॉलिटन मजिस्ट्रेट गौरव गोयल के सामने पेश किया गया, जिन्होंने उनकी न्यायिक हिरासत 6 जुलाई तक बढ़ा दी।विभव कुमार को 18 मई को गिरफ्तार किया गया था और एक मजिस्ट्रेट अदालत ने उन्हें पांच दिनों के लिए पुलिस हिरासत में भेज दिया था, जिसमें कहा गया था कि उनकी गिरफ्तारी से उनकी अग्रिम जमानत याचिका बेकार हो गई है। 24 मई को, उन्हें चार दिनों के लिए न्यायिक हिरासत में स्थानांतरित कर दिया गया, जिसके बाद उन्हें एक बार फिर तीन दिनों के लिए पुलिस हिरासत में भेज दिया गया। बिभव कुमार के खिलाफ 16 मई को विभिन्न भारतीय दंड संहिता प्रावधानों के तहत एक प्राथमिकी दर्ज की गई थी।

अधीर रंजन ने कांग्रेस की बंगाल इकाई के अध्यक्ष पद से इस्तीफा देने से किया इनकार

एजेंसी

पश्चिम बंगाल: कांग्रेस के वरिष्ठ नेता अधीर रंजन चौधरी ने शुक्रवार को उन खबरों को खारिज किया जिनमें कहा गया था कि उन्होंने पश्चिम बंगाल प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया है।उन्होंने दावा किया कि कांग्रेस के संविधान के अनुसार पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के चुनाव के बाद सभी प्रदेश इकाइयों के अध्यक्ष अस्थायी प्रमुख बन गए हैं।चौधरी ने कहा, मैं कांग्रेस की प्रदेश इकाई का अस्थायी अध्यक्ष हूं। जिस दिन से मल्लिकार्जुन खरगे कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने हैं तब से भारत के किसी अन्य राज्य में अध्यक्ष नहीं रहा है।उन्होंने कहा कि यह आश्चर्यजनक है कि मीडिया ऐसी कहानियां गढ़ रहा है।

पेपर लीक करने वालों को छोड़ेंगे नहीं, तेजस्वी यादव बोले-

मुद्दा डायवर्ट करने के लिए हमें गाली दे रही सरकार

एजेंसी

पटना: नीट पेपर लीक मामले में बिहार के पूर्व डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव ने केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि जिसने भी यह काम किया है, वो छिपने वाला नहीं है। पेपर लीक करने वाले को हम लोग छोड़ेंगे नहीं। तेजस्वी ने कहा कि सरकार मुद्दे से ध्यान भटकाने के लिए लालू और तेजस्वी को गाली दे रही है। पहले ये मान नहीं रहे थे कि नीट का पेपर लीक हुआ है। अब खुद ही इसके खिलाफ कानून लेकर आ रहे हैं।राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) के नेता तेजस्वी यादव ने शनिवार को पटना स्थित अपने सरकारी आवास के पास मीडिया से बातचीत की। इस दौरान उन्होंने जांच एजेंसियों से नीट परीक्षा के पेपर लीक मामले की निष्पक्ष जांच करने की अपील की। उन्होंने कहा कि पेपर लीक के आरोपी संजीव मुखिया और उसके साथ आ रहे नामों की जांच की जाए। तेजस्वी ने कहा कि जिसने भी युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ किया है, उसे छोड़ने वाले नहीं हैं।

'चंद्रबाबू नायडू तानाशाह की तरह काम कर रहे हैं', कार्यालय को ध्वस्त कराने के सरकारी आदेश के बाद जगन मोहन रेड्डी का नयी आंध्र सरकार पर तीखा हमला

एजेंसी

आंध्र प्रदेश: आंध्र प्रदेश गुंटूर जिले के ताडेपल्ली में वाईएसआर कांग्रेस पार्टी के निमार्णाधीन केंद्रीय कार्यालय को कथित अवैध निर्माण के कारण शनिवार सुबह नगर निगम अधिकारियों ने ध्वस्त कर दिया। पार्टी प्रमुख जगन मोहन रेड्डी ने टीडीपी के नेतृत्व वाली सरकार को जिम्मेदार ठहराते हुए इस विध्वंस की निंदा की और कहा कि उच्च न्यायालय के आदेशों की घोर अवहेलना करते हुए इस विध्वंस को अंजाम दिया गया।उन्होंने राज्य में कथित अराजकता के लिए टीडीपी, भाजपा और जनसेना वाली एनडीए सरकार की आलोचना की। उन्होंने तर्क दिया कि यह विध्वंस इस बात का संकेत है कि अगले पांच वर्षों में नायडू का शासन कैसा होगा। रेड्डी ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, "चंद्रबाबू ने प्रतिशोध की राजनीति को अगले स्तर पर पहुंचा दिया। एक तानाशाह की तरह, उन्होंने खुदाई करने वाली मशीनों और बुलडोजरों से वाईएसआरसीपी के केंद्रीय कार्यालय को ध्वस्त करवा दिया।

सत्याग्रह आयोजित कर फोटो तो खूब खिंचवाई, मगर ज्यादातर समय धरना स्थल से गायब रहती हैं आतिशी!

एजेंसी

दिल्ली: दिल्ली सरकार की जल मंत्री आतिशी ने अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल शुरू की है। उनका आरोप है कि हरियाणा सरकार दिल्ली को उसके हक का पानी नहीं दे रही है। जनता ने आम आदमी पार्टी को बहुमत दिया था ताकि वह दिल्ली की समस्याओं का समाधान करे लेकिन यह पार्टी दिल्ली के लिए अब खुद समस्या बन चुकी है। दिल्ली में पानी की कमी हो जाये तो कह दिया जाता है कि हरियाणा पानी नहीं दे रहा। दिल्ली में बाढ़ आ जाये तो कह दिया जाता है कि हरियाणा ने ज्यादा पानी छोड़ दिया। दिल्ली में प्रदूषण बढ़ जाये तो पहले पंजाब के किसानों को जिम्मेदार बता दिया जाता था लेकिन अब चूंकि वहां आम आदमी पार्टी की सरकार है इसलिए इस पार्टी के नेता अब राजधानी में वायु प्रदूषण में वृद्धि का ठीकरा हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसानों पर फोड़ देते हैं। वैसे देखा जाये तो दिल्ली में हर साल आने वाली समस्याओं से वाकिफ होते हुए भी उनके अस्थायी या स्थायी समाधान के लिए कोई रणनीति बनाकर काम नहीं किया जाता। जब समस्या खड़ी हो जाती है तो आम आदमी पार्टी तुरंत हल चाहती है और ऐसा नहीं होने पर आरोप-प्रत्यारोप की राजनीति शुरू हो जाती है।

नहीं रहे रामलला की प्राण प्रतिष्ठा करवाने वाले पंडित लक्ष्मीकांत दीक्षित, मोदी-योगी ने जताया दुख

एजेंसी

उत्तर प्रदेश: उत्तर प्रदेश के अयोध्या में राम मंदिर में राम लला की मूर्ति के अभिषेक समारोह में पुजारियों के समूह का नेतृत्व करने वाले वाराणसी के वैदिक विद्वान पंडित लक्ष्मीकांत मथुरानाथ दीक्षित का शनिवार को निधन हो गया। दीक्षित, जो 86 वर्ष के थे, ने सुबह 6:45 बजे अंतिम सांस ली। दीक्षित हिंदू समुदाय के प्रति अपनी गहरी निष्ठा के साथ-साथ अपने नेतृत्व के लिए भी जाने जाते थे। एक वैदिक 'कर्मकांड' (अनुष्ठान) विद्वान, उन्हें रामलला प्राण प्रतिष्ठा समारोह को संपन्न करने के लिए वेदों की सभी शाखाओं के 121 विद्वानों की एक टीम का नेतृत्व करने के लिए चुना गया था। वाराणसी के मूल निवासी दीक्षित कथित तौर पर 17वीं शताब्दी के प्रतिष्ठित काशी विद्वान गागा भट्ट के वंशज थे, जिन्होंने लगभग 350 साल पहले 1674 में छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक का नेतृत्व किया था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आचार्य दीक्षित के निधन पर गहरा दुख व्यक्त किया है। एक्स पर एक पोस्ट में उन्होंने कहा कि दीक्षित का निधन समाज के लिए एक अपूरणीय क्षति है। उन्होंने लिखा कि देश के मूर्धन्य विद्वान और साङ्गवेद विद्यालय के यजुर्वेदाध्यापक लक्ष्मीकान्त दीक्षित जी के निधन का दुःखद समाचार मिला। दीक्षित जी काशी की विद्वत परंपरा के यशपुरुष थे। काशी विश्वनाथ धाम और राम मंदिर के लोकार्पण पर्व पर मुझे उनका सान्निध्य मिला। उनका निधन समाज के लिए अपूरणीय क्षति है।उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आचार्य दीक्षित के निधन पर शोक व्यक्त किया। उन्होंने लिखा कि काशी के प्रकांड विद्वान एवं श्री राम जन्मभूमि प्राण प्रतिष्ठा के मुख्य पुरोहित, वेदमूर्ति, आचार्य श्री लक्ष्मीकांत दीक्षित जी का गोलोकगमन अध्यात्म व साहित्य जगत की अपूरणीय क्षति है।

नीट पेपर लीक मामले में झारखंड से पांच और गिरफ्तार, बढ़ता जा रहा है मुद्दा

एजेंसी

पटना,रांची: बिहार पुलिस की आर्थिक अपराध इकाई (ईओयू) ने शुक्रवार को नीट-यूजी प्रश्नपत्र लीक मामले में पांच और लोगों को गिरफ्तार किया, जिससे इस मामले में गिरफ्तार लोगों की कुल संख्या 18 हो गई। नाम न बताने की शर्त पर एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि झारखंड के देवघर में नवीनतम गिरफ्तारियां की गईं। सभी पांच व्यक्तियों को आगे की पूछताछ के लिए पटना ले जाया गया।इससे पहले, रांची से दो लोगों को गिरफ्तार किया गया था: अवधेश कुमार और उसका बेटा अभिषेक, जो नीट परीक्षा देने वाला है। अपने कबूलनामे में, अवधेश ने कहा था कि उसने प्रश्नपत्र के लिए कथित मास्टरमाइंड सिकंदर यादवेंदु को 40 लाख रुपये दिए थे।अधिकारियों का मानना ??है कि झारखंड के निर्माण उद्योग में अपने पिछले कामकाजी संबंधों के माध्यम से अवधेश का सिकंदर यादवेंदु से संबंध हो सकता है।सूत्रों ने बताया कि पूर्व ठेकेदार सिकंदर, जो अब दानापुर नगर परिषद में जूनियर इंजीनियर के रूप में काम करता है, ने झारखंड में महत्वपूर्ण निवेश किया है, जिसमें रांची में उसके बेटे के स्वामित्व वाली इनफिनिटी नामक एक प्रमुख स्पोर्ट्स आउटलेट और शहर के बरियातू इलाके में एक विशाल आवास शामिल है। सूत्रों ने बताया कि बिहार पुलिस की आर्थिक अपराध इकाई (ईओयू) सिकंदर के खिलाफ आय से अधिक संपत्ति का मामला दर्ज करने की तैयारी कर रही है। इससे पहले बिहार पुलिस ने इस मामले में चार नीट-यूजी उम्मीदवारों और उनके परिवार के सदस्यों सहित 13 लोगों को गिरफ्तार किया था। गिरफ्तार किए गए लोगों में अभ्यर्थी अनुराग यादव, सिकंदर यादवेंदु और दो अन्य नीतीश कुमार और अमित आनंद शामिल हैं।पुलिस सूत्रों ने बताया कि उन्होंने परीक्षा से एक दिन पहले प्रश्नपत्र प्राप्त करने और उत्तर याद करने की बात कबूल की है। पटना पुलिस को एक अज्ञात सूचना के बाद गिरफ्तारियां की गई।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर मोतिहारी के योग गुरु शैलेंद्र नाथ गिरी राष्ट्रीय योग रत्न से सम्मानित , नगर के कई महत्वपूर्ण संस्थानों में योग कराया

संवाददाता

मोतिहारी 22 जून ,कफील एकबाल अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर नगर के कई महत्वपूर्ण एवं बड़े शिक्षण संस्थानों में योग गुरु शैलेंद्र नाथ गिरी ने अपनी शिष्या पूजा वर्मा के साथ योग का अभ्यास कराया साथ-साथ योग के वैज्ञानिक पक्ष को भी रखा। महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय में योग कराने के बाद अपने संबोधन में उन्होंने कहा की वर्तमान भाग दौड़ की जिंदगी में जो लोग योग को नहीं अपनायेंगे वे बीमारी से नहीं बच पाएंगे। दुनिया में प्राकृतिक चक्र घूम रहा है प्रकृति के पांचो तत्व तमोप्रधान हो चुके हैं मानव जाति पर उसका लगातार हमला होना आरंभ हो गया है ऐसी स्थिति में योगी आत्माएं ही सुरक्षित रह सकती है तथा प्राकृतिक प्रकोप से अपने को बचा सकती हैं। उन्होंने आयुर्वेद में लिखे गए बातों को बताते हुए कहा कि हर समय और स्थिति में आने वाले रोगों से अगाह किया गया है लेकिन आज के दौर में आध्यात्मिक बातों पर चलने के बजाय डाक्टरो के यहा जाना लोग ज्यादा पसंद कर रहे है।लोग दवा के अभ्यस्त होते जा रहे है,परिणाम डॉक्टरो के यहा लगातार भीड बढ़ती जा रही है ।उन्होंने कहा कि भारत सरकार के पहल पर योग को अंतरराष्ट्रीय ख्याति दिलाई गई

है जिसके लिए माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की जितनी भी प्रशंसा की जाए कम होगी।उन्होंने प्रधानमंत्री के प्रति आभार भी प्रकट किया। एसएमएस फामेर्सी कॉलेज एवं इंडियन वायल कॉरपोरेशन मे भी इन्होंने सामूहिक योग का अभ्यास कराया और योग के महत्व से आम लोगों को साक्षात्कार कराया। सहायक योग गुरू पूजा वर्मा ने भी योग के चमत्कारिक लाभ के बारे में बताया।उन्होंने कहा कि भारत का यह प्राचीन योग पद्धति है जो कारगर है।हमारे देश के ऋषि मुनी संत महात्माओं ने योग के बदौलत लंबी उम्र पाई थी, सिर्फ हमें उनका अनुसरण करना है और अपने शरीर को सुरक्षित एवं निरोगी रखने के लिए योग से संबंध जोड़ना है , ।कहा कि अपने दिनचर्या के व्यस्त समय से इस अनमोल शरीर के लिए भी थोड़ा समय निश्चित रूप से निकले लाभ आपको ही होगा ।वैसे आने वाले दिनों में सभी को योग अपनाना मजबूरी होगी ।

एक तरफ योगी शैलेंद्र नाथ गिरी शहर वासियों को योग की गहन अनुभूति करा रहे थे दुसरी ओर भारत सरकार के फेयर विजन फाउंडेशन द्वारा राष्ट्रीय योग रत्न सम्मान से नवाजे जाने की घोषणा हुई।इतने बड़े सम्मान मिलने के बाद नगर के बुद्धिजीवियो और योग से जुड़े हुए कई लोगों ने प्रसन्नता व्यक्त की तथा उन्हें बधाई दी ।बधाई देने वालों में पूर्व मंत्री ब्रजकिशोर सिंह, जेपी सेनानी राय सुंदर देव शर्मा ,डाक्टर शोभाकांत चौधरी, प्रोफेसर राम रंजन पांडे,गाधीवादी विनय सिंह, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय मोतिहारी सेवा केंद्र प्रभारी बीके वीभा, ब्रह्माकुमारी मीडिया विग के आजीवन सदस्य बीके अशोक वर्मा, बीके अनीता, बीके पूनम, बीके शिवपूजन राउत, बीके बंशीधर भाई ,मनोज भाई ,वरिष्ठ अधिवक्ता धनंजय किशोर सिन्हा, बीके राम नंदन भाई ,बीके सुरेंद्र भाई ,मनोहर प्रसाद, सुमन आदि है।

शिया वक्फ बोर्ड के आरिफ रजा दिया त्याग-पत्र

बोर्ड के चेयरमैन और सी0ई0ओ0 पर लगाए गंभीर आरोप?

संवाददाता

पटना- शिया वक्फ बोर्ड में संविदा पर बहाल प्रशासी पदाधिकारी सैयद आरिफ रजा ने बोर्ड को चेयरमैन सैयद अफजल अब्बास को आखिरकार अपना इस्तीफा सौंप दिया। उन्होंने अपने इस्तीफे में चेयरमेन के कार्यकलापों पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उन्होंने लिखा है कि वक़्फ अधिनियम 1995 के विरुद्ध वक़्फ भूमि का ठडउ दिया गया, वक़्फ सम्पत्ति पर अतिक्रमण करने वालों के विरुद्ध कार्रवाई की गयी मगर बाद मे कार्रवाई रोक दी गई, रमजान के महीने में गरीबों को रमजान किट नहीं दिया गया, गरीब बच्चियों की शादी में वित्तीय सहायता बन्द कर दी गई है, इसके अतिरिक्त सभी कल्याणकारी कार्य बन्द हो गए हैं ।उन्होंने बोर्ड के सी०ई०ओ० पर भी आरोप लगाए हैं कि सी०ई०ओ० ने मुझसे सभी कार्य भार वापस
ले लिए और मुझसे कोई काम नहीं लिया जा रहा है। बता दें कि आरिफ रजा 30.6.2023 को ही रिटायर्ड कर चुके हैंमगर बोर्ड के चेयरमैन ने अपने तौर पर इन्हें रखा हुआ था मगर
बोर्ड के सी०ई०ओ० की ओर से नियुक्ति पत्र निर्गत नहीं किया और शायद इसी कारण आरिफ रजा को कार्यभार भी नहीं सौंपा गया। अब इन आरोपों का जवाब बोर्ड के चेयरमैन, सी०ई०ओ० और सदस्यों को देना चाहिए और अग्रतर कार्रवाई करनी चाहिए.कार्यक्रम में नारायण कुमार, विनोद पासवान ,संत लाल गुप्ता इत्यादि ने अपना अपना विचार व्यक्त किया।

इनर व्हील क्लब ऑफ मोतिहारी लेक टाउन के द्वारा आयोजित योग शिविर का संचालन योग गुरू किरण शर्मा ने किय

संवाददता
कफील एकबाल

मोतिहारी,22 जून अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर सोमवार को इनर व्हील क्लब ऑफ मोतिहारी लेक टाउन के द्वारा प्राणायाम का कार्यक्रम स्थानीय नवयुवक पुस्तकालय मीना बाजार में किया गया।कार्यक्रम का शुभारंभ क्लब के अध्यक्ष कुमारी अमृता के नेतृत्व में किया गया, क्लब की पीपी रजनी कौशल ने योग गुरु श्रीमती किरण शर्मा एवं सभी सदस्यों का स्वागत किया। योग प्रशिक्षिका श्रीमती किरण शर्मा के द्वारा योग कराया गया एवं योग से होने वाले प्राप्तियो पर प्रकाश डाला गया।योग शिक्षिका एवं क्लब की पीपी धीरा गुप्ता ने बहुत सारे आसनों और प्राणायाम के महत्व को समझाया एवं उपस्थित महिलाओं को योग को अपनी दिनचर्या में शामिल करने के लिए कहा। क्लब की अध्यक्ष

कुमारी अमृता ने योग के बारे में उपस्थित महिलाओं को बताया, 21 जून को प्रत्येक वर्ष अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है 2014 में हमारे पीएम मोदी जी ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाने का सुझाव दिया लगभग 177 राष्ट्र इस उत्सव के समर्थन में आए, तब हमारे मोदी जी ने 21 जून 2015 को विश्व में पहला अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया ।योग से हमारा शरीर एवं मन स्वस्थ रहता है। कार्यक्रम में क्लब की ,कोषाध्यक्ष चन्द्रलता वर्मा, एडिटर आबिदा शमीम, पीपी निशा देवा, दीपा गुप्ता, मनीषा प्रसाद, निशा प्रकाश, सीमा गुप्ता , क्लब एडिटर आबिदा शमीम शामिल थी।

प्रखंड लौकही पंचायत बरुआर में GPPFT की महत्वपूर्ण बैठक

संवाददाता
अबु बकर

मधुबनी,लौकहीः प्रखंड स्तर पर सामाजिक और आर्थिक विकास को गति देने के उद्देश्य से प्रखंड लौकही पंचायत के राजकीय मध्य विद्यालय बरुआर में ग्राम पंचायत प्रोग्राम फेसिलिटेशन टीम (ऋढढऋळ) की एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। इस बैठक की अध्यक्षता उप मुखिया उपेंद्रप्रसाद मंडल ने की, जिसमें प्रखंड के विभिन्न विभागों के सहयोग से पंचायत के विकास पर चर्चा की गई।बैठक में स्वास्थ्य, समाज कल्याण, शिक्षा, पंचायती राज एवं अन्य विभागों के सदस्यों ने भाग लिया।इस महत्वपूर्ण बैठक में प्रमुख विषयों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई, जैसे कि टी बी मुक्त पंचायत, फाईलेरिया, मॉडल पंचायत, संस्थागत प्रसव, टीकाकरण, परिवार नियोजन, आदि। पंचायत को आगे कैसे बढ़ाया जाए, इस पर भी गहन विचार-विमर्श हुआ और विभिन्न विभागों के कार्यों की आपसी समझ बढ़ाने पर बल दिया गया।इस बैठक में पंचायत को मॉडल रूप में विकसित करने और स्थानीय समस्याओं का समाधान निकालने की दिशा में भी चर्चा की गई।बैठक में उप मुखिया उपेंद्र प्रसाद मंडल, पंचायत सचिव - प्रकाश कुमार, कनीय अभियंता प्रवीण सिन्हा, स्कूल के प्रधानाध्यापक कपिलदेव राम, उमेश कुमार यादव, बासित हेमरम एस टी एस, पंचायत बरुआर की आँगनवारी सेविकाएं, आशा, आशा फसीलेटर, वार्ड सदस्य पिरामल स्वास्थ्य से प्रोग्राम लीडर पंकज कुमार, एवं अन्य कर्मचारी उपस्थित थे।प्रखंड के विकास में सहयोग करने के इस नए कदम को एक महत्वपूर्ण बैठक के रूप में देखा जा रहा है।

मांझी थानान्तर्गत आर्थिक फ्रॉड काण्ड के 04 अभियुक्तो को सारण साइबर थाना द्वारा किया गया गिरफ्तार

संवाददाता

सारण साइबर थाना को सूचना प्राप्त हुई कि दिलीप कुमार, पिता- सदन चौधरी, सा०- मांझी थाना बाजार, थाना- मांझी, जिला- सारण द्वारा अपने पडोसी सचिन कुमार चौधरी, पिता- कंचन चौधरी को प्रधानमंत्री कृषि योजना के तहत लाभ दिलवाने का झांसा देकर बैंक ऑफ महाराष्ट्र, छपरा में खाता खोलवाकर इनके अकाउंट से करोड़ो रुपया का लेनदेन किया गया, जो एक प्रकार का आर्थिक धोखाधड़ी है ` इस सम्बन्ध में सारण साइबर थाना कांड संख्या -151/24, दिनांक- 11.05.24, धारा- 419/420 भा0द0वि0 एवं 66(उ)/ 66(ऊ) क्ळ एक्ट दर्ज किया गया था ` दिनांक- 21.06.24 को सारण साइबर थाना द्वारा काण्ड के नामजद अभियुक्त 1. दिलीप कुमार, पिता- सदन चौधरी, सा०- मांझी थाना बाजार, थाना- मांझी, जिला- सारण सहित इस फ्रॉड कांड में संलिप्त 03 अन्य साइबर अपराधियों को गिरफ्तार किया गया है`

? गिरफ्तार अभियुक्त
1. दिलीप कुमार, उम्र- 22 वर्ष, पिता- सदन चौधरी, सा०- मांझी थाना बाजार(दक्षिण टोला), थाना- मांझी, जिला- सारण 2. कृष्णा राम , उम्र-38 वर्ष, पिता-स्व० गणेश राम, सा०- मांझी थाना बाजार(दक्षिण टोला), थाना- मांझी, जिला- सारण3. विकाश कुमार दास , उम्र- 37 वर्ष, पिता-स्व० हीरालाल राम, सा०- मांझी थाना बाजार(दक्षिण टोला), थाना- मांझी, जिला- सारण 4. सुनील कुमार राम , उम्र-38 वर्ष, पिता-स्व० सीताराम दास, सा०- मांझी थाना बाजार(दक्षिण टोला), थाना- मांझी, जिला- सारण
* छापामारी दल में शामिल पदाधिकारीश्री अमन, पुलिस उपाधीक्षक -सह-थानाध्यक्ष साइबर थाना, पु०अ०नि० निरंजन कुमार, साईबर थाना, एवं थाना के अन्य कर्मी

मधुबनी सम्हरणालय के सामने कांग्रेस पार्टी के द्वारा आठ सूत्री मांगों को लेकर एक दिवसीय धरना प्रदर्शन

संवाददाता
अबु बकर

सम्हरणालय सामने कांग्रेस पार्टी के द्वारा आठ सूत्री मांगों को लेकर एक दिवसीय धरना प्रदर्शन किया गया जिला कांग्रेस कमेटी के द्वारा मांग किया गया के मधुबनी नगर निगम के वार्ड नंबर 16 शेख टोली मंगरौनी में 2 एकड़ के तालाब को अज्ञात लोगों के द्वारा दर्जनों ट्रैक्टर लगाकर तालाब को जबरन भरा जा रहा है वही बताया गया कि यह बिहार सरकार की भूमि है यह जीवित तालाब है जिसमें यहां के स्थानीय लोग इस पर आश्रित हैं बरसों से यहां के लोग इस तालाब को इस्तेमाल करते आरहे हैं कांग्रेस पार्टी के जिला अध्यक्ष मनोज कुमार झा के अध्यक्षता में आठ सूत्री मांगों को लेकर एक दिवसीय धरना प्रदर्शन किया गया बिहार सरकार जल जीवन हरियाली अभियान चलाया जा रहा है भू माफियाओं द्वारा अज्ञात भू माफिया द्वारा तालाब को भरा जा रहा है. मांग पत्र में कहां गया कि
1) नगर निगम के अंतर्गत सभी जीवंत अथवा सरकारी गैर सरकारी तलाबो को सूचीबद्ध कर के उसे संरक्षित किया जाए 2) नगर निगम के वार्ड नंबर 16 शेख़्टोली मंगरौनी के तालाब को भरने से अभिलंब रोका लगाया जाए नगर निगम क्षेत्र में सभी जगह पर स्ट्रीट लाइट लगाया जाए नगर निगम के सभी कॉलोनी में सीसीटीवी कैमरा लगाया जाए. जल संकट को देखते हुए अभिलंब एचडी द्वारा खराब पड़े चंपा कल को अभिलंब दुरुस्त कराया जाए आठ सूत्री मांगों को लेकर जमकर भू माफियाओं के खिलाफ नारेबाजी की गई एवं सरकारी एवं गैर सरकारी तालाबों को भरने से रोके जाने की मांग की गई. इस अवसर पर जिला अध्यक्ष मनोज कुमार झा, मधुबनी नगर निगम के डिप्टी मेयर अमानुल्लाह खान, रूपक रंजन झा, मोहम्मद शाहिद हुसैन, झुन्ना खान, लियाकत हुसैन, कालू,अकील अंजुम, मोहम्मद शकील, कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ता एवं स्थानीय लोग एवं महिलाएं बड़ी संख्या में उपस्थित थी मांग पत्र जिला अधिकारी को दिया गया
प्रदर्शन कर रहे कार्यकताओं ने कहा कि अगर इस तालाब को भरने से रोका नहीं गया तो आगे भी प्रदर्शन जारी रहेगा

लोकसभा चुनाव में जनता द्वारा नकारे जाने के कारण तेजस्वी पूरे बिहार में अपना अस्तित्व तलाशने जा रहे हैं - अरविन्द सिंह

संवाददाता

पटना, 22 : भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता अरविन्द कुमार सिंह ने कहा है कि तेजस्वी यादव जो बिहार का 15 अगस्त से दौरा करना जा रहे हैं वे लोकसभा चुनाव में अपने प्रचंड हार की समीक्षा करने जा रहे हैं।वे किन कुकर्मों के कारण लोकसभा में इतनी बुरी तरीके से हारे हैं। वे यह उम्मीद पाल के रखे थे कि बिहार में ज्यादा सिट पा जाएंगे लेकिन जनता ने इनको नकार दिया है जनता समझ रही थी कि यह वही घपले घोटाले और अखंड भ्रष्टाचार में डूबे लोग हैं जो अपराधियों के पनाहगाहर और चारा घोटाले में लिप्त परिवार है। बिहार की जनता समझ चुकी है कि यह वही परिवार एक बार पुनः बिहार में सक्रिय हो रही हैं ऐ वही माफिया वही घोटालेबाज वही अपराधियों के संरक्षक के नया वेरिएंट है। श्री अरविन्द ने कहा की इसलिए जनता ने लोकसभा में राजद को धूल चटाने का काम किया।उसी हार की समीक्षा करने तेजस्वी यादव जी बिहार के दौरे पर जा रहे हैं।क्योंकि बिहार की जनता उन्हें क्यों नकार दिया है लालू परिवार को क्यों बिहार की जनता लगातार नकार रही है"? क्योंकि बिहार के सबसे बड़े परिवारवादी और भ्रष्टाचारियों की पारिवारिक समूह को लगातार बिहार की जनता द्वारा नकारे जाने के कारण तेजस्वी यादव जी पूरे बिहार में अपना अस्तित्व तलाशने जा रहे हैं।

ब्रीफ न्यूज

जेपी सेनानी सदर अनुमंडल अध्यक्ष जय नारायण प्रसाद कुशवाहा नहीं रहे, संगठन मे शोक की लहर

संवाददता
कफील एकबाल

मोतिहारी 22 जून ,जे पी लोकतंत्र सेनानी संगठन सदर अनुमंडल अध्यक्ष जयनारायण प्रसाद कुशवाहा का आज संध्या लगभग 5 बजे अकस्मात निधन हो गया। मृत्यु की खबर आते ही संगठन में शोक की लहर दौड गई। बुद्धिजीवी वर्ग शोकग्रस्त हो गया।जेपी सेनानी राय सुंदर देव शर्मा ने श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए कहा कि जय नारायण भाई कंधा से कंधा मिलाकर व्यवस्था परिवर्तन के लिए संघर्ष किया था।अचानक उनका जाना जे पी सेनानियो के लिए ह्रदय विदारक घटना है ।पूर्व प्राचार्य विनय वर्मा एवं कुमार शिव शंकर ने शोक संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि 11 अक्टूबर जेपी जयंती के अवसर पर उनसे मिलने का मौका मिला था। बहुत दुख हुआ कि वे हमें छोड़कर चले गए ।74 आंदोलन में अग्रणी भूमिका का निर्वाह किया था।जेपी सेनानी अशोक वर्मा ने कहा कि वे अति व्यवहार कुशल थे तथा सभी के साथ बहुत ही आत्मिक संबंध रखते थे।शोक संवेदना व्यक्त करने वालों में नंद भाई, कैप्टन अब्दुल हामीद ,ममता वर्मा अधिवक्ता आदि है।बुद्धिजीवी वर्ग से अधिवक्ता शिव पूजन राउत धनंजय सिन्हा, राजीव कुमार वर्मा सेनानी ने भी शोक संवेदना व्यक्त किया।

सिवान के महाराजगंज मे गंडक नहर पर बना पूल धसा। कई गावों का सम्पर्क भंग।

संवाददाता
मोहम्मद आरिफ

सिवान महराजगंज अनुमंडल दुरौंधा 22 जून शनिवार।दुरौंधा के रामगढ़ा पंचायत के गोरौली मे गंडक नहर पर बना पूल ध्वस्त हो गया।इस हादसे में किसी की हताहत या कोई हादसा नही हुआ है।यह पूल टूटने से कई गांवों का सम्पर्क एक दूसरे से छूट गया है।स्थानीय लोगों ने बताया की यह पूल लगभग 40 साल पुराना था।इस पूल का निर्माण स्थानीय लोगो द्वारा चंदा एकत्रित कर निर्माण कार्य शुरू करवाए गया था।लेकिन बाद मे बिहार सरकार का सहयोग मिला तो पूल तैयार हुआ जो आज धारा शाई हो गया। अब देखना ये है की कब इसका जीणोर्धार हो रहा है।इस पूल से सम्पर्क भंग होने वाले गांव, रामगढ़ा, गोरौली,पटेढी, देवरिया इत्यादि गांव के ग्रामीणों की मांग है जल्द से जल्द इस पूल का जीणोर्धार किया जाए ताकि आवागमन सुचारू रूप से हो सके।

योग स्वस्थ जीवन का आधार : डॉ . धर्मशीला गुप्ता

संवाददता

पटना, 22 जून।भाजपा महिला मोर्चा बिहार प्रदेश द्वारा आज 21 जून को 10 वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर पटना साहिब के कंगन घाट पर योग शिविर सह योग कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि माननीय राज्यसभा सांसद सह महिला मोर्चा बिहार की अध्यक्ष आदरणीय श्रीमती डॉ. धर्मशीला गुप्ता जी शामिल हुई।
प्रातः 6 बजे आयोजित इस योग कार्यक्रम में बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्त्ता और स्थानीय लोग शामिल हुए।कार्यक्रम के उपरांत महिला मोर्चा माननीय प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती डॉ. धर्मशीला गुप्ता जी ने उपस्थित लोगों को अंतराष्ट्रीय योग दिवस की शुभकामनाएं देते हुए अपने सम्बोधन में कहा कि योग ही स्वस्थ जीवन का आधार है ।उन्होंने कहा कि योग स्वस्थ, तनावमुक्त और अनुशासित जीवन जीने की एक शैली है।यह भारत की अमूल्य विद्या है जिसका महत्व आज पूरा विश्व समझ रहा है। उन्होंने लोगों से योग को अपनाने की सलाह देते हुए कहा कि योग करें और निरोग रहें। योग कार्यक्रम में बिहार की योग कार्यक्रम प्रभारी श्रीमती सरोज जायसवाल जी ,प्रदेश प्रवक्ता एव सह कार्यक्रम प्रभारी श्री प्रभाकर मिश्रा जी, श्रीमती सजल झा जी, महामंत्री श्रीमती सोभा सिंह जी आयोजन मंडल के श्री , श्री विनोद किसलय जी, श्रीमती शीला कुशवाहा जी मीडिया प्रभारी श्रीमती कुमारी वसुधा जी, मंत्री श्रीमती शशि बल्दीहार जी, श्रीमती माला सिन्हा जी, श्रीमती नेहा निश्चल जी एवं श्री अमित कानोरिया जी , संजीव यादव जी,स्वेता कुमारी के साथ अन्य संस्थाओं के पदाधिकारी और सदस्य सक्रिय रूप से उपस्थित रहे तथा बड़ी संख्या में स्थानीय लोग भी इस योग शिविर में शामिल हो कर योगा किये

विजय सिन्हा बोले- नीट पेपर लीक में आरजेडी की भूमिका नई बात नहीं, लालू-राबड़ी राज याद दिलाया

संवाददता

पटना:नीट पेपर लीक पर बिहार का सियासी पारा गमार्या हुआ है। डिप्टी सीएम विजय सिन्हा ने राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) पर आरोप लगाते हुए कहा कि लालू-राबड़ी राज में लोगों ने बीपीएससी में भ्रष्टाचार देखा है।1990 से 2005 के बीच कई परीक्षाओं में घोटाला हुए।बीपीएससी के अध्यक्ष रामाश्रय यादव, लक्ष्मी राय, रामसिंहासन सिंह एवं अन्य को पद पर रहते हुए जेल गए।रामाश्रय यादव पर जमीन देकर अध्यक्ष पद लेने का भी आरोप लग चुका है ।शनिवार को पटना में पत्रकारों से बातचीत में विजय सिन्हा ने कहा कि नीट परीक्षा में आरजेडी और उनसे जुड़े लोगों का हाथ होना कोई आश्चर्यजनक नहीं है।2013 से 2024 के बीच 6 सालों से अधिक ये सत्ता में रहे पर नहीं सुधरे।इसलिए नीतीश कुमार ने इन्हें बाहर कर दिया।उन्होंने कहा कि तेजस्वी यादव के आप्त सचिव प्रीतम कुमार पर लगे आरोप, ईओयू द्वारा पूछताछ का समन, अनुराग-सिकंदर-प्रीतम कनेक्शन और लालू-राबड़ी आवास में सिकंदर की बेरोकटोक आवाजाही पर स्थिति स्पष्ट करने के बजाए ये अनर्गल प्रलाप कर रहे हैं।सिकंदर को भी ये क्लीन चिट दे रहे हैं। क्योंकि उन्होंने कहा है कि वह बेनीफीशरी (लाभार्थी)हो सकता है, मास्टरमाइंड नहीं है ।डिप्टी सीएम सिन्हा ने कहा कि आरजेडी के सत्ता में रहने पर 2017 में बिहार स्टाफ सेलेक्शन कमीशन में भर्ती घोटाला सामने आया था। इसके किंगपिन रामाशीष राय थे। परीक्षा घोटाला, भर्ती घोटाला, मेधा घोटाला, सिपाही भर्ती घोटाला, पशुपालन घोटाला, अलकतरा घोटाला सभी इनके सत्ता में रहने पर ही हुआ। पथ निर्माण, ग्रामीण कार्य, नगर विकास और स्वास्थ्य विभाग के पूरे सिस्टम को धराशायी कर दिया। कार्य की गुणवत्ता और पारदर्शिता से इन्हें कोई सरोकार नहीं था। केवल भ्रष्टाचार और कमीशनखोरी की व्यवस्था बनी थी। वर्तमान सरकार इन मामलों में सख्ती से निपटेगी।

BRIEF NEWS

सीएम ने पुलिस वाहनों को हरी झंडी दिखा किया रवाना

PATNA : मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने शुक्रवार को सड़क सुरक्षा, यातायात व्यवस्था एवं मानव व्यापार निषेध के सुदृढ़ीकरण के लिए 117 पुलिस वाहनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। मुख्यमंत्री ने पुलिस वाहनों के लोकार्पण के पूर्व उनका निरीक्षण किया और उनकी कार्य प्रणाली के संबंध में अधिकारियों से जानकारी ली। कार्यक्रम की शुरूआत में अपर पुलिस महानिदेशक, यातायात सुधांशु कुमार ने मुख्यमंत्री को हरित पौधा भेंटकर स्वागत किया। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, उप मुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा, जल संसाधन मंत्री विजय कुमार चौधरी, ग्रामीण कार्य मंत्री अशोक चौधरी, सांसद देवेश चन्द्र ठाकुर सहित अन्य वरीय पदाधिकारी उपस्थित थे।

नल-जल योजना का सांसद ने किया निरीक्षण

PURNIYA : सांसद पप्पू यादव ने पूर्णियां पूर्व प्रखंड के वीरपुर पंचायत के वार्ड संख्या-07 बड़की मुसहरी में नल जल योजना का निरीक्षण किया। निरीक्षण के बाद उन्होंने बताया कि मैं जब इस मुसहरी मोहल्ले में आया तो हैरान हो गया। मैंने पाया कि सभी नल जल योजना अपूर्ण है, लेकिन कागज पर यह पूर्ण दिखाया जा रहा है। इस मामले की जांच के साथ हमने अधिकारियों को उचित कदम उठाने के लिए निर्देशित किया और कहा कि अपूर्ण कार्य को जल्द से जल्द पूरा करें। साथ ही हमने जांच के दौरान पाया कि इस वार्ड में एक भी शौचालय नहीं है जिसके बाद हमने फैसला किया कि सांसद निधि से यहां सार्वजनिक शौचालय की स्थापना की जाएगी।

नीट पेपर लीक में आया रवि अत्री का नाम

PATNA : नीट पेपर लीक मामले में रोजाना नए खुलासे होते जा रहे हैं। अब इस केस में रवि अत्री गैंग का नाम सामने आया है। रवि अत्री फिलहाल उत्तर प्रदेश की मेरठ जेल में बंद है। बताया जा रहा है कि उसके गैंग ने पटना और नालंदा के बॉर्डर से नीट परीक्षा का पेपर लीक करवाया था। उसका नाम यूपी में कई परीक्षाओं के पेपर लीक में पहले आ चुका है। यूपी पुलिस सिपाही भर्ती परीक्षा के पेपर लीक का वह मास्टरमाइंड है।

नालंदा पहुंची ईओयू की टीम संजीव मुखिया के घर छापा

PATNA : नीट पेपर लीक मामले में बिहार की आर्थिक अपराध इकाई (ईओयू) की टीम ने नालंदा में छापेमारी की है। ईओयू टीम शुक्रवार को जिले के नगरनौसा स्थित पेपर लीक के आरोपी संजीव मुखिया के घर पर रेड मारी। संजीव मुखिया फिलहाल फरार है। उसके रवि आत्री गैंग से जुड़े होने की बात भी सामने आई है। संजीव का बेटा बीपीएससी शिक्षक पेपर लीक के आरोप में जेल में बंद है। नालंदा के रहने वाले संजीव मुखिया की ईओयू को तलाश है। रिपोर्ट्स के मुताबिक वह बीते 14 साल से भर्ती परीक्षाओं के पेपर आउट करने का काम कर रहा था। उसका बेटा डॉक्टर शिव कुमार फिलहाल जेल में बंद है, उसका नाम बीपीएससी शिक्षक बहाली फेज 3 के पेपर लीक में आया था।

रौद्र रूप दिखाने लगी कोसी नदी, सैकड़ों एकड़ में लगी फसलें बर्बाद

AGENCY PATNA : कोसी नदी के जलस्तर में बीते 24 घंटों में आई तेजी के कारण तटबंध के अंदर कई खेतों में बाढ़ का पानी फैल गया है। इससे सैकड़ों एकड़ में लगी मूंग, मक्का सहित अन्य फसलें बर्बाद हो गई है। घनी आबादी वाले इलाकों में भी पानी प्रवेश करने लगा है।

मानसून की इंट्री होते ही सुपौल सहित पूरे उत्तर बिहार के इलाके में कोसी नदी ने अपना रौद्र रूप दिखाना शुरू कर दिया है। बुधवार देर शाम से ही कोसी नदी के जलस्तर में लगातार तेजी देखी जा रही है। वही इस बीच गुरुवार की रात 8 बजे कोसी बराज से इस साल का सर्वाधिक डिस्चार्ज रिकॉर्ड किया गया है। हालांकि इसके बाद एक बार फिर से डिस्चार्ज में गिरावट देखी जा रही है। गुरुवार की रात 8 बजे कोसी बराज से 2 लाख 39 हजार 515 क्यूसेक पानी छोड़ा गया है। जिसके बाद अगले 22 से 24 घंटों में कोसी तटबंध के अंदर आबादी वाले इलाकों में बाढ़ का पानी फैलने की आशंका है। हालांकि, गुरुवार की सुबह से नदी के जलस्तर ने जिस तेजी से उछाल मारा था, उसी तेजी से देर रात गिरावट भी शुरू हो गई। जलस्तर में लगातार उतार चढ़ाव लोगों की समस्याएं बढ़ा सकती हैं, क्योंकि इसकी वजह से कटाव का खतरा बढ़ गया है। हालांकि, बाढ़ के मद्देनजर प्रशासन अलर्ट मोड पर है।

छोड़ा गया एक लाख 49 हजार 295 क्यूसेक पानी

शुक्रवार की सुबह छह बजे कोसी बराज से एक लाख 49 हजार 295 क्यूसेक पानी छोड़ा गया है, जो 24 घंटे पहले छोड़े गए पानी से महज 295 क्यूसेक ज्यादा है। सुबह 6 बजे बराज के 16 फाटक खुले हुए थे। आज पूरे दिन बराज से डिस्चार्ज में और कुछ गिरावट रहने की उम्मीद है। आपको बता दें कि इससे पूर्व बुधवार की रात 12 बजे कोसी बराज से इस साल पहली बार एक लाख क्यूसेक से अधिक पानी छोड़ा गया।

अभी खतरे के निशान से नीचे है नदी का बहाव

खेतों में फैला बाढ़ का पानी।

किसानों की फसलें डूबी लोगों की बढ़ी परेशानी

कोसी नदी के जलस्तर में बीते 24 घंटों में आई तेजी के कारण तटबंध के अंदर कई खेतों में बाढ़ का पानी फैल गया है। इससे सैकड़ों एकड़ में लगी मूंग, मक्का सहित अन्य फसलें बर्बाद हो गई है। घनी आबादी वाले इलाकों में भी पानी प्रवेश करने लगा है। जिससे कोसी तटबंध के भीतर बसे गांव के लोगों को जरूरी कार्यों के लिए तटबंध से बाहर आने में भी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। हालांकि प्रशासन की ओर से नाव की व्यवस्था की गई है।

बराज से बढ़ा हुआ डिस्चार्ज का पानी अगले 24 घंटों में आबादी वाले इलाकों में फैलने की आशंका है। सुपौल जिलाधिकारी कौशल कुमार खुद स्थिति पर नजर बनाए हुए हैं। वहीं कोसी नदी के जलस्तर का उतार चढ़ाव सुपौल सहित अपने बहाव वाले मधुबनी, सहरसा, दरभंगा, खगड़िया और कटिहार जिले के इलाकों को भी प्रभावित करेगा। दरअसल, नेपाल स्थित कोसी नदी के जलग्रहण क्षेत्र में बुधवार और गुरुवार को हुई भारी बारिश के बाद नदी के जलस्तर में लगातार तेज वृद्धि देखी जा रही थी। जल संसाधन विभाग द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार शुक्रवार और शनिवार को उन इलाकों में बारिश कुछ कम होने की संभावना है। गुरुवार की सुबह छह बजे कोसी बराज से एक लाख 49 हजार क्यूसेक पानी नदी में छोड़ा गया था। इसके बाद से ही बराज के डिस्चार्ज में तेजी देखी जा रही थी। हालांकि, रात 8 बजे इस साल का सर्वाधिक डिस्चार्ज रिकॉर्ड करने के बाद जलस्तर में लगातार गिरावट आई। उस वक्त बराज के 56 में से 28 फाटक खोले गए थे। रात 9 बजे बराज से 2 लाख 27 हजार 750 क्यूसेक और रात 10 बजे 2 लाख 11 हजार 685 क्यूसेक पानी छोड़ा गया। इसके बाद डिस्चार्ज लगातार दो लाख क्यूसेक के नीचे रिकॉर्ड किया गया है। रात 11 बजे बराज से एक लाख 71 हजार 430 क्यूसेक पानी छोड़ा गया है।

नवादा के गोविंदपुर प्रखंड के अकबरपुर थाली रोड पर हुआ हादसा

तेज रफ्तार बाइक से रील बना रहे युवक ने बच्चे को रौंदा, मौत

AGENCY NAWADA : तेज रफ्तार से बाइक चलाते हुए वीडियो बना रहे युवकों ने शुक्रवार को एक बच्चे की नवादा में जान ले ली। जिले में गोविंदपुर प्रखंड के अकबरपुर थाली रोड में यह हादसा हुआ। चार बाइक पर वीडियो बना रहे तेज रफ्तार बाइक चालकों ने एक बच्चे को रौंदा दिया। जिससे बच्चे की घटनास्थल पर मौत हो गई। मृतक बच्चे की पहचान दनियार गांव के चंदन मांझी के 7 वर्षीय पुत्र कार्तिक कुमार के रूप हुई है। मौत के बाद परिजनों में कोहराम मच गया परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है। स्थानीय लोगों द्वारा थाली थाना को घटना की सूचना दी गई। थानाध्यक्ष विकास चंद्र यादव व एस आई ललन कुमार दल-बल के साथ घटनास्थल पर पहुंच कर जायजा लिया और शव को कब्जे में लेने की प्रयास किया। गुस्साए ग्रामीणों ने मुआवजे को लेकर सड़क जाम कर दिया और सरकारी मुआवजे की मांग पर अड़े रहे। बीडीओ नीरज कुमार राय घटनास्थल पर पहुंच कर सरकारी मुआवजे दिलवाने तथा परिवारिक लाभ के तहत बीस हजार रुपए देने की बात कही। लोगो को समझा बुझाकर शांत करवाया गया। थानाध्यक्ष एवं बीडीओ के द्वारा सरकारी मुआवजे दिलवाने की अश्वाशन पर लोगों को समझा बुझाकर शांत कराया और जाम को हटवाया गया। थानाध्यक्ष द्वारा शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भेज दिया गया। बताया जाता है कि चार बाइक से वीडियो बना रहे युवकों ने सड़क किनारे खड़े बच्चे को रौंद दिया जिससे बच्चे की मौत हो गई।तीन बाइक भी क्षतिग्रस्त हो गए।एक बाइक को बाइक चालक लेकर भागने में सफल रहा। मृतक के चचेरे भाई ने बताया कि हम सभी परिवार कानपुर ईट भट्ठा पर से काम कर नौ महीने बाद वापस घर लौटे और ट्रक से समान उतार रहे थे। बच्चा कार्तिक पास में खड़ा था। तभी तेज रफ्तार से आ रहे चार मोटरसाइकिल ने सड़क किनारे खड़े कार्तिक को रौंद दिया। थानाध्यक्ष विकास चंद्र यादव ने बताया कि शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल नवादा भेज दिया गया। दुर्घटना ग्रस्त तीन बाइक को जब्त कर थाने लाया गया। जिसका नंबर है बीआर 46 सी 1264 , बी आर 27 आर 3538 बीआर 27 यू 7733 है। मृतक बच्चा अपने माता-पिता के एक मात्र पुत्र था। पुत्र की अचानक मौत हो जाने से माता पिता व परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है।

घटनास्थल पर शव देखने के लिए जुटे लोग व सड़क जाम कर हंगामा करते ग्रामीण।

नीट पेपर लीक मामला

किंगपिन को न बचाए सरकार : तेजस्वी यादव

AGENCY PATNA : नीट पेपर लीक मामले में बिहार के पूर्व डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव ने एनडीए सरकार पर जांच को डायवर्ट करने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि सरकार पेपर लीक के किंगपिन को बचाने की कोशिश कर रही है। अब इस मामले में मेरा (तेजस्वी) और मेरे पीए (प्रीतम यादव) का नाम घसीटना चाहते हैं, जिससे कोई फायदा नहीं होने वाला है। वे चाहें तो मेरे पीए को बुलाकर पूछताछ कर लें। तेजस्वी ने सवाल उठाए कि सत्ता में बैठे लोग पेपर लीक के मास्टरमाइंड अमित आनंद और नीतीश कुमार को क्यों बचाना चाहते हैं। आरजेडी नेता तेजस्वी यादव ने शुक्रवार को मीडिया से बातचीत में नीट पेपर लीक मामले में उनके पीए पर लगाए गए आरोपों को लेकर डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी पर हमला बोला। उन्होंने कहा कि बीजेपी चाहे राज्य सरकार में रहे या केंद्र में, पेपर

लीक होना तय है। राज्य और केंद्र में उनकी सरकार, जांच एजेंसियां उनकी है, चाहे पीए हो या कोई और हो, बुलाकर पूछताछ कर रहे हैं। तेजस्वी ने कहा कि डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी जो सवाल उठा रहे हैं, उस बारे में ईओयू ने कहीं कोई बात नहीं कही। वे बिना जानकारी के ही आरोप लगा रहे हैं। तेजस्वी ने कहा कि बीजेपी के लोगों ने देश के 50 लाख बच्चों के भविष्य के साथ खिलवाड़ किया है। हम नीट परीक्षा रद्द करने की मांग कर रहे हैं। पूरा इंडिया गठबंधन इस मुद्दे पर एकजुट है। सभी पेपर रद्द करने की मांग कर रहे हैं।

500 लीटर प्रतिबंधित कफ सिरप के साथ एक धराया

BHAGALPUR : जिले के कोतवाली थाना क्षेत्र अंतर्गत 1500 लीटर प्रतिबंधित कफ सिरप बरामद तथा 01 व्यक्ति गिरफ्तार किया गया है। उक्त आशय की जानकारी शनिवार को सिटी एसपी राज ने दी। सिटी एसपी ने बताया कि भागलपुर पुलिस को गुप्त सूचना मिली कि 01 चारपहिया वाहन से प्रतिबंधित कफ सिरप कोतवाली थाना क्षेत्र के खलीफाबाग बुढ़ानाथ रोड से गुजरने वाली है। वरीय पुलिस अधीक्षक के निर्देशन, पुलिस अधीक्षक नगर की निगरानी एवं पुलिस उपाधीक्षक नगर के नेतृत्व में एक टीम गठित की गई। गठित टीम द्वारा कोतवाली थाना क्षेत्र में वाहन जाँच के क्रम में 01 चारपहिया वाहन से 1500 लीटर प्रतिबंधित कफ सिरप जब्त तथा 01 व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तारी व्यक्ति मनोज झा मानिकपुर वार्ड नं0-51 थाना मोजाहिदपुर जिला भागलपुर का रहने वाला है। छापेमारी दल में रानी कुमारी, प्रभारी थानाध्यक्ष कोतवाली, धनंजय कुमार डी.आई.यू., पुलिस अवर निरीक्षक राहुल कुमार, चंदन कुमार सहित अन्य पुलिस अधिकारी और सशस्त्र बल कोतवाली थाना शामिल थे।

कट्टा व कारतूस के साथ तीन अपराधी गिरफ्तार

गिरफ्तार अपराधियों के बारे में जानकारी देते पुलिस अधिकारी।

AGENCY BHAGALPUR : जगदीशपुर थाना अंतर्गत कमालचक मुस्तफापुर जाने वाले रास्ते पर लोहा पुल पर कट्टा और तीन कारतूस के साथ तीन बदमाश को पुलिस ने गिरफ्तार किया। पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी की तीन बदमाश लोहा पुल के समीप किसी घटना को अंजाम देने के फिराक में हरबे हथियार के साथ जुटा हुआ है। पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए थानाध्यक्ष इंस्पेक्टर गणेश कुमार, अवर निरीक्षक रामचंद्र यादव, अमरजीत कुमार, प्रक्षियमान अवर निरीक्षक सुधीर कुमार सिंह सहित सशस्त्र बल के साथ बुधवार की देर रात छापेमारी की। पुलिस वाहन को देखते ही आरोपित युवक भागने लगा। भाग रहे तीनों अपराधियों को पुलिस ने खदेड़कर गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तारी के बाद पूछताछ करने पर आरोपितों ने अपना नाम मु। हसनेन ,मु अफताब दोनों पुरैनी एवं तीसरा मु इरफान मुस्तफापुर का रहने वाला बताया। साथ ही तीनों अपराधी की तलाशी लेने पर एक कट्टा और तीन कारतूस पुलिस ने बरामद किया। मामले के बाबत थानाध्यक्ष इंस्पेक्टर गणेश कुमार ने बताया कि सुसंगत धारा के तहत केस दर्ज कर आरोपितों को जेल भेज दिया गया है। दूसरी ओर सुल्तानगंज रेलवे स्टेशन पर तैनात आरपीएफ में विभिन्न आरोपों में सात लोगों को गिरफ्तार किया।

बंदी की मौत की जांच के लिए पहुंची एफएसएल टीम

CHAMPARAN : जिले के झरोखर थाना हाजत में बंद युवक की मौत मामले की जांच के लिए मुजफ्फरपुर से एफएसएल की टीम को बुलाया गया है। घटना के बाद लोगो ने थाना का घेराव किया। वही सदर अस्पताल में पोस्टमार्टम के लिए शव पहुंचने पर भी लोग हंगामा करने पर उतारू थे। हालांकि पुलिस ने समझाते हुए मामला को शांत कराया। सदर अस्पताल में उग्र हो रहे लोगो से एएसपी,मुफ्फसिल और टाउन थानाध्यक्ष ने बात कर मामला शांत कराया। बताया गया है कि बाइक चोरी के मामले में नन्हक यादव को बुधवार को गिरफ्तार किया गया था,रात में थाना हाजत में उसकी गम्भीर स्थिति देख घोड़ासहन पीएचसी में उसे भर्ती कराया गया,जहां उसकी मौत हो गई। एसपी कान्तेश कुमार मिश्र ने बताया है कि वीडियो फुटेज काफी लंबा है जिसको देखा जा रहा है,मामले की सिकरहना डीएसपी द्वारा जांच की जा रही है। वही मृतक के परिजनों ने स्थानीय थाना पुलिस पर पिटाई कर हत्या का आरोप लगाया है। इस बीच लोग झरोखर थाना का घेराव करने पहुँच गए।

सरकारी शिक्षकों के लिए 25 जून से सेल्फ अटेंडेंस

AGENCY PATNA : बिहार के सरकारी स्कूलों के प्रधानाध्यापकों और शिक्षकों की 25 जून से आनलाइन उपस्थिति दर्ज की जाएगी। इसके लिए शिक्षा विभाग ने ई-शिक्षाकोष पोर्टल (एप) विकसित किया है। शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव डा। सिद्धार्थ ने राज्य के सभी जिला शिक्षा पदाधिकारियों को पत्र जारी कर कहा है कि शिक्षक अब प्रतिदिन आनलाइन उपस्थिति दर्ज करेंगे। अब एक लापरवाही से आपकी सैलरी कट जाएगी। अपर मुख्य सचिव ने जिला शिक्षा पदाधिकारियों को इसे अनिवार्य रूप से लागू करने का निर्देश दिया है। प्रधानाध्यापक और शिक्षक कैसे आनलाइन उपस्थिति दर्ज करेंगे, इस संबंध में विभाग की ओर से वीडियो जारी किया गया है। सभी प्रधानाध्यापक और शिक्षक गूगल प्ले स्टोर से ई-शिक्षाकोष पोर्टल अपने मोबाइल फोन में डाउनलोड करेंगे। इसके बाद शिक्षक अपने आइडी से ई-शिक्षाकोष एप पर लाग-इन करेंगे। जिन शिक्षकों के पास पहले शिक्षक आइडी उपलब्ध नहीं है या भूल गए है, वैसे शिक्षक विद्यालय के प्रधानाध्यापक से संपर्क कर अपना आइडी जनरेट कर सकते हैं।

एक लापरवाही से कट जाएगी सैलरी

इस तरह बनेगी सेल्फ हाजिरी

विद्यालय में उपस्थित रहने की स्थिति में प्रधानाध्यापक व शिक्षक द्वारा सेल्फ एटेंडेंस के विकल्प का चयन करते हुए बटन को क्लिक करना होगा। आनलाइन एटेंडेंस बनाने के लिए शिक्षकों को संबंधित विद्यालय की पांच सौ मीटर की परिधि में रहना अनिवार्य है। विद्यालय के पांच सौ मीटर की परिधि में रहने की स्थिति में शिक्षक को उनके मोबाइल स्क्रीन पर दो बटन (एक स्कूल इन और दूसरा स्कूल आउट) दिखाई देगा। शिक्षक विद्यालय आते ही आनलाइन अपनी उपस्थिति दर्ज करने के लिए मोबाइल स्क्रीन पर अंकित स्कूल-इन बटन को क्लिक करेंगे एवं विद्यालय से जाते समय स्कूल-आउट बटन को क्लिक करेंगे।

नीट पेपर लीक मामले में आरोपियों की सुनवाई टली, नहीं मिली जमानत

PATNA : नीट पेपर लीक मामले में चार आरोपितों की शुक्रवार को पटना सिविल कोर्ट में एडीजे-5 ने सुनवाई करते हुए इस मामले में किसी को जमानत नहीं दी। एडीजी राजेन्द्र कुमार सिन्हा की अदालत ने पुलिस को अगली सुनवाई में एनएचएआई गेस्ट हाउस की डायरी लाने की बात कहकर सुनवाई को टाल दिया। पटना सिविल कोर्ट के अधिवक्ता ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि नीट पेपर लीक मामले में अनुराग यादव, आयुष कुमार, नितीश पटेल और सिकंदर यादवेंदु की जमानत याचिका पर सुनवाई होनी थी। एडीजी-5 ने सुनवाई करते हुए इस मामले में किसी को जमानत नहीं दी है। यह चारों आरोपित न्यायिक हिरासत में हैं। इस मामले में 25 जून को अगली तिथि निर्धारित की गई है। उन्होंने कहा कि पुलिस को एनएचएआई गेस्ट हाउस की डायरी लाने को भी कहा गया है। अगली सुनवाई में डायरी पेश की जाएगी नीट पेपर लीक मामले में शास्त्री नगर थाने की पुलिस के द्वारा 13 लोगों को गिरफ्तार किया गया था, जिसमें सॉल्वर गैंग के सदस्य के साथ अभ्यर्थी भी शामिल थे।

सरकारी अस्पतालों में लापरवाही आई सामने, बाजार से मेडिसिन खरीद रहे मरीज के परिजन

एक्सपायर्ड हो गईं 537 करोड़ की दवाएं

AGENCY PATNA : बिहार सरकार यह दावा करती है कि सरकारी अस्पतालों में मरीजों को मुफ्त इलाज से लेकर दवाओं की सुविधाएं दी जाती हैं। इसके बावजूद मरीजों को बाजार से दवा खरीदना पड़ता है। आये दिन यह सूचना मिलती है कि बिहार के सरकारी अस्पतालों में मरीजों को दवा नहीं मिल रही है। मरीजों के परिजन दवा के लिए सरकारी काउंटर से लौट जा रहे हैं, वहीं फरवरी से अप्रैल के बीच मरीजों के लिए खरीदी गयी 537 करोड़ की दवाएं और सर्जरी के सामान खराब हो गए। स्वास्थ्य विभाग के डीवीडीएमएस (ड्रग्स एंड वैक्सीन डिस्ट्री ब्यूशन मैनेजमेंटमें सिस्टम) पोर्टल पर दर्ज आंकड़े सामने आने के बाद विभाग में खलबली मच गयी है। डीवीडीएमएस पोर्टल पर मुजफ्फरपुर में मुजफ्फरपुर में 88 करोड़ 53 लाख सात हजार की 1500 तरह की दवाएं एक्सपायर होना दर्ज है। सबसे ज्यादा दवाएं सीएचसी और पीएचस में एक्सपायर हुईं हैं। रिपोर्ट के अनुसार पूरे राज्य में पीएचसी में 28 प्रतिशत और सीएचसी में 21 प्रतिशत दवाएं एक्सपायर हुईं हैं। वहीं, मेडिकल कॉलेजों में 11 फीसदी, सदर अस्पतालों में तीन फीसदी व अनुमंडल अस्पतालों में चार फीसदी दवाएं एक्सपायर हुईं हैं। मुजफ्फरपुर सदर में 100 तरह की दवाएं एक्सपायर हुईं हैं। स्वास्थ्य विभाग की ही रिपोर्ट बताती है कि रिजनल वेयर हाउस से जिलों को मांग के अनुसार दवाओं की आपूर्ति नहीं हो रही है। इससे सरकारी अस्पतालों को सभी तरह की दवाएं उपलब्ध नहीं पा हो रही हैं। एक अप्रैल से आठ जून तक मुजफ्फरपुर जिले को रिजनल वेयर हाउस से 196 की जगह 151 तरह की दवाएं ही मिलीं। जिले में काफी दिनों के बाद शुगर मरीजों के लिए मेटफॉर्मिन दवा 19 जून को आई है। दवा नहीं मिलने से मरीजों को पूरी दवा नहीं मिल रही है।

- रिजनल वेयर हाउस से जिलों को मांग के अनुसार नहीं हो रही दवाओं की आपूर्ति

मुजफ्फरपुर सहित सभी सीएस को निर्देश

अस्पतालों के गोदाम में पड़े-पड़े फरवरी में 175 करोड़, मार्च में 180 करोड़ और अप्रैल में 182 करोड़ की दवाएं एक्सपायर हो गई और सर्जरी के सामान बेकार हो गए। विभाग के अपर निदेशक (तिरहुत) डॉ। ज्ञान शंकर ने कहा कि कोई भी दवा एक्सपायर नहीं हो, इसके लिए सभी सीएस को निर्देशित किया जा रहा है। विभाग ने मुजफ्फरपुर सहित सभी सीएस को दवाओं की इंट्री डीवीडीएमएस पोर्टल पर कराने का निर्देश दिया है। साथ ही दवा एक्सपायर होने के बारे में राज्य मुख्यालय व केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय से जारी निदेशों का सख्ती से पालन कराने को कहा है। वैसे उन्होंने कहा कि कई बार सही इंट्री नहीं करने से एक्सपायरी का गलत डाटा भी पोर्टल पर दिखने लगता है। इसलिए इन आंकड़ों पर बहुत भरोसा नहीं किया जा सकता, वैसे विभाग इसपर भी अंकुश लगाने को कहा है।

शराब तस्करी मामले में अभियुक्त को मिली सजा

BHAGALPUR : जिले के सन्हौला में 2023 में शराब की तस्करी के मामले में पकड़े गए अमजद खान को विशेष न्यायाधीश उत्पादक कोर्ट-2 ने शनिवार को 5 वर्ष के कठोर कारावास और एक लाख रुपए जुमार्ना की सजा सुनाई है। जुमार्ना की राशि नहीं देने पर अभियुक्त को तीन माह की अतिरिक्त सजा काटनी होगी। सजा के बिंदु पर हुई सुनवाई में सरकार की ओर से शामिल हुए विशेष लोग अभियोजक भोला कुमार मंडल ने बताया कि 27 फरवरी 2023 को सन्हौला पुलिस ने सनन्हौला चेक पोस्ट के पास वाहन चेकिंग कर रही थी। तभी सूचना प्राप्त हुई कि एक व्यक्ति शराब लेकर एक मोटरसाइकिल से सन्हौला बाजार की तरफ जा रहा है। वाहन चेकिंग के क्रम में भुड़िया मोड़ से एक मोटरसाइकिल तेज गति से आती दिखाई तो पुलिस ने उसे रोकने को कहा।

अभय होंगे लोकसभा में राजद संसदीय दल के नेता

AGENCY PATNA : राष्ट्रीय जनता दल के अध्यक्ष लालू यादव ने बिहार के औरंगाबाद से चुनाव जीतकर सांसद बने अभय कुशवाहा को लोकसभा में आरजेडी संसदीय दल का नेता बनाया है। वहीं, जहानाबाद से सासंद सुरेंद्र यादव को आरजेडी का मुख्य सचेतक मनोनीत किया गया है। राज्यसभा में फैयाज अहमद अब आरजेडी संसदीय दल के नेता होंगे। वे मीसा भारती की जगह लेंगे। पहली बार सांसद बने अभय कुशवाहा को बड़ी जिम्मेदारी देने को लेकर सिसायी गलियारे में चर्चा का दौर शुरू हो गया है। वहीं, मीसा भारती को इस बार संसद में कोई जिम्मेदारी नहीं दी गई है। आरजेडी के प्रदेश प्रवक्ता शक्ति सिंह यादव ने शुक्रवार को संसद के दोनों सदनों में पार्टी के

संसदीय दल के नेताओं के मनोनयन के बारे में जानकारी दी। बता दें कि लोकसभा चुनाव 2024 में 23 सीटों पर लड़ी आरजेडी को 4 पर जीत मिली थी। लालू की बेटी मीसा भारती पाटलिपुत्र, अभय कुशवाहा औरंगाबाद, सुरेंद्र यादव जहानाबाद और सुधाकर सिंह बक्सर से चुनाव जीते। सबसे ज्यादा चर्चा औरंगाबाद में आरजेडी के टिकट पर चुनाव जीतने वाले अभय कुशवाहा की रही। क्योंकि बिहार का चित्तौड़गढ़ कही जाने वाली इस सीट से पहली बार कोई गैर-राजपूत सांसद बना है।

संक्षिप्त समाचार

मंत्री निर्मला भुरिया ने एसओएस चिल्ड्रन्स विलेज का दौरा किया

भोपाल। एसओएस चिल्ड्रन्स विलेज भोपाल ने मध्यप्रदेश की महिला एवं बाल विकास मंत्री श्र निर्मला भुरिया का स्वागत किया। मंत्री के इस दौरे का उद्देश्य चिल्ड्रन्स विलेज के संचालन को समझना, बच्चों एंव स्टाफ़ के साथ बातचीत करना और उनकी आवश्यकताओं का मूल्यांकन करना था। पहली बार दौरे पर आई मंत्री जी ने बाल कल्याण एवं सामुदायिक सहयोग के लिए अपनी उत्सुकता और प्रतिबद्धता दिखाई। इस अवसर पर मंत्री ने बच्चों के साथ मिलकर पौधे लगाए और हरित भविष्य के लिए हमारे प्रयास में योगदान दिया।चिल्ड्रन्स विलेज पहुंचने पर बच्चों, स्टाफ़ और ग्राम निदेशक ने मंत्री जी का स्वागत किया। उन्होंने बच्चों के साथ बातचीत की, उनकी कहानियां, उनकी महत्वाकांक्षाएं और उनके अनुभवों को सुना। मंत्री जी का प्रोत्साहन बच्चों के चेहरों पर मुस्कान ले आया और यह बातचीत सभी के लिए यादगार बन गई। बच्चों ने मंत्री जी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए उन्हें रीसायकल्ड पेपर से बनी हस्तनिर्मित आदिवासी हस्तशिल्प भेंट की, जो उनकी रचनात्कता और प्रत्यास्थता का प्रतीक है। आभार एवं सराहना को व्यक्त करते हुए एसओएस चिल्ड्रन्स विलेज के सीईओ सुमंता कार ने कहा, ''माननीय निर्मलाजी का स्वागत करते हुए हमें बेजोड़ प्रसन्नता हो रही है।

कलाकारों ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया

मुंबई, एजेंसी। 'शिव शक्ति - तप त्याग तांडव' में भगवान शिव की भूमिका निभाने वाले, राम यशवर्धन कहते हैं, भगवान शिव को आदियोगी - योग के अवतार के रूप में पूजा जाता है। वह परमेश्वर हैं जो शरीर, मन और चेतना के मिलन को नियंत्रित करते हैं। हमारे प्राचीन ग्रंथों के अनुसार, भगवान शिव ने ही सबसे पहले योग और ध्यान का ज्ञान अपनी प्रिय पत्नी देवी पार्वती के साथ साझा किया था। मेरे लिए, शिव शक्ति - तप त्याग तांडव शो में ऐसी पवित्र भूमिका को निभाना बड़े सम्मान की बात है। इस भूमिका के माध्यम से, मुझे दर्शकों के समक्ष भगवान शिव की शिक्षाओं और ज्ञान को जीवंत करने का सौभाग्य मिला है। मेरा लक्ष्य भगवान शिव के सबक - आत्म-अनुशासन का महत्व, और ध्यान की ताकत को प्रदर्शित करना है। 'खतरों के खिलाड़ी 14' की प्रतियोगी सुमोना चक्रवर्ती कहती हैं, 'खतरों के खिलाड़ी 14' की प्रतियोगी सुमोना चक्रवर्ती कहती हैं, योग कई वर्षों से मेरे जीवन का अभिन्न हिस्सा रहा है। यह सिर्फ एक अभ्यास नहीं है, बल्कि एक जीवनशैली है जिसने मुझे स्थिरता दी है, मुझे मजबूत बनाया है, और जीवन की चुनौतियों के बीच अपार शांति दी है। इस योग दिवस पर, मैं सभी को इसके शक्ति का अनुभव करने और इसके द्वारा मिलने वाले गहरे आनंद को खोजने के लिए प्रोत्साहित करती हूँ ।'मंगल लक्ष्मी' में मंगल की भूमिका निभाने वाली दीपिका सिंह कहती हैं, योग मेरे दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गया है, और लंबे समय तक शूटिंग के बाद, योग मुझे आराम करने और रिचार्ज होने में मदद करता है।

कार्तिक आर्यन की मां ने कार्तिक की शरारतो के बारे में बताया

मुंबई, एजेंसी। लेवल अप, लेवल अप, लेवल अप! द ग्रेट इंडियन कपिल शो का फ़िनाले एपिसोड उम्मीद से बढ़ कर है। हँसी-मज़ाक, भावनाओं और शरारतों का रोलरकोस्टर प्रो मैक्स!!! सुपरस्टार कार्तिक आर्यन और उनकी माँ माला तिवारी के वैलकम के लिए तैयार हो जाइए! इस एपीसोड में होगा सिर्फ़ एंटरटेनमेंट! एंटरटेनमेंट! और एंटरटेनमेंट इस शनिवार रात 8 बजे सिर्फ़ नेटफ्लिक्स पर! हम कार्तिक को थोड़ा और करीब से जानेंगे, क्योंकि उनकी माँ माला तिवारी हमें कार्तिक के कुछ अनजाने किस्से बताने वाली हैं। इस मज़ेदार बातचीत के बीच कपिल के पूछने पर कार्तिक की माँ एक मज़ेदार घटना सुनाती हैं जो उनके स्कूल के दिनों में हुई थी। पढ़ाई के मामले में एक सख़्त पेरेंट होने के नाते, उन्होंने बताया कि कैसे एक बार उन्होंने कार्तिक को रंगे हाथों पकड़ लिया था। माला जी ने कहा, एक दिन कार्तिक यह कहते हुए घर से निकला था- मम्मी मैं कोचिंग जा रहा हूँ। मैंने उसका पीछा किया और देखा कि वह किसी और रास्ते पर जा रहा था। वह अपने दोस्त के साथ एक आटा-चक्की की दुकान में घुस गया। मैं भी उनके पीछे पीछे उस दुकान में घुस गई तो देखा कि वहाँ एक बड़ी स्क्रीन लगी थी ।

दिल्ली में जानलेवा गर्मी से 25 और लोगों की मौत

श्मशानों में बढ़े शव, एक हफ्ते में 500 अंतिम संस्कार

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली में गर्मी की चपेट में आने से मौत के मामले थम नहीं रहे हैं। वहीं, श्मशान घाटों पर पहले के मुकाबले अंतिम संस्कारों की संख्या बढ़ने लगी है। राजधानी के अलग-अलग अस्पतालों में बीते 24 घंटे में 25 मरीजों की मौत की पुष्टि हुई है। सफदरजंग अस्पताल में बीते 24 घंटे में 33 मरीजों को भर्ती किया गया, जबकि इलाज के लिए भर्ती 13 मरीजों ने दम तोड़ दिया। अस्पताल में 16 जून से अब तक 62 मरीज भर्ती और 24 की मौत हो चुकी है। वार्ड में 45 मरीज भर्ती और 28 की हालत गंभीर है।

डॉ. राम मनोहर लोहिया अस्पताल के मेडिसिन विभाग में प्रोफेसर डॉ. अजय चौहान ने बताया कि बुधवार सुबह नौ बजे से लेकर गुरुवार सुबह नौ बजे तक अस्पताल में लू को लेकर 26 मरीज इलाज के लिए भर्ती हुए, जबकि सात मरीजों की मौत हो गई। इधर, लेडी हार्डिंग अस्पताल में गुरुवार को एक मौत हुई है।

सूत्रों के अनुसार, लोक नायक अस्पताल में गुरुवार को लू लगने से चार लोगों की मौत हो गई। अस्तपताल में सात मरीज वेंटिलेटर पर हैं। बता दें कि अस्पतालों में मरीज तेज बुखार सहित बेहोशी की हालत में इलाज के लिए पहुंच रहे हैं। इसमें अस्पतालों से रेफर होकर आने वाले मरीज भी शामिल हैं।

एक हफ्ते में 500 अंतिम संस्कार

भीषण गर्मी के बीच राजधानी में काफी संख्या में लोगों की मौत हो रही है। इस कारण निगम बोध घाट के साथ-साथ दूसरे श्मशान घाटों पर भी अंतिम संस्कार के लिए शव की संख्या बढ़ गई है। एक हफ्ते के अंदर निगम बोध घाट पर 500 से अधिक शवों का अंतिम संस्कार किया जा चुका है। 19 जून को 142 शवों का अंतिम संस्कार किया गया, वहीं 21 जून को दोपहर 12 बजे तक 30 शवों का अंतिम संस्कार किया गया था।

घाट के महाप्रबंधक सुमन कुमार गुप्ता ने बताया कि पिछले एक हफ्ते से औसतन 60 शव अंतिम संस्कार के लिए आ रहे थे। मगर, सबसे ज्यादा 142 शव एक दिन में बुधवार को अंतिम संस्कार के लिए लाए गए। इसने कोरोना काल की याद दिला दी। अंतिम संस्कार करने के लिए 10 अतिरिक्त लोगों की संख्या बढ़ाई गई है। क्योंकि गर्मी से यहां काम करने वाले लोग भी थक रहे हैं। उधर, लोधी कॉलोनी के आर्य समाज शवदाह गृह पर 18 जून को 18 शवों का अंतिम संस्कार किया गया। पंडित रामलाल ने बताया कि पिछले एक सप्ताह में करीब 80 शवों का अंतिम संस्कार किया गया।

कैट्स एंबुलेंस को हाई अलर्ट पर रहने के निर्देश

दिल्ली में भीषण गर्मी को देखते हुए अस्पतालों से लेकर कैट्स एंबुलेंस को अतिरिक्त सावधानी बरतने को लेकर 'स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग की ओर से दिशानिर्देश जारी किए गए हैं। इसमें एंबुलेंस को हाई अलर्ट पर रखने से लेकर अस्पतालों में इमरजेंसी सेवा का संचालन 24 घंटे करने सहित कई दूसरे निर्देश शामिल हैं। इस संबंध में विभाग की ओर से सर्कुलर जारी किया गया है। विभाग की ओर से अस्पतालों को कहा गया है कि लू की चपेट में आने वाले मरीजों को भर्ती करने और इलाज में कोई देरी नहीं होनी चाहिए, जिससे ज्यादा से ज्यादा लोगों की जिंदगी को बचाया जा सके। सभी जिलों के मुख्य चिकित्सा अधिकारियों को कहा गया है कि कोई मरीज डिस्पेंसरी में इलाज के लिए आता है तो उसे तुरंत इलाज दिया जाए और एंबुलेंस की मदद से नजदीकी अस्पताल में शिफ्ट कराया जाए। शेल्टर होम के बाहर एंबुलेंस तैनात होगी : विभाग ने कैट्स एबुलेंस को भी निर्देश दिए हैं कि मरीज को भर्ती कराने को लेकर आने वाली कॉल पर तुरंत सक्रियता दिखाएं। मरीज को नजदीकी अस्पताल में शिफ्ट करें। कैट्स विभाग की सभी एबुलेंस दिन और रात में हाई अलर्ट पर रहेंगी। इधर, दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री सौरभ भारद्वाज ने मदन मोहन मालवीय अस्पताल का निरीक्षण कर मरीजों का हाल जाना।

वरिष्ठ डॉक्टर तैनात होंगे

सर्कुलर के अनुसार, सभी अस्पतालों के चिकित्सा अधीक्षक/चिकित्सा निदेशकों को इमरजेंसी का 24 घंटे संचालन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। लू की चपेट में आने वाले मरीजों की देखरेख के लिए अस्पताल की इमरजेंसी में एक वरिष्ठ डॉक्टर अनिवार्य तौर पर उपस्थित होगा।

आठ लोकसभा सीटों के 92 पोलिंग बूथों पर होगी ईवीएम की जांच

चुनाव आयोग ने इस वजह से जारी किया आदेश

नई दिल्ली, एजेंसी। विभिन्न राजनीतिक दलों के निशाने पर रहने वाली इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) को लेकर खींचतान अभी तक जारी है। चुनाव परिणामों पर संदेह जताते हुए अलग-अलग राजनीतिक दलों की ओर से ईवीएम में गड़बड़ी की शिकायत करते हुए केंद्रीय चुनाव आयोग से जांच की मांग की गई।

आयोग ने एक जून, 2024 को जारी एसओपी के तहत मिले कुल 11 शिकायत पत्रों का संज्ञान लेते हुए छह राज्यों की आठ संसदीय सीटों पर 92 पोलिंग स्टेशन, जबकि आंध्र प्रदेश और ओडिशा राज्य विधानसभा की कुल तीन सीटों के 26 पोलिंग बूथों पर ईवीएम की जांच का आदेश जारी किया है।

तेलंगाना, तमिलनाडु और महाराष्ट्र में तीन लोकसभा सीटों के 66 पोलिंग स्टेशन पर ईवीएम की शिकायत भाजपा ने की थी। भारत निर्वाचन आयोग की ओर से गुरुवार को जारी पत्र में बताया गया कि चुनाव परिणाम घोषित होने के बाद लोकसभा आम चुनाव से आठ और विधानसभा चुनावों से संबंधित तीन आवेदन प्राप्त हुए। इनके माध्यम से शिकायतकर्ताओं ने ईवीएम के माइक्रोकंट्रोलर की जांच व सत्यापन की मांग की है।

राज्यों निर्वाचन अधिकारियों के जरिए शिकायतें आयोग के पास आईं: संबंधित राज्यों के मुख्य निर्वाचन अधिकारियों के माध्यम से यह शिकायतें आयोग के पास आईं। अब चुनाव याचिका के स्टेटस की पुष्टि के आधार पर ईवीएम निर्माताओं द्वारा एसओपी का पालन करते हुए कार्यक्रम जारी कर चार सप्ताह के भीतर ईवीएम की जांच शुरू करा दी जाएगी।

करनाल लोकसभा सीट के छह पोलिंग बूथ पर ईवीएम की जांच

दरअसल, आंध्र प्रदेश में वाइएसआरसीपी की शिकायत पर विजियानगरम लोकसभा सीट के दो पोलिंग स्टेशन, कांग्रेस की शिकायत पर छत्तीसगढ़ की कांकेर संसदीय सीट के चार पोलिंग बूथ, हरियाणा की करनाल लोकसभा सीट के चार, जबकि फरीदाबाद सीट के दो यानी कुल छह पोलिंग बूथ पर ईवीएम की जांच होनी है।

अहमदनगर लोकसभा सीट के 40 बूथों पर ईवीएम की जांच

महाराष्ट्र की अहमदनगर लोकसभा सीट के 40 और तेलंगाना की जहीराबाद सीट के 20 बूथों पर ईवीएम की जांच कराई जाएगी। तमिलनाडु की वेल्लोर सीट विरुधनगर संसदीय क्षेत्र के कुछ बूथों पर सत्यापन कराया जाएगा। इस तरह छह राज्यों की आठ संसदीय सीटों के 92 पोलिंग बूथों पर ईवीएम की जांच का निर्णय किया गया है।

वाइएसआरसीपी की शिकायत पर जांच होगी

इसी तरह आंध्र प्रदेश में गजपतिनगरम विधानसभा सीट पर एक और अंगुल विधानसभा क्षेत्र के 12 यानी कुल 13 पोलिंग स्टेशन पर वाइएसआरसीपी की शिकायत पर जांच कराई जाएगी। ओडिशा में झारसुगुडा विधानसभा सीट के 13 पोलिंग स्टेशन पर ईवीएम की जांच बीजद की शिकायत पर कराने का फैसला आयोग ने किया है।

दिल्लीवालों के लिए खुशखबरी ! गांवों में चालू होगा पीएनजी कनेक्शन

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली के गांवो में रहने वालों के लिए गुरुवार को एक खुशखबरी सामने आई है। दिल्ली के एलजी ऑफिस के अधिकारियों ने जानकारी देते हुए बताया कि राजधानी के सभी 383 गांवों को जल्द ही पाइप लाइन के जरिए नेचुरल गैस मिल जाएगी। अधिकारी ने बताया कि इस पाइप लाइन के जरिए गैस की सप्लाई की शुरुआत 2025 से शुरू हो जाएगी। इस दौरान एलजी ऑफिस के अधिकारी ने इस परियोजना को लेकर जानकारी देते हुए बताया कि दिल्ली के कितने गांवों में पाइप लाइन गैस का कनेक्शन पहुंच गया है।

इस बारे में जानकारी देते हुए एलजी ऑफिस के अधिकारी ने बताया कि इस परियोजना की परिकल्पना करने वाले उपराज्यपाल वी के सक्सेना को हाल ही में एक समीक्षा बैठक में अधिकारियों ने बताया कि अब तक 111 गांवों में पीएनजी कनेक्शन हो चुके हैं और दिसंबर, 2024 तक 200 अन्य गांवों में पीएनजी कनेक्शन पहुंच जाएगा। उन्होंने कहा कि मार्च, 2025 तक दिल्ली के सभी 383 शहरी गांवों में पीएनजी की आपूर्ति हो जाएगी। इससे लोगों को काफी राहत मिलेगी।

इस मामले में जून, 2023 में दिल्ली के उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने संबंधित अधिकारियों को गांवों में पीएनजी कनेक्शन सहित सर्वोत्तम सुविधाएं प्रदान करने का निर्देश दिया था। अधिकारियों ने कहा कि पीएनजी आपूर्ति दिल्ली के गांवों की सूरत बदलने में काफी मददगार साबित होगी। अब इस मामले पर अब नया अपडेट सामने आया है। एलजी ऑफिस की तरफ से जानकारी देते हुए बताया गया है कि दिल्ली के गांवों का पीएनजी का सपना एक साल के अंदर पूरा कर लिया जाएगा। इस दौरान अगले साल यानी कि 2025 तक दिल्ली के सभी 383 गांवों को पीएनजी कनेक्शन दे दिया जाएगा और उसमें गैस की सप्लाई भी शुरू कर दी जाएगी। गैस सप्लाई शुरू होने के बाद दिल्ली के लोगों को गैस के लिए सिलेंडर का इस्तेमाल करने की जरूरत नहीं होगी।

एनसीआर में घर और कारोबार का सपना करें साकार, जीडीए गाजियाबाद में देगा प्लॉट खरीदने का मौका

नई दिल्ली, एजेंसी। एनसीआर में अपना घर बसाने का सपना देख रहे लोगों के लिए अच्छी खबर है। अब गाजियाबाद विकास प्राधिकरण (जीडीए) के प्लॉट खरीदने का मौका मिलने जा रहा है। प्राधिकरण जुलाई के दूसरे हफ्ते से अपनी विभिन्न योजनाओं में खाली पड़ी संपत्तियों पर बोली लगवाकर बेचेगा। इसमें दो हजार वर्ग मीटर से बड़े और छोटे 250 से अधिक आवासीय, व्यावसायिक और औद्योगिक भूखंड शामिल हैं। जीडीए की विभिन्न योजनाओं में 250 से अधिक आवासीय, व्यवसायिक और औद्योगिक भूखंड रिक्त हैं। इसके अलावा सामुदायिक भवन समेत अन्य संपत्ति भी मौजूद है। इन सभी को बेचने या लीज पर देने की प्राधिकरण ने तैयारी की है। प्राधिकरण जुलाई महीने के दूसरे हफ्ते से नीलामी के जरिये इन्हें बेचेगा। यह नीलामी लोहियानगर के हिंदी भवन में आयोजन की जाएगी। इसमें 150 से अधिक आवासीय, 100 से अधिक व्यवसायिक व अन्य औद्योगिक भूखंड शामिल किए गए हैं। इनकी जानकारी प्राधिकरण की बेवसाइट पर दी जाएगी।

इच्छुक व्यक्ति इन्हें प्राधिकरण की वेबसाइट पर जाकर देख सकेंगे। फिर अपनी पसंद का भूखंड खरीदने के लिए नीलामी प्रक्रिया में शामिल हो सकता है। जीडीए के अधिकारी बताते हैं कि प्राधिकरण की विभिन्न योजनाओं में कई भूखंड खाली हैं। इन्हें बेचने की तैयारी की गई है। इन्हें नीलामी प्रक्रिया में शामिल कर बेचा जा रहा है। ताकि इन्हें खरीदने के इच्छुक खरीदार बोली लगाकर खरीद सके। जीडीए सचिव राजेश कुमार सिंह ने बताया कि रिक्त पड़ी संपत्तियों को बेचने के लिए जुलाई महीने में नीलामी प्रक्रिया शुरू की जाएगी।

ड्रामेबाजी कर रही दिल्ली सरकार, पानी नहीं छोड़ने के आरोपों पर हरियाणा के मंत्री का पलटवार

नई दिल्ली, एजेंसी। हरियाणा के सिंचाई एवं जल संसाधान राज्य मंत्री डॉ अभय सिंह यादव ने गुरुवार को जल संकट को लेकर दिल्ली सरकार के आरोपों को खारिज करते हुए स्पष्ट किया है कि हरियाणा दिल्ली को उसके हिस्से का पूरा पानी दे रहा है। यादव ने कहा कि दिल्ली में पानी की किल्लत केवल दिल्ली की आंतरिक खराब व्यवस्था के कारण है।

यादव के मुताबिक हरियाणा पानी पर राजनीति नहीं करता क्योंकि हम पानी को आवश्यकता के रूप में देखते हैं। राष्ट्रीय राजधानी को पानी मिले यह सबकी जिम्मेदारी है और हम दिल्ली को पानी देने में कोई कमी नहीं कर रहे हैं। उन्होंने दावा करते हुए कहा कि हरियाणा निर्धारित 719 क्यूसेक पानी के मुकाबले कहीं ज्यादा 1050 क्यूसेक पानी दिल्ली को दे रहा है। अभय यादव ने गुरुवार को दिल्ली स्थित हरियाणा भवन में पत्रकारों को आकंड़ो के साथ हरियाणा द्वारा दिल्ली को की जा रही जलापूर्ति की जानकारी दी। इस अवसर पर सिंचाई विभाग के अधिकारी भी उपस्थित थे। सिंचाई राज्य मंत्री ने कहा कि पानी को लेकर दिल्ली सरकार राजनीतिक ड्रामेबाजी कर रही है। समय-समय पर अलग-अलग एजेंसियों की ओर से बार-बार आंकड़े दिए गए हैं। हरियाणा द्वारा दिया गया डाटा सही पाया गया है। एक भी एजेंसी यह नहीं कह सकती कि हरियाणा ने पानी कम दिया है। दिल्ली सरकार अपने कुप्रबंधन को ठीक करने की बजाय बार-बार हरियाणा पर आरोप लगा रही है। हरियाणा नियमित रूप से दिल्ली को पानी की पूर्ण अधिकृत हिस्सेदारी की आपूर्ति कर रहा है। उन्होंने बताया कि दिल्ली द्वारा 13 जून को सुप्रीम कोर्ट के समक्ष दायर याचिका का उत्तर देते हुए हरियाणा सरकार ने 23 मई से 12 जून तक की अवधि के लिए दिल्ली संपर्क बिंदु, बवाना पर आपूर्ति किए गए पानी का डेटा प्रस्तुत किया है।

इंस्टाग्राम फ्रेंड ने 13 साल की लड़की संग ओयो होटल में की हैवानियत

नई दिल्ली, एजेंसी। गाजियाबाद के मोदीनगर की एक कॉलोनी में दुष्कर्म से आहत होकर आत्महत्या करने वाली कक्षा आठ की छात्रा के मामले में पुलिस ने मुख्य आरोपी सहित तीन को जेल भेज दिया है। छात्रा को ओयो होटल में ले जाकर नशीला पदार्थ पिलाकर दुष्कर्म किया गया था। होटल संचालक ने आरोपी को बिना आईडी के कमरा महंगे दाम पर दिया था। पुलिस सुरक्षा के बीच छात्रा का अंतिम संस्कार कर दिया गया। मोदीनगर की एक कॉलोनी निवासी 13 वर्षीय कक्षा आठ की छात्रा के साथ इंस्टाग्राम पर दोस्ती के बाद युवक हिमांशु सोनी ने सोमवार शाम को छात्रा के साथ दुष्कर्म किया। दुष्कर्म के बाद से वह काफी परेशान थी। मेडिकल कराकर लौटने के बाद बुधवार शाम को छात्रा ने अपने घर पर पंखे से लटककर आत्महत्या कर ली।

एनसीआर में आएगी रोजगार की बहार, ग्रेटर नोएडा में बनेगा कार्गो टर्मिनल

नई दिल्ली, एजेंसी। ग्रेटर नोएडा में दादरी के समीप गति शक्ति योजना के तहत कार्गो टर्मिनल विकसित होने से क्षेत्र में पांच हजार करोड़ रुपये का निवेश और 15 हजार लोगों को रोजगार का अवसर मिलेगा। परियोजना के लिए 260 एकड़ जमीन चिन्हित कर ली गई है, जो क्षेत्र के पाली और मकोड़ा गांव के पास स्थित है। इस महत्वपूर्ण परियोजना का प्रस्ताव ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण बोर्ड से पास होने के बाद शासन को रिपोर्ट भेजने की तैयारी चल रही है। साथ ही आम लोगों से सुझाव भी लिया जाएगा। पीएम गति शक्ति योजना के अंतर्गत ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण क्षेत्र के दादरी के समीप कार्गो टर्मिनल विकसित किए जाने की तैयारी चल रही है। इसके लिए 260 एकड़ भूमि उपलब्ध है। प्राधिकरण के मास्टर मास्टर-2021 के अनुसार इसका भू-उपयोग होलसेल ट्रेड, संस्थागत, ट्रांसपोर्ट एवं कृषि है। कार्गो टर्मिनल के लिए यह जगह सबसे ज्यादा उपयुक्त मानी गई है, क्योंकि दादरी के निकट दिल्ली से मुंबई तक वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर प्रारंभ हो रहा है।

सेजल ने झांसे में लेकर मिसाइल इंजीनियर निशांत से कराए थे तीन ऐप्स इंस्टॉल

नई दिल्ली, एजेंसी। देश की सुरक्षा से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी दूसरे देशों को देने के मामले में ब्रह्मोस एयरोस्पेस के पूर्व इंजीनियर निशांत अग्रवाल को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई है। लेकिन अब इस मामले में एक बड़ी बात सामने आई है। दरअसल पाकिस्तानी जासूसों ने निशांत अग्रवाल के लैपटॉप को हैक करने के लिए तीन ऐप्स का इस्तेमाल किया था और उसके लैपटॉप से अहम डेटा चुराया था जिसमें गोपनीय जानकारी थी।

जांच अधिकारी ने बताया कि निशांत अग्रवाल पाकिस्तानी महिला सेजल से बात करता था और 2017 में उसने कई लिंक भेजे थे, जिस पर निशांत ने क्लिक किया था, इसके बाद उसके लैपटॉप में तीन ऐप्स क्यूव्हिस्पर, चैट टू हायर और एक्स-ट्रस्ट इंस्टॉल कराए गए थे। यूपी-एटीएस के जांच अधिकारी पंकज अवस्थी ने बताया कि ये

सभी ऐप एक मैलवेयर थे जिनसे देश की सुरक्षा से जुड़ी अहम जानकारी चुराई गई।

यूपी-एटीएस के जांच अधिकारी पंकज अवस्थी ने अपने बयान में कहा कि निशांत को हनी ट्रैप में फंसाने के लिए सेजल नाम की महिला ने एक फेसबुक अकाउंट बनाया था जो पाकिस्तान से ऑपरेट होता था। इस फेसबुक अकाउंट का इस्तेमाल करके उसने पाकिस्तानी गुर्गों के साथ कई भारतीय रक्षा कर्मचारियों को को टारगेट किया करते थे।

चैट से पता चला कि सेजल उस समूह का हिस्सा थी जो भारतीय रक्षा कर्मचारियों को धोखा देने के लिए डेटा और टिप्स साझा करता था। आगे अवस्थी ने अदालत को बताया कि सेजल के निर्देश पर, निशांत अग्रवाल ने उसके द्वारा भेजे गए लिंक पर क्लिक किया था और 2017 में अपने निजी लैपटॉप पर तीन ऐप इंस्टॉल किए थे। उन्होंने जांच में दावा किया गया है कि ब्रह्मोस मिसाइल से संबंधित महत्वपूर्ण दस्तावेज उसके निजी कंप्यूटरों पर पाए गए, जो बीएपीएल के सुरक्षा मानदंडों का उल्लंघन है।

गिरफ्तारी के समय बीएपीएल में कार्यरत था निशांत: मिसाइल इंजीनियर निशांत को अक्टूबर 2018 में मिलिट्री इंटेलिजेंस (एमआई) और उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र के आतंकवाद विरोधी दस्ते (एटीएस) के संयुक्त अभियान में गिरफ्तार किया गया था। वह उस समय ब्रह्मोस मिसाइलों का निर्माण करने वाले भारत-रूस संयुक्त उद्यम बीएपीएल के तकनीकी अनुसंधान अनुभाग में कार्यरत था।

निशांत अग्रवाल को आईटी अधिनियम की धारा 66 (एफ) और आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम (ओएसए) के तहत कई अन्य अपराधों के लिए दोषी ठहराया गया और उसे आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई है। निशांत अग्रवाल एनआइटी कुरुक्षेत्र का छात्र रहा है। वह 2013-14 में संस्थान से मैकेनिकल ट्रेड का गोल्ड मेडलिस्ट छात्र था। एनआइटी में मैकेनिकल ट्रेड के प्रोफसेर ने बताया कि निशांत होनहार छात्र रहा है। वह संस्थान का बेस्ट आलराउंडर रहा है। निशांत पढ़ाई के दौरान ऐसे रिसर्च पेपर लिखता था, जो स्टैंडर्ड जर्नल में छपते रहे हैं। वह दूसरे विद्यार्थियों के लिए पेपर लिखता था। उसके बैच से दो विद्यार्थियों का चयन ब्रह्मोस लिए हुआ था। निशांत के फेसबुक एकाउंट पर एनआइटी के दीक्षांत समारोह से लेकर कई फोटो शेयर हैं।

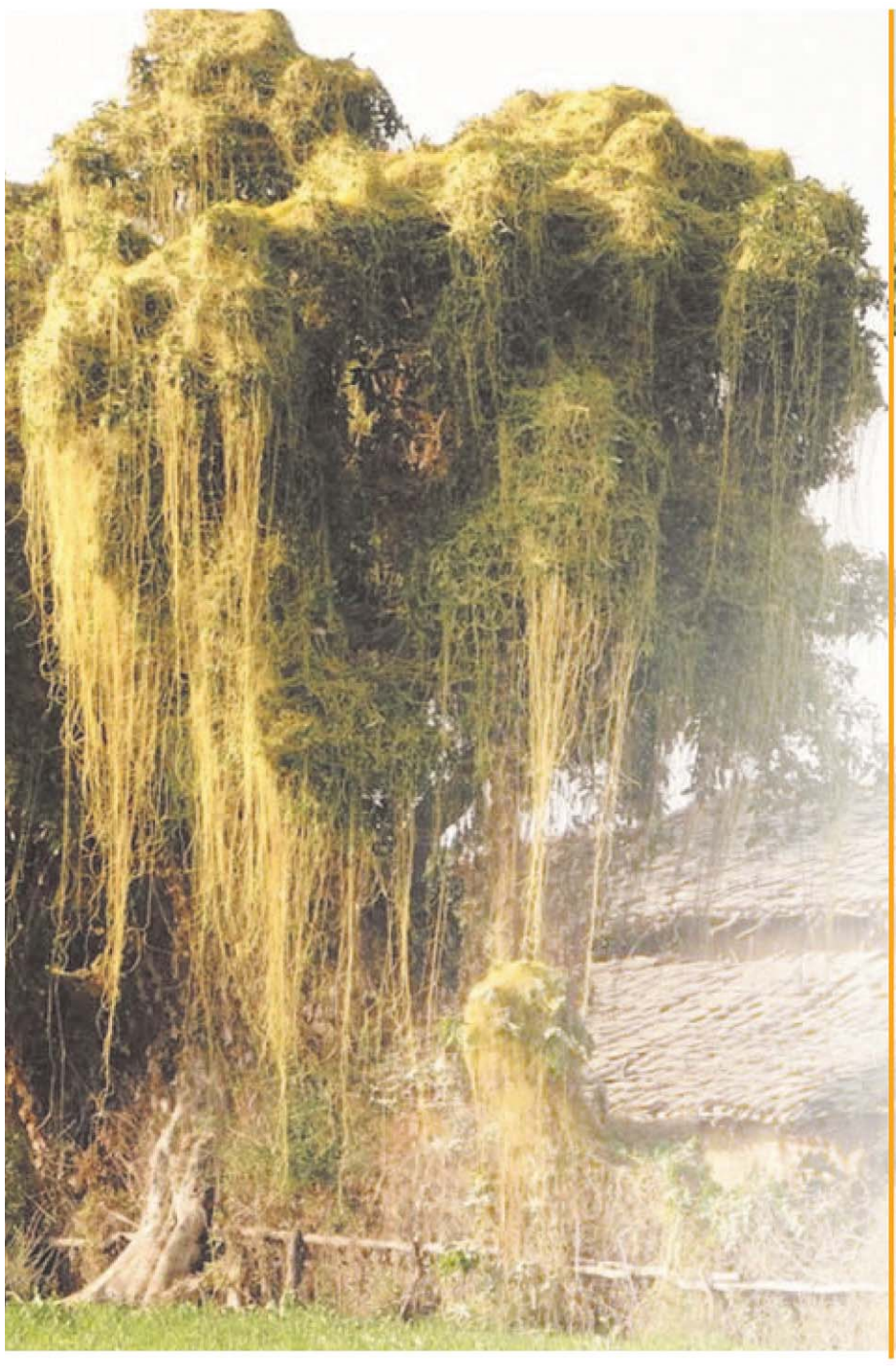

मोटे अनाजों में प्रमुख

बाजरा

भूमि का चुनाव

बाजरे की असिंचित फसल उन मिट्टियों में अच्छी उपज देती है, जिनकी जलधारण क्षमता अपेक्षाकृत अधिक होती है। रेतीली मटियार दोमट और मटियार दोमट भूमि में बाजरा की भरपूर पैदावार होती है।

भूमि की तैयारी

बाजरा वर्षा आधारित फसल है। ऐसी फसल के लिए गर्मियों की जुताई अच्छी पाई गई है। इससे खरपतवारों पर नियंत्रण करने में मदद मिलती है। वर्षा के शुरू होने पर हल या बखर चलाकर खेत को भुरभुरा बनायें तथा खरपतवार रहित करें।

उन्नत किस्में

अ. संकर किस्में - आईसीएमएच-356, जवाहर बाजरा हायब्रिड-1, जवाहर बाजरा हायब्रिड-2, हरित बटल रोग निरोधक

ब. परागित किस्में - जवाहर बाजरा किस्म-2, जवाहर बाजरा किस्म-3, जवाहर बाजरा किस्म-4, राज-171

बुआई

बाजरा की बुआई के लिए जुलाई का पहला पखवाड़ा ही उत्तम है। इस समय पर लगाए गए बाजरा पर रोगों का प्रकोप कम होता है तथा फूल आते समय सामान्य वर्षा होने पर प्रायः भूमि

में नमी का अभाव नहीं होता है।

बीज की मात्रा और पौधों का घनत्व

बाजरा की संकर किस्मों की कतारों के बीच 45 सेमी की दूरी रखना जरूरी है, जिसमें पौधों से पौधों के बीच की दूरी 10 से 15 सेमी होना चाहिए। बीज 1 से 2.5 सेमी की गहराई पर बोना चाहिए। इस प्रकार प्रति हेक्टेयर 1.8 लाख से 2 लाख तक उचित पौध संख्या के लिए 5 से 6 किलोग्राम बीज की मात्रा पर्याप्त रहती है। बुआई के पूर्व बीजोपचार जरुरी है बीज का उपचार एप्रान-35 एसडी की 6 ग्राम मात्रा को प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें, जिससे डाउनी मिल्डयू रोग के प्रारंभिक प्रकोप से बचा जा सके।

उर्वरक की मात्रा एवं देने का तरीका

बुआई के पूर्व 87 किलोग्राम यूरिया, 300 किलोग्राम और 33 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर देना चाहिए।

पौधों की छटाई

बाजरा के पौधें के पूर्ण विकास के लिए उपयुक्त स्थान मिलना आवश्यक है। अतः घने पौधों की छंटाई करके पौधों की आपसी दूरी उपयुक्त कर देनी चाहिए।

जल प्रबंध

बाजरा का केवल 3.3 प्रतिशत क्षेत्र सिंचित है। अतः जल का समुचित प्रबंध करना सफल खेती और उत्पादन स्थिरता की दृष्टि से अत्यंत आवश्यक है। वर्षा का केवल 5-15 प्रतिशत जल पौधों की बढ़वार के लिए उपलब्ध हो पाता है। इस प्रकार बाजरा उगाने वाले क्षेत्रों में जल का वैज्ञानिक प्रबंधन ही उनकी सफल खेती में सहायक हो सकता है। भूमि तल को समतल बना देने पर भूमि पर गिरने वाली वर्षा का समान वितरण होता है। तथा पानी भूमि में लम्बे समय तक भरे रहने के कारण इसका उत्तम संरक्षण करना संभव होता है। मेड़ बांधने की क्रिया जल संरक्षण में काफी सहायक पायी गयी है। वर्षा जल खेत में लम्बे समय तक खड़े रहने के कारण बहाव के माध्यम से बह जाने वाले जल की अधिक से अधिक मात्रा भूमि द्वारा ग्रहण कर ली जाती है तथा यह मात्रा भूगत होने के कारण सुरक्षित रहती है। यह विश्वास किया जाता है कि भूमि की ऊपरी सतह को संहत करने पर बाजरा के पौधे की जड़े अधिक गहराई तक जाती है जिसके कारण उपलब्ध भूमि जल का अच्छा उपयोग होता है तथा जड़ों का जल ग्रहण क्षेत्र भी बढ़ जाता है। इस क्रिया को शायद इसी कारण से मूल प्रशिक्षण (रुट ट्रेनिंग) भी कहा जाता है। क्योंकि जड़ों के नीचे की और बढ़ने का प्रशिक्षण दिया जाता है, यानि कि ऐसी स्थिति बनायी जाती है कि इसकी बढ़वार नीचे की ओर अधिक हो।

जल निकास

बाजरे की फसल यदि काफी देर तक पानी खड़ा रहे, तो इससे फसल को काफी नुकसान पहुंचता है। इसलिए बुवाई से पूर्व खेत को समतल कर लेना चाहिए

अमरबेल का नियंत्रण

प्रसारण

- परजीवी के बीज एवं तने के भाग सिंचाई करने से जल द्वारा एक खेत से दूसरे खेत में चले जाते हैं।
- खाद द्वारा भी बीज खेत में आ जाते हैं।
- तने के टुकड़ों का स्थानांतरण मनुष्यों एवं जंतुओं द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर कर दिया जाता है।
- इसके बीज बरसीम, रिजका के बीजों के साथ जुड़े रह सकते हैं।

हानि

अमरबेल के संक्रमण से मात्रात्मक व गुणात्मक दोनों प्रकार से हानि होती है-

- नींबू में 30-35 प्रतिशत
- मूंग में 70-90 प्रतिशत
- उड़द में 30-40 प्रतिशत
- रिजका, बरसीम में 60-70 प्रतिशत तक उपज में हानि होती है।

नियंत्रण

इस परजीवी पादप के नियंत्रण हेतु समन्वित प्रबंध करना अति आवश्यक है-

नियंत्रण के उपाय

- नमक के 10 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 100 ग्राम) घोल में बीजोपचार करके फसल के बीजों की बुवाई करें।
- अमरबेल के बीज रहित फसल के बीज ही बुवाई के काम लें।
- कृषि यंत्रों व पशुओं को अमरबेल से संक्रमित खेतों से स्वच्छ खेतों में न आने दें।
- अमरबेल से ग्रसित फार्म से कम्पोस्ट खाद तैयार न करें।

शस्य नियंत्रण

संक्रमित पौधों को परजीवी में बीज बनने से पहले उखाड़ कर जला दें।

- कम से कम पांच वर्ष का फसल चक्र अपनाना चाहिए।
- पाश फसलें जैसे ग्वार आदि उगाना चाहिए इसकी बढ़वार कम होगी।
- फसलों की सहनशील किस्में जैसे रिजके की एलएलसी 6 व एलएलसी 7, मूंग की एम-4 व उदड़ की टी-9 किस्में बोनी चाहिए।

जैविक नियंत्रण

मैलेनाग्रोमाइजा करुक्यूटा व कालेटोट्राइकम ग्लोइयोस्पोरीयोडीस के द्वारा भी इसका नियंत्रण कर सकते हैं।

- ल्यूबाओ-2 जो कि कोलेटोट्राइकम ग्लोइयोस्पोरीयोडिस करुक्यूटी रोगजनक का उत्पाद है, से भी जैविक नियंत्रण कर सकते हैं।

रासायनिक नियंत्रण

- क्लोरोफॉम 6-7 किग्रा (सक्रिय तत्व) या डाइक्लोनेनील 2 किग्रा (सक्रिय तत्व) प्रति हेक्टेयर मिट्टी में प्रयुक्त करें।
- खड़ी फसल (रिजका व बरसीम) में कटाई के 5-10 दिन बाद डाइकव्ट 6-10 किग्रा प्रति हेक्टेयर आवश्यकतानुसार पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- पेड़ों तथा बहुवर्षीय बेलों पर पेराक्वाट के 0.1 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें। तथा उपचारित परपोषी पौधों की जल्दी सिंचाई करें।
- यदि अमरबेल पर छिड़काव के बाद कोई अवशेष बच जाये तो पुनः बताये शाकनाशियों का छिड़काव करें।

इकाई क्षेत्र में कम से कम लागत में अधिक से अधिक उत्पादन हेतु वर्ष 1983 में फादर हेनरी द्वारा सिस्टम ऑफ राइस इंटेसीफिकेंशन का उद्भव मेडागास्कर में किया गया। इस पद्धति से 7-15 टन धान प्रति हेक्टेयर उत्पादन किया जा सकता है।

धान की मेडागास्कर खेती

भारत में हरित क्रांति आने के बाद से लेकर अब तक विभिन्न आदानों की इकाई लागत में काफी वृद्धि हुई है इस वृद्धि के फलस्वरुप शुद्ध लाभ भी कम प्राप्त हो रहा है, इस हेतु यह आवश्यक हो गया है कि इकाई क्षेत्र में कम से कम लागत में अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त किया जाये। इकाई क्षेत्र में कम से कम लागत में अधिक से अधिक उत्पादन हेतु वर्ष 1983 में फादर हेनरी द्वारा सिस्टम ऑफ राइस इंटेसीफिकेंशन का उद्भव मेडागास्कर में किया गया इस पद्धति से 7-15 टन धान प्रति हेक्टेयर उत्पादन किया जा सकता है।

मेडागास्कर विधि की कृषि कार्यमाला

खेत का चुनाव-मेडागास्कर विधि से धान की खेती करने हेतु उचित जल निकास वाली भूमि का चुनाव करना चाहिए तथा सिंचाई की भी व्यवस्था खेत पर होना चाहिए। बीज की मात्रा-इस विधि से धान की रोपाई करने के लिए 10-12 किलोग्राम बीज की आवश्यकता प्रति हेक्टेयर पड़ती है।

धान की उन्नत किस्में

कम अवधि में पकने वाली किस्में-तृप्ति, पूर्वा, जेआर 75

मध्यम समय में पकने वाली किस्में-जेआर 201,दीप्ति, जेआर 353

सामान्य अवधि में पकने वाली किस्में-आई.आर. 36, आई.आर. 64, माधुरी,पूसा सुगंधा

देर से पकने वाली किस्में :-स्वर्णा, श्यामला, महासुरी

संकर किस्में-एपीएचआर-1, एपीएचआर-2, एमजीआर-1, सीएनआर एच-1, पंत संकर धान

नर्सरी हेतु खेत की तैयारी एवं बीज की बुवाई

खेत की अच्छी तरह आड़ी-तिरछी जुताई कर मिट्टी को भुरभुरी कर लेना चाहिए तत्पश्चात एक मीटर चौड़ी 10 मीटर लम्बी 15 सेमी ऊंचाई की क्यारी बना लें, क्यारी के दोनों ओर सिंचाई नाली बनाये क्यारी तैयार कर 50-60 किलोग्राम नाडेप कम्पोस्ट मिलाकर समतल कर दें तैयार क्यारी में उपचारित बीज को

रोपाई हेतु खेत की तैयारी

रोपाई किये जाने वाले खेत की अच्छी तरह जुताई कर भुरभुरा कर लें तथा खेत में पाटा लगाकर भूमि को समतल कर लेना चाहिए। तथा खेत में 8-10 टन नाडेप कम्पोस्ट/ गोबर की पकी हुई खाद प्रति हेक्टेयर की दर से मिला देना चाहिए। इस प्रकार रोपणी के लिए खेत तैयार हो जायेगा। सामान्यतः 10-15 दिन की पौध इस पद्धति में रोपाई हेतु उपयुक्त होती है। इन पौधों को जड़ सहित सावधानीपूर्वक उखाड़ कर 20 से 30 मिनट के अंदर खेत में रोप देना चाहिए। रोपाई एक से दो सेमी गहराई पर करें तथा पौध को खेत में सीधा रोपना चाहिए। रोपाई के समय खेत में पानी भरा नहीं होना चाहिए। एक स्थान पर एक ही पौधे की रोपाई करें तथा पौध से पौध की दूरी 25 सेमी एवं कतार से कतार की दूरी 23 सेमी रखना चाहिए, जिससे कंसे अधिक संख्या में निकलते हैं।

खाद उर्वरक की मात्रा

खेत की मिट्टी का परीक्षण कराकर तत्वों की उपलब्धता जानने के बाद ही खाद की मात्रा निश्चित की जानी चाहिए, इस विधि में कार्बनिक खादों एवं रासायनिक खादों का उपयोग करना अनिवार्य है चयनित खेत में हरी खाद के लिए सनई/ दैंचा की बोनी कर 20-25 दिन बाद मचाई कर मिट्टी में मिला दें तथा 3-4 दिन के लिए छोड़ दें तत्पश्चात रोपाई करें। रासायनिक खाद में 80 किलोग्राम 50 किलोग्राम फास्फोरस तथा 30 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता प्रति हेक्टर होती है। फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा का उपयोग आधार खाद के रुप में किया जाना चाहिए व नत्रजन का उपयोग तीन किश्तों में 20 प्रतिशत के एक सप्ताह बाद 50 प्रतिशत कंसे फूटने के समय एवं शेष 30 प्रतिशत गभोट के प्रारंभ काल में किया जाना चाहिए। वानस्पतिक वृद्धि अधिक होने पर नत्रजन की मात्रा कम की जा सकती है।

बिखेर दें तथा ऊपर से कम्पोस्ट खाद की पतली परत बिछाकर बीजों को ढ़क दे बीज का उपचार कर ही क्यारी डालना चाहिए। बीज उपचार हेतु स्युडोमोनास फ्लोरोसेंस 3 ग्राम प्रतिकिलो बीज की दर से उपयोग करना आवश्यक होता है। प्रति क्यारी 120 ग्राम बीज की मात्रा या 12 ग्राम प्रति वर्ग मीटर बीज की रोपणी डालने की आवश्यकता होती है। रोपणी की बोनी उपरांत प्रथम सिंचाई हजारे से की जाना चाहिए, शेष सिंचाई रोपणी के दोनों तरफ उपलब्ध सिंचाई नाली से करना चाहिए।

संक्षिप्त समाचार

आईपीओ में बढ़ रही धांधली पर लगेगी रोक, सेबी ने दिए निगरानी बढ़ाने के निर्देश

नईदिल्ली, एजेंसी। सेबी ने आईपीओ में बढ़ रही धांधली पर रोक लगाने के लिए कमर कस ली है। इसके लिए नियामक ने स्टॉक एक्सचेंजों को प्री-ओपन कॉल नीलामी सत्र में दुरुपयोग रोकने के लिए निगरानी बढ़ाने का निर्देश दिया है।

आईपीओ शेयरों के कारोबार में लगातार धांधली बढ़ रही है। इस बढ़ती धांधली पर अब रोक लगाई जाएगी। इसके लिए सेबी ने स्टॉक एक्सचेंजों को प्री-ओपन कॉल नीलामी सत्र में दुरुपयोग रोकने के लिए निगरानी बढ़ाने का निर्देश दिया है। आईपीओ शेयरों के कारोबार में बढ़ती धांधली पर रोक लगाई जाएगी। इसको रोकने के लिए सेबी ने स्टॉक एक्सचेंजों को प्री-ओपन कॉल नीलामी सत्र के दुरुपयोग रोकने के लिए निगरानी बढ़ाने के निर्देश दिए। जारी निर्देश के तहत आईपीओ के शेयरों का पहले दिन का कारोबार सत्र सुबह नौ से 10 बजे तक होगा। इसमें 45 मिनट ऑर्डर एंट्री, बदलाव और रद्दीकरण के लिए होगा। 10 मिनट ऑर्डर मिलान और व्यापार पुष्टिकरण के होंगे। 5 मिनट प्री-ओपन से सामान्य सत्र में जाने के लिए होगा।

दिन में ही 43 प्रतिशत चढ़ गया छोटकू शेयर, क्वांट एमएफ ने खरीदे कंपनी के 120000 शेयर

नईदिल्ली, एजेंसी। स्मॉलकैप कंपनी ह्यूबैक कलरैंट्स इंडिया लिमिटेड के शेयरों में शुक्रवार को तूफानी तेजी आई है। ह्यूबैक कलरैंट्स इंडिया के शेयर शुक्रवार को नेशनल स्टॉक एक्सचेंज में 19 पर्सेंट की तेजी के साथ 558 रुपये पर पहुंच गए हैं। कंपनी के शेयरों में यह तेजी क्वांट म्यूचुअल फंड के दांव के बाद आई है। क्वांट म्यूचुअल फंड ने ओपन मार्केट के जरिए ह्यूबैक कलरैंट्स इंडिया में 1 पर्सेंट से कम हिस्सेदारी खरीदी है। क्वांट म्यूचुअल फंड ने 20 जून को ह्यूबैक कलरैंट्स इंडिया के शेयर 453.57 रुपये प्रति शेयर के दाम पर खरीदे हैं।

ह्यूबैक कलरैंट्स इंडिया लिमिटेड के शेयरों में पिछले 2 दिन में 43 पर्सेंट की तेजी आई है। क्वांट म्यूचुअल फंड ने गुरुवार को ह्यूबैक कलरैंट्स इंडिया के 120000 शेयर या 0.52 पर्सेंट हिस्सेदारी खरीदी है। क्वांट म्यूचुअल फंड ने यह हिस्सेदारी 5.44 करोड़ रुपये में खरीदी है। ह्यूबैक कलरैंट्स इंडिया के शेयरों का 52 हफ्ते का हाई लेवल 654.90 रुपये है। वहीं, कंपनी के शेयरों का 52 हफ्ते का लो लेवल 300 रुपये है।

1 लाख रुपये के बना दिए 10 लाख से ज्यादा, 2 साल में सरकारी शेयरों ने किया मालामाल

नईदिल्ली, एजेंसी। सरकारी कंपनियों के शेयरों ने पिछले कुछ साल में गजब का रिटर्न दिया है। सरकारी कंपनियों पर दांव लगाने वाले निवेशक मालामाल हो गए हैं। सरकारी कंपनियों में मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स, कोचीन शिपयार्ड और रेल विकास निगम लिमिटेड के शेयरों ने पिछले 2 साल में 1500 पर्सेंट तक का रिटर्न दिया है। इन कंपनियों के शेयरों ने पिछले 2 साल में 1 लाख रुपये के निवेश को 10 लाख रुपये से ज्यादा बना दिया है। मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स के शेयरों में पिछले 2 साल में 1500 पर्सेंट से अधिक की तेजी आई है। सरकारी कंपनी के शेयर 24 जून 2022 को 245.20 रुपये पर थे।

अंबानी, अडानी, टाटा... एक बिहारी सब पर भारी, अनिल अग्रवाल की वेदांता ने कमाई में सबको पीछे छोड़ा

नईदिल्ली, एजेंसी। अनिल अग्रवाल की अगुवाई वाले वेदांता ग्रुप ने इस साल कमाई के मामले में रिलायंस इंडस्ट्रीज, महिंद्रा ग्रुप और टाटा ग्रुप को पीछे छोड़ दिया है। ग्रुप की कंपनियों में वेदांता लिमिटेड और हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड शामिल हैं। चालू फाइनेंशियल ईयर में वेदांता ग्रुप के निवेशकों की वेल्थ में काफी इजाफा हुआ है। इस दौरान दोनों कंपनियों का कंबाइंड मार्केट कैप 2.2 लाख करोड़ रुपये बढ़ गया है। शेयर बाजार के आंकड़ों के मुताबिक, इस साल 28 मार्च से 20 जून के बीच वेदांता समूह के कुल बाजार पूंजीकरण में 2.2 लाख करोड़ रुपये से अधिक की बढ़ोतरी दर्ज की गई। यह रिलायंस इंडस्ट्रीज, महिंद्रा ग्रुप और टाटा ग्रुप जैसे देश के प्रमुख औद्योगिक घरानों के मुकाबले कहीं ज्यादा है। मेटल किंग के नाम से मशहूर अनिल अग्रवाल की जन्म पटना में एक मारवाड़ी परिवार में हुआ था।

शेयर बाजार के आंकड़ों के मुताबिक, वेदांता लिमिटेड और हिंदुस्तान जिंक के शेयरों के भाव अपने 52-सप्ताह के निचले स्तर से लगभग दोगुने हो गए हैं। इस दौरान गौतम अडानी की अगुवाई वाले अडानी ग्रुप और महिंद्रा ग्रुप के मार्केट कैप में 1.4 लाख करोड़ रुपये की वृद्धि देखी गई। इसी तरह देश के सबसे बड़े औद्योगिक घराने टाटा ग्रुप का बाजार पूंजीकरण 60,600 करोड़ रुपये से अधिक बढ़ा जबकि एशिया के सबसे बड़े रईस मुकेश अंबानी की अगुवाई वाली रिलायंस इंडस्ट्रीज के बाजार मूल्यांकन में 20,656.14 करोड़ रुपये से अधिक की गिरावट आई।

वेदांता का प्रदर्शन- वेदांता ने वित्त वर्ष 2023-24 में 30 प्रतिशत के एबिटा मार्जिन के साथ 1,41,793 करोड़ रुपये का अपना दूसरा सर्वाधिक राजस्व और 36,455 करोड़ रुपये का एबिटा अर्जित किया था। वेदांता ग्रुप ने निकट भविष्य में 10 अरब डॉलर की एबिटा आय के लिए एक रणनीतिक खाका तैयार किया है जिसमें जिंक, एल्युमीनियम, तेल एवं गैस और बिजली कारोबार सहित 50 से अधिक वृद्धि परियोजनाओं का समय पर क्रियान्वयन शामिल है। वेदांता ग्रुप में एफआईआई की हिस्सेदारी मार्च तिमाही के अंत में बढ़कर 8.77 प्रतिशत हो गई जबकि दिसंबर तिमाही में यह 7.74 प्रतिशत थी। 22 मई को वेदांता और हिंदुस्तान जिंक के शेयर ऑल-टाइम हाई पर पहुंचे थे। गुरुवार को वेदांता का शेयर 4.86 प्रतिशत की तेजी के साथ 470.25 रुपये और हिंदुस्तान जिंक 2.29 प्रतिशत चढ़कर 647.65 रुपये पर पहुंच गया।

अनिल अग्रवाल का सफर- अनिल अग्रवाल ने 20 साल की उम्र में ही बिहार छोड़ दिया था और खाली हाथ मुंबई आ गए थे। उनके पास उस समय केवल एक टिफिन बॉक्स था। मुंबई आकर उन्होंने जमकर मेहनत की। साल 1970 में उन्होंने कबाड़ के धंधे से अपने कारोबारी करियर की शुरुआत की। उन्होंने अपनी पहली कंपनी की स्थापना की, जिससे उन्हें अच्छी-खासी कमाई हुई। साल 1976 में अग्रवाल ने शमशेर स्टर्लिंग केबल कंपनी को खरीदा। लेकिन बाद में धंधा नहीं चला तो उनके पास कर्मचारियों को सैलरी देने तक के पैसे नहीं बचे। इसके बाद अनिल अग्रवाल ने 9 अलग-अलग बिजनस शुरू किये, लेकिन सभी फेल हो गए। उन्होंने अपने शुरुआती 20-30 साल संघर्ष में बिताए। कैंब्रिज में अपने एक संबोधन में अग्रवाल ने बताया था कि वह कई साल तक डिप्रेशन में रहे थे। वे लगातार कोशिश करते रहे लेकिन सफलता नहीं मिली।

इसके बाद साल 1986 में भारत सरकार ने टेलीफोन केबल बनाने के लिए प्राइवेट सेक्टर को मंजूरी दे दी। इससे पहले 1980 में अग्रवाल ने स्टरलाइट इंडस्ट्रीज को खरीद लिया था। इसके बाद साल 1990 में अग्रवाल ने कॉपर रिफाइंड का काम शुरू किया। स्टरलाइट इंडस्ट्रीज देश की पहली ऐसी प्राइवेट कंपनी थी, जो कॉपर रिफाइन करने का काम करती थी। इसके बाद अग्रवाल लगातार सफलता की नई कहानी लिखते चले गए। वेदांता रिसोर्सेज एक नेचुरल रिसोर्सेज कंपनी है जिसकी दुनियाभर में मौजूदगी है। यह मिनरल्स, ऑयल एंड गैस को निकालती है और प्रोसेस करती है। कंपनी के करीब 64 हजार कर्मचारी और कॉन्ट्रैक्टर्स हैं। मुख्य रूप से यह कंपनी भारत, अफ्रिका, आयरलैंड और ऑस्ट्रेलिया में है। दुनियाभर में कंपनी के प्रोडक्ट्स बिकते हैं।

व्हिस्की, ब्रांडी, वोदका, रम... दुनिया को लगा भारतीय शराब का चस्का, बाजार में आते ही मच रही लूट

नईदिल्ली, एजेंसी। भारत की शराब का नशा दुनिया के सिर चढ़कर बोल रहा है। ड्रिंक्स इंटरनेशनल की ताजा रिपोर्ट के अनुसार, दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ रहे 30 स्पिरिट ब्रांड्स में से एक तिहाई भारतीय हैं। इतना ही नहीं टॉप दस व्हिस्की ब्रांड्स में से छह भारत के हैं। भारत के कुल शराब मार्केट में दो-तिहाई के बराबर हिस्सेदारी व्हिस्की की है। व्हिस्की के साथ-साथ भारत के ब्रांडी, वोदका और रम ब्रांड्स को भी काफी पसंद किया जा रहा है। भारत दुनिया की सबसे बड़ी आबादी वाला देश है और अगले पांच साल में 10 करोड़ लोग शराब पीने की लीगल एज में पहुंच जाएंगे। यही वजह है कि दुनिया की बड़ी-बड़ी शराब कंपनियां भारत पर फोकस कर रही हैं।

%मिलियनेयर्स क्लब% की रिपोर्ट में कहा गया है कि एक ऐसे वर्ष में जब भारत आबादी के हिसाब से दुनिया का सबसे बड़ा देश बन गया, इसने खुद को स्पिरिट्स की दुनिया में एक अग्रणी देश के रूप में भी स्थापित कर लिया। एक्साइज से जुड़े कुछ मुद्दे अब भी हैं जिनके कारण यहां बिजनस मुश्किल है। लेकिन यह बात साल-दर-साल सच होती जा रही है कि यदि आप भारतीय बाजार को समझ पाए, तो संभावनाएं लगभग असीमित हैं। एलाइड ब्लेंडर्स एंड डिस्टिलर्स की आइकोनिक व्हाइट व्हिस्की ने 2023 में 1.6 मिलियन केस बेचे और 1500 प्रतिशत की बढ़ोतरी के साथ टॉप पर रही। लेकिन व्हिस्की ही नहीं है ब्रांडी, रम और वोदका ब्रांड भी अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। तिलकनगर इंडस्ट्रीज की कूरियर नेपोलियन और मैन्शन हाउस ब्रांडी, रेडिको खेतान की ब्रांडी मॉर्फियस, वोदका ब्रांड मैजिक मोमेंट्स और रम 1965 का प्रदर्शन शानदार रहा। यह इस बात का संकेत है कि भारतीय ग्राहक डाइवर्सिफाई हो रहे हैं।

भारतीय व्हिस्की का जलवा

तेजी से उभर रहे 10 ब्रांड्स में से छह में दोहरे अंकों की वृद्धि देखी गई। आइकोनिक बनाने वाली कंपनी एलाइड ब्लेंडर्स एंड डिस्टिलर्स का 1,500 करोड़ रुपये का आईपीओ 25 जून को खुल रहा है। तिलकनगर इंडस्ट्रीज के चीफ मार्केटिंग ऑफिसर अहमद रहीमतुला ने कहा कि खासकर ब्रांडी कैटगरी में इनोवेशन और प्रीमियमीकरण की दिशा में हमारे प्रयासों को सफलता मिली है। हमारे ब्रांड हर साल मजबूत दोहरे अंकों की वृद्धि दर्ज कर रहे हैं और हमें इसमें और तेजी आने का भरोसा है। यूनाइटेड स्पिरिट्स के मैकडॉवेल ने 2023 में सिर्फ 1.9 प्रतिशत ग्रोथ के बावजूद 31.4 मिलियन केस की बिक्री के साथ दुनिया के सबसे बड़े व्हिस्की ब्रांड का अपना टैग बरकरार रखा। वॉल्यूम के हिसाब से दुनिया के शीर्ष 30 व्हिस्की ब्रांड्स में से तेरह भारतीय हैं। इनमें रॉयल स्टैग, इंपीरियल ब्लू और ब्लेंडर्स प्राइड शामिल हैं।

भीषण गर्मी में महंगाई की मार, दोगुने हुए फल और सब्जियों के दाम

नईदिल्ली, एजेंसी। भीषण गर्मी की मार अब फल-सब्जियों पर भी पड़ रही है। पिछले एक हफ्ते में कई सब्जियों के दाम दोगुना तक बढ़ गए हैं। दिल्ली की सबसे बड़ी सब्जी मंडी आजादपुर के व्यापारियों का कहना है कि गर्मी के कारण खेतों से सब्जियां मंडियों में नहीं पहुंच रही हैं। बढ़ते तापमान के कारण खेतों में सब्जियों की फसल बर्बाद भी हो रही है। जिससे मंडी में सब्जियों की आवक भी प्रभावित हुई है। वहीं भीषण गर्मी की वजह से मंडी में भी सब्जियां जल्दी खराब हो जा रही है।सब्जी व्यापारियों ने बताया कि सीजन की फसल जैसे टमाटर, लौकी, तोरई की फसल पर असर पड़ रहा है। बाजारों में 50 प्रतिशत तक इसके दाम बढ़ गए हैं। पिछले हफ्ते टमाटर का दाम 25 से 30 रुपये किलो था, अब वह 40 से 50 रुपये किलो तक पहुंच गया है। नींबू पहले 80 से 100 रुपये किलो के दाम में बिक रहे थे वह अब 160 रुपये किलो तक पहुंच गया है। ऐसा ही हाल फलों का भी है। सेब, आम, अनार, पपीता, तरबूज, खरबूजा, मौसमी, नारियल पानी जैसे फलों के रेट में 25 से 30 पर्सेंट तक की बढ़ोतरी देखी जा रही है। आजादपुर मंडी में थोक विक्रेता और वेजिटेबल ट्रेडर्स असोसिएशन से अनिल मल्होत्रा ने बताया कि बारिश न होने की वजह से आजादपुर मंडी में पहुंची शिमला मिर्च का थोक भाव 100 रुपये किलो पहुंच गया है।

क्रोमा ने भारत में 500 स्टोर की उपलब्धि हासिल की

500 स्टोर का जश्न मनाने के लिए 'हैप्पी 500 टू यू' कैम्पेन किया लॉन्च

कूपन कोड 'एच500टीयू' का उपयोग करके चेकआउट पर असीमित 10 प्रतिशत छूट का एलान

मुंबई, एजेंसी। क्रोमा ने देश में अपने 500वें स्टोर के उद्घाटन की घोषणा की, जो कंपनी की वृद्धि और विस्तार यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। इसे 'हैप्पी 500 टू यू' अभियान के शुभारंभ के साथ मनाया जा रहा है। यह कैम्पेन देश भर में लगातार बढ़ते ग्राहक आधार को उच्च गुणवत्ता वाले इलेक्ट्रॉनिक्स प्रॉडक्ट्स और साथ में ग्राहकों को बेहतरीन सेवाएं प्रदान करने के प्रति क्रोमा के प्रयासों को दर्शाता है।

इस उल्लेखनीय उपलब्धि का जश्न मनाते हुए क्रोमा ने ग्राहकों के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए एक विशेष प्रचार शुरू किया है। 19 जून से 23 जून तक, क्रोमा स्टोर, क्रोमा डॉट कॉम और टाटा न्यू पर सभी खरीदार चेकआउट पर कूपन कोड 'एच500टीयू' का उपयोग करके अपनी खरीदारी पर 10 फीसदी की छूट का आनंद ले सकते हैं। सीमित समय की इस पेशकश के जरिये क्रोमा ने ग्राहकों द्वारा वर्षों से दिखाए गए अटूट समर्थन और विश्वास के लिए धन्यवाद अदा करने का प्रयास किया है। विशेष रूप से, यह प्रचार और भी खास है क्योंकि कूपन पर कोई उपयोग प्रतिबंध नहीं है और यह क्रोमा स्टोर, क्रोमा डॉट कॉम और टाटा न्यू सहित सभी बिक्री चैनलों पर लागू है।

क्रोमा इनफिनिटी-रिटेल लिमिटेड के डिप्टी सीईओ श्री शिवाशीष ने इस उपलब्धि पर टिप्पणी करते हुए कहा, ''हमारा 500वां स्टोर खोलना विशेष रूप से खास है क्योंकि यह ग्राहक के करीब आने के हमारे समर्पण को रेखांकित करता है। इसके साथ, अब हम देश के सभी कोनों तक पहुँच चुके हैं। इस अवसर पर हम देश भर में और अधिक लोगों तक इलेक्ट्रॉनिक्स प्रॉडक्ट्स पहुँचाते हुए अपने फुटप्रिंट को बढ़ाने की अपनी प्रतिबद्धता को दोहराना चाहते हैं।'' क्रोमा की शुरुआत से लेकर इलेक्ट्रॉनिक्स रिटेल में एक घरेलू नाम बनने तक की यात्रा के दौरान इनोवेशन पर निरंतर फोकस किया गया है और हमेशा इस बात पर ध्यान दिया गया है कि ग्राहकों की पसंद क्या है। आज, क्रोमा भारत के राष्ट्रीय बड़े प्रारूप वाले विशेषज्ञ ओमनी-चैनल इलेक्ट्रॉनिक्स रिटेलर के रूप में मजबूती से खड़ा है, जो 180 से अधिक प्रमुख शहरों में 550 से अधिक ब्रांडों में 16,000 से अधिक प्रॉडक्ट पेश करता है। यह विशाल उत्पाद रेंज और व्यापक पहुंच सुनिश्चित करती है कि ग्राहकों को इलेक्ट्रॉनिक्स में नवीनतम और सर्वश्रेष्ठ तक पहुंच प्राप्त हो, चाहे वे ऑनलाइन खरीदारी करें या स्टोर में।

सालाना 24.43 लाख रुपए के उच्चतम पैकेज के साथ बिमटेक में प्लेसमेंट का शानदार दौर

सर्वाधिक नियुक्तियां बीएफएसआई सेक्टर में, 464 छात्रों को अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर प्लेसमेंट मिला

नई दिल्ली , एजेंसी। देश के अग्रणी बी-स्कूल, बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट टेक्नोलॉजी (बिमटेक) में कैंपस प्लेसमेंट के दौरान विद्यार्थियों को बड़ी कंपनियों में शानदार ऑफर मिले। एमबीए जॉब मार्केट में मंदी के बावजूद बैच 2022-24 के लिए बिमटेक ने 97.07 प्रतिशत की प्लेसमेंट दर हासिल की है। संस्थान के विद्यार्थी को सालाना 24.43 लाख रुपए का उच्चतम पैकेज ऑफर किया गया। औसत पैकेज 11.10 लाख रुपए प्रति वर्ष रहा। सफलता का एक और उदाहरण कायम करते हुए बिमटेक के 464 युवा और प्रतिभाशाली विद्यार्थियों ने अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर नियुक्ति हासिल की है।

प्लेसमेंट अभियान इसके दो साल के 4 पूर्णकालिक कार्यक्रमों के लिए चलाया गया- पीजीडीएम, पीजीडीएम- इंटरनेशनल बिजनेस, पीजीडीएम- रिटेल मैनेजमेंट और पीजीडीएम- इंश्योरेंस बिजनेस मैनेजमेंट।

पीजीडीएम के लिए उच्चतम सीटीसी आईएनआर 22.00 एलपीए थी, उसके बाद पीजीडीएम (इंटरनेशनल बिजनेस) आइएनआर 22.00 एलपीए, पीजीडीएम (रिटेल मेनेजमेंट) आइएनआर 24.43 एलपीए और पीजीडीएम (इंश्योरेंस बिजनेस मैनेजमेंट) उच्चतम सीटीसी आइएनआर 14.00 एलपीए थी।

संस्थान के छात्रों को मिली इस शानदार सफलता के बारे में बात करते हुए बिमटेक की डायरेक्टर डॉ. प्रवीणा राजीव ने कहा, ''हमें इस बात की बहुत खुशी है कि संस्थान ने उल्लेखनीय प्लेसमेंट के साथ एक बार फिर अपनी विरासत को बनाए रखा है। कैंपस प्लेसमेंट ड्राइव के लिए 145 से अधिक कंपनियों का संस्थान में आना हमारे संकाय सदस्यों, हमारे शैक्षणिक कार्यक्रमों और मजबूत कॉर्पोरेट संबंधों की प्रतिष्ठा को ही साबित करता है। हाल के दौर में टैक-फ्रेंडली और डिजिटल तौर पर मजबूत लोगों की मांग में बहुत वृद्धि हुई है। इसलिए, हमारे संस्थान ने ऐसी प्रतिभाएँ प्रदान की हैं जो लगातार बदलते माहौल से निपटने और अपने चुने हुए क्षेत्रों में उत्कृष्टता हासिल करने में सक्षम हैं।'' बिमटेक के शानदार प्लेसमेंट स्पेल ने 39 नए संगठनों सहित विभिन्न क्षेत्रों की 145 से अधिक अग्रणी कंपनियों को आकर्षित किया। लैंडमार्क ग्रुप (होम सेंटर), ब्लैकरॉक, ईवाई इंडिया, डेलोइट, विप्रो लिमिटेड, केपीएमजी, इंफोसिस, मेक माई ट्रिप (एमएमटी), और एसबीआई जनरल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड जैसी कई प्रमुख कंपनियों ने इस साल के प्लेसमेंट ड्राइव में भाग लिया। छात्रों को सीनियर एनालिस्ट, बिजनेस एनालिस्ट, एरिया मैनेजर, कंसल्टेंट, मैनेजमेंट ट्रेनी, डिजिटल डिमांड एनालिस्ट, रिसर्च एसोसिएट, एसोसिएट सॉल्यूशन एडवाइजर, डिप्टी मैनेजर और बिजनेस डेवलपमेंट मैनेजर सहित कई तरह के पदों पर काम करने का ऑफर मिला है।

गैलेक्सी एस24 सीरीज़ में गैलेक्सी एआईफीचर्स की पेशकश के साथ की मोबाइल एआई युग की शुरुआत

गुरुग्राम, एजेंसी। दुनिया तकनीक के एक नए और रोमांचक युग की शुरुआत में है। मोबाइल एआई का दौर आ गया है, जिसे सैमसंग ने गैलेक्सी एस24 सीरीज़ में गैलेक्सी एआई फीचर्स के साथ पेश किया है। यह हमारा पहला एआई फोन है। गैलेक्सी एस24 सीरीज़ में जनरेटिव एआई तकनीक के फायदे जोड़ने के लिए सैमसंग ने हाइब्रिड एआई का उपयोग किया है। एआई कई संभावनाएं पेश करता है। सैमसंग का मानना है कि मोबाइल डिवाइस एआई की क्षमता को दिखाने का जरिया हैं, क्योंकि दुनियाभर के यूजर्स अपनी रोजमर्रा की जरूरतों के लिए अपने फोन पर निर्भर रहते हैं।

रोजमर्रा की जिंदगी में मोबाइल डिवाइस की अहम भूमिका होती है, क्योंकि लोग इन्हें कई महत्वपूर्ण और यादगार पलों के दौरान इस्तेमाल करते हैं। सैमसंग इसे समझता है और मानता है कि स्मार्टफोन को अधिक उन्नत होना चाहिए ताकि उपयोगकर्ता महत्वपूर्ण क्षणों का सरल, सहज और बेहतर तरीके से आनंद ले सकें। सैमसंग गोपनीयता के महत्व को भी समझता है, इसलिए यह ब्रांड यूजर्स को इस बात पर पूरा नियंत्रण देता है कि वे क्या शेयर करें और क्या निजी रखें।

सैमसंग इलेक्ट्रॉनिक्स में मोबाइल आरएंडडी ऑफिस के ईवीपी और हेड वॉन-जून चोई ने कहा, हमारा मानना है कि कंपनी का हाइब्रिड नजरिया सभी जरूरतों को पूरा करने के लिए सबसे व्यावहारिक और विश्वसनीय समाधान है, जो सैमसंग को लीडर बनाए रखता है। हम यूजर्स को इंडस्ट्री के अग्रणी भागीदारों के साथ मिलकर खुले सहयोग के जरिए डिवाइस पर एआई के तेज रिस्पॉन्स, अतिरिक्त गोपनीयता और क्लाउड-आधारित एआई की सुविधाओं का संतुलन प्रदान कर रहे हैं, ताकि वे दैनिक जीवन के लिए जरूरी विभिन्न प्रकार के फंक्शन्स का आसानी से इस्तेमाल कर सकें।

ऑन-डिवाइस एआईके साथ संभावनाओं का विस्तार- सैमसंग ने लाइव ट्रांसलेट सुविधा को ऑन-डिवाइस एआई आधारित बनाया है, क्योंकि वॉयस कॉल स्मार्टफोन की सबसे बुनियादी और निजी सुविधा है। सैमसंग यूजर्स को भाषा की बाधाओं के बिना संवाद करने के लिए सशक्त बनाने के लिए प्रतिबद्ध है और यह सुनिश्चित करता है कि हर संवाद पूरी तरह सुरक्षित और निजी हो।

मुकेश अंबानी के डीपफेक वीडियो से डॉक्टर को लगा 7 लाख का चूना

- मुंबई की एक आयुर्वेदिक डॉक्टर शेयर ट्रेडिंग के नाम पर हुई ठगी का शिकार

मुंबई ।

मुंबई की एक 54 साल की आयुर्वेदिक डॉक्टर शेयर ट्रेडिंग के नाम पर ठगी का शिकार हो गई। अंधेरी में रहने वाली इस डॉक्टर को इंस्टाग्राम पर एक रील दिखाई गई थी।` जिसमें मुकेश अंबानी एक कंपनी का प्रचार कर रहे थे। यह रील नकली थी और डॉक्टर को 7 लाख रुपये से ज़्यादा का चूना लगा दिया गया। डॉक्टर केकेएच पाटिल ने बताया कि उन्हें इंस्टाग्राम पर एक वीडियो दिखा गया, जिसमें मुकेश अंबानी राजीव शर्मा ट्रेड ग्रुप नाम की कंपनी और उसके बीसीएफ इन्वेस्टमेंट एकेडमी का प्रचार कर रहे थे। वीडियो में अंबानी लोगों को इसमें निवेश करने के लिए कह रहे थे, जिससे उन्हें अच्छा मुनाफा मिलेगा। डॉक्टर पाटिल को यकीन हो गया कि यह वीडियो असली है और उन्होंने 28 मई से 10 जून के बीच 16 अलग-अलग बैंक खातों में कुल 7.1 लाख रुपये ट्रांसफर कर दिए। डॉक्टर पाटिल ने बताया कि उन्होंने ऑनलाइन रिसर्च भी की थी, जिसमें कंपनी के बीकेसी और लंदन में ऑफिस होने की जानकारी मिली थी। उन्हें लगा कि यह एक विश्वसनीय कंपनी है। लेकिन जब उन्होंने ट्रेडिंग वेबसाइट पर दिखाए गए 30 लाख रुपये के मुनाफे को निकालने की कोशिश की, तो उन्हें एहसास हुआ कि उनके साथ धोखा हुआ है। पुलिस ने बताया कि स्कैमर्स ने वीडियो बनाने के लिए डीपफेक तकनीक का इस्तेमाल किया था। इस तकनीक से किसी भी व्यक्ति का नकली वीडियो बनाया जा सकता है। पुलिस ने इस मामले में आईपीसी की धाराओं के तहत पहचान छिपाने और धोखाधड़ी करने और आईटी अधिनियम की धारा के तहत पहचान की चोरी करने के आरोप में एक अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ केस दर्ज किया है। पुलिस अधिकारी ने बताया कि पुलिस बैंकों के नोडल अधिकारियों के संपर्क में है ताकि डॉक्टर पाटिल द्वारा ट्रांसफर किए गए पैसे को ब्लॉक किया जा सके।

एफएसएसएआई ने ताजसैट्स को सुधार नोटिस जारी किया

- एयर इंडिया की एक उड़ान में खाने के सामान में ब्लेड पाये जाने का मामला

नई दिल्ली ।

भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) ने एयर इंडिया की एक उड़ान के दौरान खाने में ब्लेड जैसी वस्तु पाये जाने के मामले में ताजसैट्स को सुधार नोटिस जारी किया। एयरलाइन के खाने के सामान की आपूर्ति ताजसैट्स करती है। यह घटना नौ जून की है। एफएसएसएआई ने ताजसैट्स बेंगलुरु में एक निरीक्षण किया। एयरलाइन को वहीं से खाने के सामान की आपूर्ति की गई थी। एफएसएसएआई के एक वे रिष्ठ अे धिकारी ने कहा` कि हमने ताजसैट्स बेंगलुरु में विस्तृत निरीक्षण के बाद उसे एक सुधार नोटिस जारी किया है। खाद्य सुरक्षा और मानक अधिनियम 2006 के तहत यदि खाद्य कारोबार से जुड़ा परिचालक किसी भी नियम का पालन करने में विफल रहा है और उसे उचित अवधि के भीतर जरूरी कदम उठाने आवश्यकता है, उसे सुधार नोटिस जारी किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि कंपनी को 15 दिन के भीतर नोटिस का अनुपालन करने के लिए कहा गया है। एयर इंडिया और उसके खान-पान की आपूर्ति से जुड़े भागीदार ताजसैट्स का स्वामित्व टाटा समूह के पास है। एयरलाइन ने इस घटना के लिए माफी मांगी। उसने कहा कि यह घटना उसके कैटरिंग भागीदार ताजसैट्स में उपयोग की जाने वाली सब्जी प्रसंस्करण मशीन से हुई।

खाद्य सुरक्षा प्राधिकरण ने पाया कि ब्लेड एक स्वचालित सब्जी 'कटर' का था जो अलग होकर सब्जी के टुकड़े के अंदर फंस गया था। राव ने कहा कि इसी तरह की घटनाओं को रोकने के लिए ताजसैट्स को निरीक्षण और रखरखाव प्रक्रियाओं को मजबूत करने के साथ-साथ एक्स-रे मशीन लगाने तथा हाथ से सब्जी काटने सहित अन्य सुधार करने का निर्देश दिया गया है।

सोने की कीमतों में तेजी,चांदी हुई सस्ती

नई दिल्ली ।

सोने के वायदा कारोबार में शुक्रवार को तेजी देखने को मिल रही है, जबकि चांदी के वायदा भाव गिरावट के साथ खुले। इस समय सोने के वायदा भाव 72,650 रुपये के करीब, जबकि चांदी के वायदा भाव 91,250 रुपये के करीब कारोबार कर रहे थे। वै श्विक बाजार में सोने के वायदा भाव तेजी और चांदी के वायदा भाव गिरावट के साथ खुले। सोने के वायदा भाव की शुरुआत तेजी के साथ हुई। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर सोने का बेंचमार्क अगस्त कॉन्ट्रेक्ट 91 रुपये की तेजी के साथ 72,677 रुपये के भाव पर खुला। चांदी के वायदा भाव की शुरूआत सुस्त रही। एमसीएक्स पर चांदी का बेंचमार्क जुलाई कॉन्ट्रेक्ट 413 रुपये की गिरावट के साथ 91,252 रुपये पर खुला। इस समय यह कॉन्ट्रेक्ट 239 रुपये की गिरावट के साथ 91,436 रुपये के भाव पर कारोबार कर रहा था। वै श्विक बाजार में चांदी के वायदा भाव की शुरुआत सुस्त रही। जबकि सोने के वायदा भाव तेजी के साथ खुले।

कॉमेक्स पर सोना 2,373.80 डॉलर प्रति औंस के भाव पर खुला। पिछला बंद भाव 2,369 डॉलर प्रति औंस था। इस समय यह 4.10 डॉलर की तेजी के साथ 2,373.10 डॉलर प्रति औंस के भाव पर कारोबार कर रहा था। कॉमेक्स पर चांदी के वायदा भाव 30.81 डॉलर के भाव पर खुले, पिछला बंद भाव 30.82 डॉलर था। इस समय यह 0.26 डॉलर की गिरावट के साथ 30.55 डॉलर प्रति औंस के भाव पर कारोबार कर रहा था।

एफएमसीजी की बिक्री के लिए ग्रामीण भारत बना चमकता सितारा: रिपोर्ट

नई दिल्ली ।

रोज उपयोग होने वाली घरेलू वस्तुओं (एफएमसीजी) की बिक्री की बढ़ोतरी के लिए ग्रामीण भारत एक चमकता सितारा बना हुआ है। शुक्रवार को जारी एक रिपोर्ट में कहा गया है कि 2024 की दूसरी तिमाही में शहरी क्षेत्रों की तुलना में इस क्षेत्र में विस्तार की बेहतर गति बनाए रखने की उम्मीद है। एक रिपोर्ट के अनुसार ग्रामीण भारत 2024 की दूसरी तिमाही अप्रैल-जून में एफएमसीजी कंपनियों के लिए शहरी बाजारों की तुलना में बेहतर वृद्धि स्तर बनाए रखेगा। रिपोर्ट में ग्रामीण बाजार को चमकता सितारा बताते हुए कहा गया है कि 2024 में इसमें पुनरुत्थान होने की संभावना है। जहां शहरी क्षेत्र के तनाव में रहने की संभावना है, वहीं ग्रामीण क्षेत्र साल की दूसरी तिमाही में अपनी स्थिति मजबूत कर सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में इस वृद्धि को इसी साल फरवरी में पेश अंतरिम बजट में सरकार द्वारा क्षेत्र-केंद्रित उपायों से मदद मिली है और इससे स्थिरता आई है। रिपोर्ट में कहा गया है कि इसके अलावा इस साल जिन राज्यों में चुनाव होने वाले हैं, वहां लोकलुभावन उपायों की उम्मीद की जा रही है। हमें यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि आने वाले महीनों में कई राज्यों में चुनाव होने वाले हैं और दूसरी छमाही में ग्रामीण बाजार के लिए लोकलुभावन उपायों में वृद्धि ही देखने को मिलेगी।

चीन में चल रहा है चालक रहित कारों का प्रयोग

-16 या उससे ज़्यादा शहरों ने कंपनियों को दी है परीक्षण की अनुमति

नई दिल्ली ।

पूरे चीन में 16 या उससे ज़्यादा शहरों ने कंपनियों को सार्वजनिक सड़कों पर चालक रहित वाहनों का परीक्षण करने की अनुमति दी है और कम से कम 19 चीनी वाहन निर्माता और उनके आपूर्तिकर्ता इस क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व स्थापित करने के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। कोई भी दूसरा देश इतनी आक्रामकता से आगे नहीं बढ़ रहा है।

चीन के मध्य भाग में वुहान शहर की व्यस्त सड़कों पर चालक रहित कारों का दुनिया का सबसे बड़ा प्रयोग चल रहा है। वुहान में 11 मिलियन लोग रहते हैं, 4.5 मिलियन कारें हैं, आठ लेन एक्सप्रेसवे हैं और यांग्त्ज़ी नदी के कीचड़ भरे पानी पर ऊंचे पुल हैं। 500 टैक्सियों का बेड़ा कंप्यूटर द्वारा संचालित है, जिनमें अक्सर बैकअप के लिए कोई सुरक्षा चालक नहीं होता। इन्हें चलाने वाली कंपनी टेक दिग्गज बायडू ने पिछले महीने कहा था कि वह वुहान में 1,000 और तथाकथित रोबोट टैक्सियाँ जोड़ेगी।

जानकारी के अनुसार, सरकार कंपनियों को महत्वपूर्ण मदद प्रदान कर रही है। रोबोट टैक्सियों के लिए ऑन-रोड परीक्षण क्षेत्रों को नामित करने वाले शहरों के अलावा सेंसर इस नई तकनीक के बारे में लोगों के डर को कम करने के लिए सुरक्षा घटनाओं और दुर्घटनाओं की ऑनलाइन चर्चा को सीमित कर रहे हैं। ऑटोमोटिव कंसल्टिंग फर्म जेडी पावर द्वारा किए गए सर्वेक्षणों में पाया गया कि चीनी ड्राइवर अमेरिकियों की तुलना में अपनी कारों को चलाने के लिए कंप्यूटर पर भरोसा करने के लिए अधिक इच्छुक हैं।

वुहान किंगचुआन पैवेलियन के पास एक छोटी सी किराने की दुकान के मालिक झांग मिंग ने कहा, मुझे लगता है कि सुरक्षा के बारे में बहुत अधिक चिंता करने की आवश्यकता नहीं है, इसे सुरक्षा अनुमोदन से गुजरना होगा।

वुहान किंगचुआन पैवेलियन के पास एक छोटी सी किराने की दुकान है, जहाँ कई बैदू रोबोट टैक्सियाँ रुकती हैं। चालक रहित कारों के विकास में चीन के अग्रणी होने का एक और कारण डेटा पर उसका सख्त और लगातार कड़ा होता नियंत्रण है।

रुपया तीन पैसे बढ़कर 83.58 डॉलर पर

मुंबई । विदेशी पूंजी के सतत प्रवाह और मजबूत घरेलू शेयर बाजार से बनी धारणा की वजह से शुक्रवार को शुरुआती कारोबार में रुपया अमेरिकी डॉलर के मुकाबले तीन पैसे बढ़कर 83.58 रुपये प्रति डॉलर पर पहुंच गया। रुपया गुरुवार को 17 पैसे की भारी गिरावट के साथ दो माह के निचले स्तर 83.61 प्रति डॉलर पर पहुंच गया था। विदेशी मुद्रा व्यापारियों ने कहा कि रुपया को अमेरिकी मुद्रा में गिरावट और विदेशों में कच्चे तेल की कीमतों में नरमी से समर्थन मिला। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में स्थानीय रुपया 83.60 पर खुला और डॉलर के मुकाबले दो पैसा मजबूत होकर 83.58 पहुंच गया, जो पिछले सत्र से तीन पैसे ज्यादा है। इस बीच छह मुद्राओं की एक तुलना में अमेरिकी मुद्रा का आकलन करने वाला डॉलर सूचकांक 0.01 प्रतिशत की गिरावट के साथ 105.21 पर कारोबार कर रहा था।

पिछले एक साल में 154 फीसदी उछले एनएमडीसी के शेयर

मुंबई । राष्ट्रीय खनिज विकास निगम (एनएमडीसी) के शेयरों ने पिछले एक साल में 154 फीसदी छलांग लगाकर अपने निवेसकों को तगड़ा रिटर्न दिया है। एनएमडीसी का शेयर अपने 52 सप्ताह के उच्चतम स्तर के करीब है। शुक्रवार को एनएमडीसी के शेयर 275 रुपये के लेवल पर खुले, जबकि पिछले दिन यह 273.20 रुपये प्रति शेयर पर बंद हुए थे। एनएमडीसी का लक्ष्य वित्त वर्ष 30 तक लौह अयस्क उत्पादन क्षमता को 100 मिलियन टन तक पहुंचाना है। ब्रोकरेज फर्म एनएमडीसी को रडार पर रख रही हैं। एक रिपोर्ट में ओडिशा माइनिंग कॉरपोरेशन द्वारा आयोजित नीलामी में लौह अयस्क चूर्ण के लिए बोलियों में कमी की रिपोर्ट की है। पिछले महीने की तुलना में बोली की कीमतों में 1000 रुपये प्रति टन की गिरावट आई है। इससे संकेत मिलता है कि एनएमडीसी को अगले दौर में कीमतों में कटौती करनी होगी। जुलाई माह की डिलीवरी के लिए नीलामी अगले सप्ताह होने की उम्मीद है। राष्ट्रीय खनिज विकास निगम (एनएमडीसी), भारत सरकार के इस्पात मंत्रालय के अंतर्गत एक नवरत्न सार्वजनिक क्षेत्र का उद्यम है।

पिछले 6 साल में रियल एस्टेट में 9.63 लाख करोड़ के कर्ज स्वीकृत हुए- रिपोर्ट

नई दिल्ली । पिछले 6 साल के दौरान रियल एस्टेट क्षेत्र में 9.63 लाख करोड़ रुपये के ऋण स्वीकृत हुए थे और अगले तीन वर्षों में 14 लाख करोड़ रुपये के ऋण वित्तपोषण की संभावना है। एक रिपोर्ट में यह उम्मीद जताई गई है। एक रियल एस्टेट परामर्शदाता और रियल एस्टेट डेटा विश्लेषक की एक संयुक्त रिपोर्ट के मुताबिक भारत में रियल एस्टेट क्षेत्र में पिछले छह वर्षों में 9,63,441 करोड़ रुपये के ऋण स्वीकृत हुए हैं। इस तरह औसतन 1,61,000 करोड़ रुपये के ऋण हर साल स्वीकृत हुए। सलाहकार फर्म ने कहा कि कुल ऋण बाजार में 2024-2026 के बीच भारतीय रियल एस्टेट में 14,00,000 करोड़ रुपये के वित्तपोषण के अवसर की संभावना है। देश के शीर्ष सात शहरों में स्वीकृत कर्जों के विश्लेषण के आधार पर पता चलता है कि मुंबई, दिल्ली-एनसीआर और बेंगलुरु की पिछले छह वर्षों में स्वीकृत कुल कर्जों में 80 प्रतिशत हिस्सेदारी रही। रिपोर्ट के मुताबिक, इस दौरान 2018 में आईएलएंडएफएस की वजह से पैदा हुए एनबीएफसी संकट और 2020 में कोविड महामारी के दुष्प्रभाव जैसी चुनौतियों ने ऋण बाजार में मंदी पैदा की थी। लेकिन 2021 के बाद से रियल एस्टेट बाजारों के पुनरुद्धार ने कर्जदाताओं और कर्जदारों दोनों के लिए नए अवसर पैदा किए हैं।

शेयर बाजार गिरावट पर बंद

मुम्बई।

घरेलू शेयर बाजार शुक्रवार को गिरावट पर बंद हुआ। सप्ताह के अंतिम कारोबारी दिन दुनिया भर से मिले अच्छे संकेतों के बाद भी बिकवाली हावी होने से बाजार नीचे आया हे। विदेशी निवेशकों की बेरुखी से भी बाजार पर बल पड़ा। इसी कारण दिन भर के कारोबार के बाद तीस शेयरों पर आधारित मानक सूचकांक सेंसेक्स 269.03 अंक करीब 0.35 फीसदी नीचे आकर 77,209.90 अंक पर बंद हुआ। वहीं पचास शेयरों वाला नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी भी 65.90 अंक तकरीबन 0.28 फीसदी नीचे आकर अंत में 23,501.10 अंक पर बंद हुआ।

आज कारोबार के दौरान सेंसेक्स के 30 शेयरों में से 9 शेयर लाभ के साथ ही ऊपर आये। एयरटेस, इंफोसिस, टीसीएस, जेएसडब्ल्यू स्टील और एनटीपसी सेंसेक्स के शेयर लाभ में रहे। वहीं कोटक बैंक, पावर ग्रिड, एचसीएल टेक, ब्रिपो और मारुति के शेयर ऊपर आये हैं। दूसरी ओर सेंसेक्स के 30 शेयरों में से 21 शेयर गिरावट के साथ ही नीचे आये हैं। अल्ट्राटेक सीमेंट, एलएंडटी, टाटा मोटर्स, नेस्ले इंडिया और एचयूएल सेंसेक्स के सबसे अधिक गिरावट दर्ज की गयी। बाजार जानकारों के अनुसार घरेलू बाजार में हल्की मुनाफावसूली से भी गिरावट आई है। वहीं गत दिवस बाजार तेजी के साथ बंद हुआ था। इससे पहले आज सुबह वै श्विक बाजारों से मिले अच्छे संकेतों की वजह से सेंसेक्स और निफ्टी50 ने हरे निशान में कारोबार की शुरुआत की। बीएसई का 30 शेयर वाला सेंसेक्स 122 अंकों की बढ़त के साथ 77,611 के स्तर पर पहुंच गया, जबकि 50-शेयर वाला निफ्टी50 50 अंकों की बढ़त के साथ 23,620 के स्तर पर पहुंच गया। बाद में निफ्टी50 ने 23,667 का नया रिकॉर्ड उच्चतम स्तर छुआ, जो पिछले उच्चतम स्तर 23,664 को पार कर गया। व्यापक बीएसई मिडकैप और स्मॉलकैप सूचकांकों ने भी अग्रणी सूचकांकों के साथ मिलकर 0.4 से 0.49 फीसदी की रेंज में बढ़त हासिल की।

यूलिप को निवेश उत्पाद के रूप में प्रचारित करने पर रोक

नई दिल्ली । भारतीय बीमा विनियामक एवं विकास प्राधिकरण (इरडा) ने एक मुख्य परिपत्र जारी कर यूनिट लिंक्ड बीमा योजनाओं (यूलिप) को निवेश उत्पाद के रूप में प्रचारित करने पर रोक लगा दी है। इरडा के हाल ही में जारी किए गए परिपत्र में कहा गया कि यूनिट-लिंक्ड या इंडेक्स-लिंक्ड बीमा उत्पादों को निवेश उत्पाद के रूप में विज्ञापित नहीं किया जाएगा। बीमा कंपनियों को स्पष्ट रूप से यह बताना होगा कि बाजार से जुड़ी बीमा योजनाएं पारंपरिक बंदोबस्ती पॉलिसियों से भिन्न हैं और उनमें जोखिम भी होता है। इसी तरह भाग लेने वाली बंदोबस्ती पॉलिसियों को पहले ही यह बताना होगा कि मुनाफे में अनुमानित बोनस की गारंटी नहीं है। इरडा ने कहा कि परिवर्तनीय वार्षिकी भुगतान विकल्प के साथ लिंक्ड बीमा उत्पादों और वार्षिकी उत्पादों के सभी विज्ञापनों में जोखिम कारकों का खुलासा किया जाएगा।

पीएनबी के कई अकाउंट 30 जून के बाद बंद हो जाएंगे!

नई दिल्ली । पंजाब नेशनल बैंक के कई बैंक अकाउंट 1 जुलाई से बंद हो जाएंगे। इसके लिए बैंक अपने ग्राहकों को अलर्ट भेज रहा है। पिछले 3 सालों से जो सेविंग अकाउंट एक्टिव नहीं है वह सभी अकाउंट 1 जुलाई से बंद हो जाएंगे। दरअसल, बैंक उन ग्राहकों का अकाउंट बंद करने वाला है जिनके अकाउंट में पिछले कुछ सालों में कोई ट्रांजेक्शन नहीं हुआ है या फिर उसनें जीरो बैलेंस है। पीएनबी ने अपने ग्राहकों को कहा है कि वह एक बार अपने सेविंग अकाउंट का स्टेटस जरूर चेक करें। बैंक ने उन ग्राहकों को नोटिस भेजा है जिनके अकाउंट में पिछले तीन साल से कोई ट्रांजेक्शन नहीं हुआ है। बैंक ने कहा कि ग्राहक को अपने अकाउंट को एक्टिव रखने के लिए बैंक ब्रांच में जाकर केवाईसी करवाना होगा। केवाईसी के साथ ग्राहक को उससे संबंधित डॉक्यूमेंट्स को अटैच करना होगा। पीएनबी ने बताया कि कई स्कैमर्स इस तरह के अकाउंट का गलत इस्तेमाल करते हैं। ऐसे में फ्रॉड के मामले को रोकने के लिए बैंक द्वारा यह फैसला लिया गया है। बैंक ने बताया कि वह डीमैट अकाउंट को बंद नहीं करेंगे। इसके अलावा सुकन्या समृद्धि योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, अटल पेंशन योजना जैसी सरकारी स्कीम के लिए जो अकाउंट ओपन हुए हैं वह भी बंद नहीं होंगे। इसी तरह माइनर सेविंग अकाउंट पर भी ये नियम लागू नहीं होता है।

मुनाफा के मामले में हुंडई ने मारुति सुजुकी को पीछे छोडा

-दो कंपनियों से कहीं अधिक कमाई कर रही हुंडई

नई दिल्ली ।

हुंडई मोटर्स कंपनी ने मुनाफा कमाने के मामले में मारुति सुजुकी को पीछे छोड़ दिया है। मारुति सुजुकी और टाटा मोटर्स की सबसे बड़ी प्रतिद्वंद्वी कार निर्माता एक कार के बिकने पर इन दोनों कंपनियों से कहीं अधिक कमाई कर रही है। वित्त वर्ष 2024 के पहले नौ महीनों में हुंडई ने एक कार के बिकने पर 75,000 रुपये का कुल लाभ कमाया, जो कि मारुति सुजुकी से 25 प्रतिशत अधिक था। इसी दौरान मारुति सुजुकी ने एक कार की बिक्री पर 60,150 रुपये का कुल लाभ कमाया। देश की तीसरी बड़ी कार निर्माता टाटा मोटर्स ने अपने पैसेंजर व्हीकल डिवीज़न के कुल लाभ के बारे में जानकारी नहीं दी, लेकिन कंपनी ने बताया कि टैक्स के पहले उसका प्रति कार पर लाभ 21,300 रुपये था। भारत में कभी हैचबैक कारों की सबसे बड़ी निर्माता रही हुंडई मोटर अब प्रमुखता से स्पोर्ट्स यूटिलिटी वाहनों को बना रही है। अब कंपनी की सबसे अधिक बिकने वाली कार कोई हैचबैक नहीं बल्कि एक एसयूवी है। भारतीय बाजार में कंपनी की सबसे ज्यादा बिकने वाली कार क्रेटा मिड-साइज एसयूवी है। कंपनी के पोर्टफोलियो में एसयूवी मॉडल की संख्या बढ़ी है, तो वहीं अब कंपनी केवल दो हैचबैक मॉडल - ग्रैंडआई10 निओस और आई20 की बिक्री कर रही है। हुंडई द्वारा बेची जा रही कारों की औसत कीमत 8.92 लाख रुपये है, जबकि मारुति की 6.33 लाख रुपये और टाटा की 9.07 लाख रुपये है। हुंडई मोटर की भारतीय इकाई हुंडई मोटर इंडिया भारतीय शेयर बाजार में अपना आईपीओ लाने की तैयारी कर रही है। हुंडई भारतीय बाजार में 14.2 करोड़ इक्विटी शेयर जारी कर सकती है जिसके जरिये कंपनी 2.5-3 बिलियन डॉलर की रकम जुटाएगी। यह भारतीय बजार में मारुति सुजुकी के बाद किसी ऑटोमोबाइल कंपनी का सबसे बड़ा आईपीओ होगा। मार्केट रेगुलेटर को सौंपी गई जानकारी में कार निर्माता ने बताया कि वह भारतीय बाजार में 4 इलेक्ट्रिक वाहनों को लॉन्च करेगी। इसमें क्रेटा ईवी भी शामिल होगी जिसे इस वित्त वर्ष के अंतिम तिमाही में लॉन्च किया जाएगा। मौजूदा समय में हुंडई भारतीय बाजार में दो इलेक्ट्रिक कारें आयोनिक 5 और कोना इलेक्ट्रिक की बिक्री कर रही है जिनकी कीमत क्रमशः 45 लाख रुपये और 24 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) है। कंपनी का कहना है कि वह शुरूआत में प्रीमियम इलेक्ट्रिक कारें लॉन्च करेगी, लेकिन बाद में आम ग्राहकों के लिए भी इलेक्ट्रिक कारें लाई जाएंगी।

सनफार्मा ने भारत में एक दवा पेश करने टकेडा से किया समझौता

नई दिल्ली ।

फार्मास्युटिकल कंपनी सन फार्मास्युटिकल इंडस्ट्रीज ने भारत में एक गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल दवा के व्यावसायीकरण के लिए टकेडा फार्मास्युटिकल कंपनी के साथ लाइसेंसिंग समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। इस दवा का उपयोग पाचन संबंधी विकारों के उपचार में किया जाता है। मुंबई की कंपनी ने शुक्रवार को बयान में कहा कि उसने भारत में 10 और 20 मिलीग्राम की मात्रा में वोनोप्राज़न टैबलेट के व्यावसायीकरण के लिए टेकेडा के साथ एक गैर-अनन्य पेटेंट लाइसेंसिंग समझौता किया है। वोनोप्राजन एक नया, सक्रिय पोटेशियम प्रतिस्पर्धी एसिड अवरोधक (पीसीएबी) है, जिसका उपयोग रिफ्लक्स एसोफैगिटिस और अन्य अम्ल पाचन संबंधी विकारों के इलाज के लिए किया जाता है। सनफार्मा के भारतीय कारोबार के एक वे रिष्ठ अे धिकारी ने कहा कि सन फार्मा गैस्ट्रोएंटरोलॉजी में अग्रणी है और हम टकेडा से गैर-अनन्य पेटेंट लाइसेंस के तहत भारत में वोनोप्राजन को पेश करने के लिए उत्साहित हैं। उन्होंने कहा कि यह साझेदारी गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल स्वास्थ्य के प्रति कंपनी की प्रतिबद्धता को दर्शाती है, जिसके तहत यह रोगियों और स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं को रिफ्लक्स एसोफैगिटिस और अन्य पाचन संबंधी विकारों के लिए एक नया उपचार विकल्प देती है। गैस्ट्रोएसोफेगल रिफ्लक्स रोग (जीईआरडी) भारत में आम है।

सनातन हिंदू संस्कृति का पूरे विश्व में फैलना आज विश्व शांति के लिए आवश्यक है

प्रहलाद सबनानी

आज एक बार पुनः भारत के भीतर जहां-जहां इस्लाम को मानने वाले लोगों की संख्या बहुलता को प्राप्त हो गई है, वहां वहां पर अनेक प्रकार की सामाजिक विसंगतियां, दमन और शोषण के नए-नए स्वरूप देखे जा रहे हैं। केरल, कश्मीर, पूर्वोत्तर भारत, बंगाल जहां जहां उनकी संख्या बहुलता में है, वहां -वहां दूसरे धर्म और जाति के लोग परेशान हैं। उपस्थित तथ्यों से सत्य को समझना चाहिए। इन आंकड़ों के आलोक में हमें समझना चाहिए कि हमारी बहू, बेटियां, महिलाओं की इज्जत कब तक सुरक्षित रह सकती है?

यूरोप में हाल ही में सम्पन्न हुए चुनावों में दक्षिणपंथी कहे जाने वाले दलों की राजनैतिक ताकत बढ़ी है। हालांकि सत्ता अभी भी वामपंथी एवं मध्यमार्गीय नीतियों का पालन करने वाले दलों की ही बने रहने की सम्भावना है परंतु विशेष रूप से फ्रान्स एवं जर्मनी में इन दलों को भारी नुक्सान हुआ है। इटली की देशप्रेम से ओतप्रोत दल की मुखिया जोरजीया मेलोनी को अच्छी सफलता हासिल हुई है। कुल मिलाकर यूरोपीय देशों के नागरिकों में देशप्रेम का भाव धीमे धीमे लौट रहा है एवं वे अब अपने अपने देश में अवैध रूप से रह रहे प्रवासियों का विरोध करने लगे हैं। विशेष रूप से यूरोप के आस पास के मुस्लिम बहुल देशों से भारी संख्या में मुस्लिम नागरिक अवैध रूप से इन देशों में शरण लिए हुए हैं एवं अब वे इन देशों की कानून व्यवस्थ के लिए एक बहुत बड़ी समस्या बन गए हैं। जर्मनी एवं फ्रान्स ने मुस्लिम नागरिकों को मानवीय आधार पर अपने देश में बसाने में शिथिल नीतियों का पालन किया था और अब ये दोनों देश इस संदर्भ में विभिन्न समस्याओं का सबसे अधिक सामना कर रहे हैं।

आज जब कई मुस्लिम देश शिया एवं सुन्नी सम्प्रदाय के नाम पर आपस में ही लड़ रहे हैं तो उनका ईसाई पंथ को मानने वाले नागरिकों के साथ सामंजस्य किस प्रकार रह सकता है, अतः यूरोपीयन देशों के नागरिकों को अब अपने किए पर पश्तावा होने लगा है। ब्रिटेन में भी आज मुस्लिम समाज की आबादी बहुत बढ़ गई है एवं यहां का ईसाई समाज अपने आप को असुरक्षित महसूस करने लगा है क्योंकि मुस्लिम समाज द्वारा ईसाई समाज पर कई प्रकार के आक्रमण किया जाना आम बात हो गई है। ब्रिटेन के कई शहरों में तो मेयर आदि जैसे उच्च प्रशासनिक अधिकारियों के पदों पर भी मुस्लिम समाज के नागरिक ही चुने गए है अतः इन नगरों में सत्ता की चाबी ही अब मुस्लिम समाज के नागरिकों के हाथों में है, जिसे ईसाई समाज के नागरिक बर्दाश्त नहीं कर पा रहे हैं। इसी प्रकार, इजराईल (यहूदी समुदाय) एवं हम्मास (मुस्लिम समुदाय) के बीच युद्ध लम्बे समय से चल रहा है। ईरान (शिया समुदाय) - सऊदी अरब (सुन्नी समुदाय) के आपस में रिश्ते अच्छे नहीं है। पाकिस्तान में तो अहमदिया समुदाय एवं बोहरा समुदाय को मुस्लिम ही नहीं माना जाता है एवं इनको गैर मुस्लिम मानकर इन पर सुन्नी समुदाय द्वारा खुलकर अत्याचार किए जाते हैं। कुल मिलाकर, मुस्लिम समाज न केवल अन्य समाज के नागरिकों (यहूदी, ईसाई, हिंदू आदि) के साथ लड़ता आया है बल्कि इस्लाम के विभिन्न फिर्कों के बीच भी इनकी आपसी लड़ाई होती रही है।

इसके ठीक विपरीत, सनातन हिंदू संस्कृति का अनुपालन करते हुए कई भारतीय मूल के नागरिक भी अन्य देशों में रह रहे हैं एवं लम्बे समय से स्थानीय स्तर पर ईसाई समाज

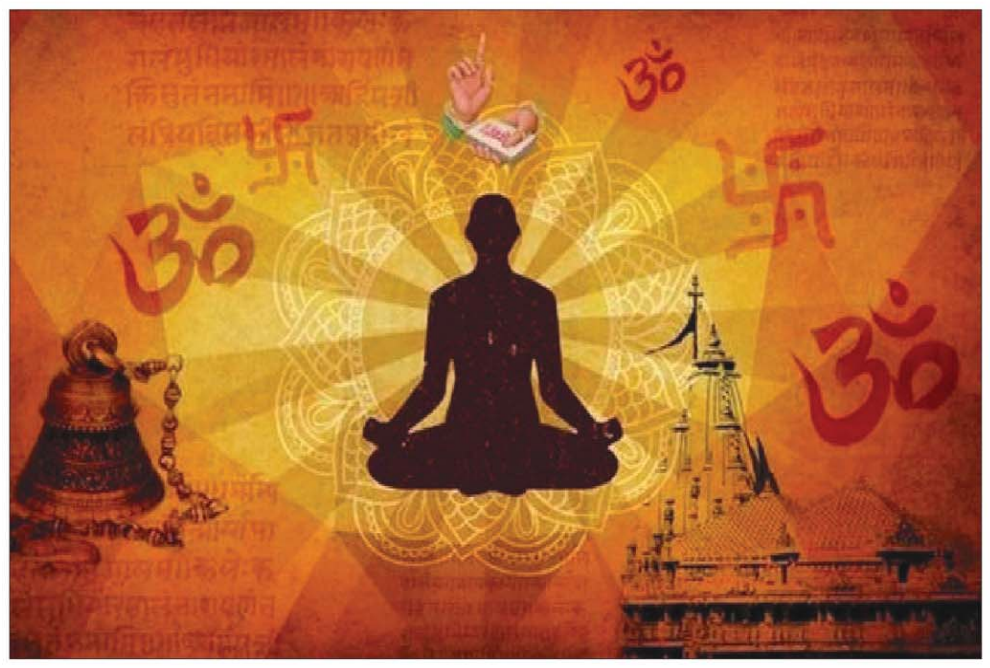

एवं अन्य धर्मों के अनुयायियों के साथ मिल जुलकर रहते आए हैं। इन देशों में भारतीय मूल के नागरिकों एवं स्थानीय स्तर पर अन्य धर्मों के अनुयायियों के बीच कभी भी बड़े स्तर पर आक्रोश उत्पन्न होता दिखाई नहीं दिया है, क्योंकि सनातन हिंदू संस्कृति में ह्ववसुधैव कुटुम्बकमह्व एवं ह्लसर्वे भवंतु सुखिनःह्व का भाव हिंदू नागरिकों में बचपन से ही भरा जाता है।

इसी प्रकार के भाव का संचार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भी पिछले 99 वर्षों से अपने स्वयंसेवकों में जगाता आया है। संघ चाहता है कि संसार में सद्गुणों का बोलबाला हो। 27 सितम्बर 1933 को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक पूजनीय डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार, शस्त्र पूजा समारोह में अपने उदबोधन में कहते हैं कि संघ एक हिंदू संगठन है। संसार के सभी धर्मों में हिंदू धर्म ही एकमात्र ऐसा धर्म है, जिसका मुख्य गुण सद्गुण है और जो आत्मवत् भूतेषु (सभी प्राणियों में अपने को देखना) की भावना से सभी जीवों के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करना सिखाता है। यह धर्म संसार में व्याप्त हिंसा और अन्याय को स्वीकार नहीं करता। इसलिए स्वाभाविक है कि प्रत्येक हिंदू ऐसी घटनाओं पर अंकुश लगाना चाहता है। लेकिन केवल उपदेश देने से संसार का स्वभाव नहीं बदलेगा। जब संसार को लगेगा कि हिंदू समाज सुसंगठित और सशक्त हो गया है, तो हमारे प्रति जो अनादर का भाव सर्वत्र दिखाई देता है, वह समाप्त हो जाएगा और संसार हमारी बात सुनेगा। हिंदू धर्म अनादि काल से यही करता आ रहा है और ऐसे पवित्र धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए ही संघ की शुरूआत हुई है ह्व आजकल हिंदू समाज बहुत अव्यवस्थित हो गया है। संघ का एकमात्र उद्देश्य हिंदू समाज को इस तरह संगठित करना है कि हिंदू, हिंदुस्तान में गर्वित हिंदू के रूप में खड़े हो सकें और दुनिया को यह विश्वास दिला सकें कि हिंदू कोई ऐसी जाति नहीं है जो मरणासन्न अवस्था में हो। संघ चाहता है कि संसार में सद्गुणों का बोलबाला हो। संघ का लक्ष्य मानव जाति में व्याप्त राक्षसी प्रवृत्ति को दूर करना और उसे मानवता सिखाना है। संघ का गठन किसी से घृणा करने या उसे नष्ट करने के लिए नहीं हुआ है ह्व

हाल ही में जारी की गई प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद की रिपोर्ट में ह्यधार्मिक अल्पसंख्यकों की हिस्सेदारी का देशभर में विश्लेषणह्व नामक विषय के माध्यम से बताया गया है कि बहुसंख्यक हिंदुओं की आबादी 1950 और 2015 के बीच 7.82% घट गई है। जबकि मुस्लिमों की आबादी में 43.15% की वृद्धि हुई है। मुस्लिमों की 1950 में 9.84% रही आबादी 14.09% पर पहुंच गई है। ईसाई धर्म के लोगों की आबादी की हिस्सेदारी 2.24% से बढ़कर 2.36% हुई है। ठीक ऐसे ही सिख समुदाय की आबादी 1.24% से बढ़कर 1.85% हो गई है। भारत में सद्गुणों से ओतप्रोत हिंदू नागरिकों की जनसंख्या यदि इस प्रकार घटती रही तो यह भारत के साथ पूरे विश्व के लिए भी अच्छा संकेत नहीं है क्योंकि अल्पसंख्यक के नाम पर मुस्लिम आबादी (जो कि अपने धर्म के प्रति एक कट्टर कौम मानी जाती है तथा अन्य धर्मों के लोगों के प्रति बिलकुल सहशुण नहीं है और वक्त आने पर अन्य समाज के नागरिकों का कत्लेआम करने में भी हिचकिचाते नहीं है) में बेतहाशा वृद्धि होना, पूरे विश्व के लिए एक अच्छा संकेत नहीं माना जा सकता है।

यह बात ध्यान रखने वाली है कि ईरान कभी आर्यों का अर्थात पारसियों का देश था। इराक, सऊदी अरब ,पश्चिम एशिया के समस्त मुस्लिम देश 1400 वर्ष पूर्व भारतीय संस्कृति और सभ्यता को मानने वाले देश थे। तलवार के बल पर 57 देश इस्लाम को स्वीकार कर चुके हैं इनमें से कोई भी ऐसा देश नहीं है जो 1400 वर्ष पहले से अर्थात सनातन की भांति सृष्टि के प्रारंभ से मुस्लिम देश था। 1398 ईसवी में ईरान भारत से अलग हुआ, 1739 में नादिरशाह ने अफगानिस्तान को अपने लिए एक अलग रियासत के रूप में प्राप्त कर लिया, बाद में 1876 में यह एक स्वतंत्र देश के रूप में अस्तित्व में आ गया,1937 में म्यांमार बर्मा अलग हुआ, 1911 में श्रीलंका अलग हुआ और 1904 में नेपाल अलग हुआ। सांप्रदायिक आधार पर देश विभाजन का यह सिलसिला यहीं नहीं रुका इसके पश्चात 1947 में पश्चिमी एवं पूर्वी पाकिस्तान देश बना। पूर्वी पाकिस्तान आज बांग्लादेश के रूप में मानचित्र पर उपलब्ध है।

आज एक बार पुनः भारत के भीतर जहां-जहां इस्लाम को मानने वाले लोगों की संख्या बहुलता को प्राप्त हो गई है, वहां वहां पर अनेक प्रकार की सामाजिक विसंगतियां, दमन और शोषण के नए-नए स्वरूप देखे जा रहे हैं। केरल, कश्मीर, पूर्वोत्तर भारत, बंगाल जहां जहां उनकी संख्या बहुलता में है, वहां -वहां दूसरे धर्म और जाति के लोग परेशान हैं। उपस्थित तथ्यों से सत्य को समझना चाहिए। इन आंकड़ों के आलोक में हमें समझना चाहिए कि हमारी बहू, बेटियां, महिलाओं की इज्जत कब तक सुरक्षित रह सकती है? निश्चित रूप से तब तक जब तक कि भारतवर्ष सनातनी हिंदुओं के हाथ में है। हमें इतिहास से शिक्षा लेनी चाहिए कि अब हम सांप्रदायिक आधार पर देश का पुनः विभाजन नहीं होने दें। नोवाखाली जैसे नरसंहारों की पुनरावृत्ति अब हमारे देश में नहीं होनी चाहिए। भारत-पाकिस्तान के विभाजन के समय जिस प्रकार लाखों करोड़ों लोगों को घर से बेघर होना पड़ा था, उस इतिहास को अब दोहराया नहीं जाना चाहिए। भारत में आंतरिक स्थिति ठीक नजर नहीं आती है परंतु विश्व के कई अन्य देशों में सनातन संस्कृति को तेजी से अपनाया जा रहा है, तभी तो कहा जा रहा है कि विश्व में आज कई समस्याओं का हल केवल हिंदू सनातन संस्कृति को अपना कर ही निकाला जा सकता है।

संपादकीय

बढ़ती गर्मी, घटता पानी

गर्मी के कारण हाल बेहाल है। समूचा उत्तर भारत तप रहा है। बुजुर्गों की स्मृति में भी नहीं है कि उन्होंने पहले कभी इतनी प्रचंड गर्मी की लगातार मार सही हो। दिल्ली और एनसीआर जैसे क्षेत्रों से लू के कारण मरने वालों की संख्या में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। और दूसरी तरफ जब देश की राजधानी दिल्ली में पानी के लिए हाहाकार मचा हुआ है तो देश के जलाभाव वाले क्षेत्रों में क्या स्थिति होगी, उसकी कल्पना करना कठिन नहीं है। जो हो रहा है, वह अनायास या अचानक नहीं हो रहा है। दुनिया भर के पर्यावरणविद् और जलवेत्ता वर्षों से इस स्थिति की आशंका के प्रति चेतावनी जारी करते रहे हैं। भारत में भी बदलते

तापमान और तद्जन्य समस्याओं को लेकर लगातार अपनी बातें सामने रखते रहे हैं। पानी के संकट को लेकर और देश भर में भूजल स्तर की डरावनी गिरावट को लेकर भी चेतावनियां जारी होती रही हैं। इसका कारण खोजने के लिए अतिरिक्त अन्वेषण की जरूरत नहीं है। असंतुलित विकास की भेंट चढ़े देश के वन जंगल, निर्ममता से नष्ट किए गए स्थानिक जल स्त्रेत और जल संसाधनों पर तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या के दबाव के कारण यह स्थिति पेश हुई है। देश भर में गांव-देहातों तक जिन छोटी-छोटी नदियों का जाल बिछा हुआ था और जो पोखर तालाब जल के संरक्षण के मुख्य वाहक होते थे, वे अब कहीं दिखाई नहीं देते। मनुष्य के अनियंत्रित लालच और हर स्तर पर व्याप्त भ्रष्टाचार ने स्थितियों को कई गुना जटिल किया है तिस पर राजनीतिक दलों की बेहयाई समस्या की आग में घी डालती रहती है। सबसे ज्यादा मौजूदा उदाहरण इस समय दिल्ली का है। दिल्ली में दिल्लीवासियों की कथित सेवा को समर्पित आम आदमी पार्टी की सरकार है, और केंद्र में देश हित के लिए जीने-मरने का दावा करने वाली भाजपा सरकार है और तमाशा यह है कि दोनों ही पार्टियों के प्रतिनिधि दिल्ली के जल संकट के लिए एक दूसरे पर पूरी बेशर्मी से हल्ला बोल रहे हैं। जब दिल्ली के लोग पानी के लिए त्राहि त्राहि कर रहे हैं उस समय दो जिम्मेदार पार्टियों और उनकी सरकारों के इस रवैये को शर्मनाक ही कहा जा सकता है। कहने में कोई संकोच नहीं कि अगर वास्तविक समस्याओं के प्रति जिम्मेदारी राजनीतिक दलों को रुख इतना गैर-जिम्मेदार है, तो देश और इसकी राजधानी को आने वाले भयानक संकटों से कोई नहीं बचा पाएगा।

चिंतन-मनन

कर्म से बना है वर्ण

मेरे द्वारा चार वर्णों की रचना गुण और कर्मों के हिसाब से की जाती है, फिर भी तू मुझे कभी न खत्म होना वाला और कर्मों के बंधन से मुक्ति ही जान ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार वर्ण हैं, अब ऐसा मान लेते हैं कि जो जिस घर में जन्म लेता है, वह उसी वर्ण का कहलाता है। जबकि वर्ण व्यवस्था गुण और कर्म के आधार पर शुरू हुई थी। पहले जब बच्चे को पढ़ाई के लिए गुरुकुल भेजा जाता था, तब तक वह किसी वर्ण का नहीं कहलाता था। वहां गुरु अपने शिष्यों की रुचि को जानकर उसके हिसाब से उन्हें पढ़ाते थे।

वेदों को पढ़ने में रुचि लेने वालों को ब्राह्मण, युद्ध कला में महारथी को क्षत्रिय, व्यापार में रुचि वाले को वैश्य और सेवा भाव वाले को शूद्र की उपाधि दी जाती थी। इसके बाद वे समाज में उसी के हिसाब से काम करते थे। यही भगवान कह रहे हैं कि मैंने गुणों और कर्मों के आधार पर चार वर्णों की रचना की हैं, जिससे सभी मनुष्य कर्मों में लगे रहें। ये सब करते हुए भी तुम मुझे कभी न खत्म होने वाला और कुछ न करने वाला जानो। सब कुछ करते हुए भी भगवान कह रहे हैं कि मैं कुछ भी नहीं करता।

पुराने कानूनों पर पुनर्विचार करेगी नई संसद

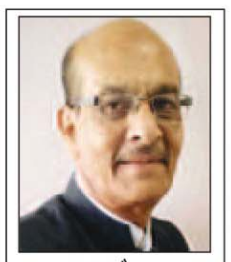

सनत जैन

सन् 2024 में नई संसद का गठन होने जा रहा है। इस बार संसद में भाजपा को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला है। सही मायनों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में जो तीसरी सरकार बनी है वही वास्तविक एनडीए की सरकार है। एनडीए की वर्तमान सरकार में पिछले 10 वर्षों में संसद द्वारा जो कानून पास किए गए हैं उन पर पुनर्विचार किए जाने की संभावनाएं बलवती हो गई हैं।

पिछले 10 सालों में संसद में विपक्ष बहुत कमजोर था। निश्चित संख्या में विपक्षी राजनीतिक पार्टी का बहुमत नहीं होने से विपक्षी दल के नेता का पद भी विपक्ष के पास नहीं था। बहुमत के आधार पर संसद में बिना चर्चा के बिल पास कराने के दर्जनों उदाहरण हैं। संसद में बिल पेस करने के पहले निर्धारित प्रक्रिया का पालन भी नहीं किया गया। आनन-फानन में बहुमत के आधार पर लोकसभा से बिल पारित कर दिए गए, जिसके कारण संविधान में प्रदत्त नागरिकों की समानता और स्वतंत्रता के मौलिक अधिकारों का ध्यान भी नहीं रखा गया। कानून बनाते समय सरकार के पास असीमित अधिकार हों इसको ध्यान में रखते हुए कानून बनाए गए। अब नई संसद गठित होने जा रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के तीसरे कार्यकाल में भारतीय जनता पार्टी के पास सदन में स्पष्ट बहुमत नहीं है। सहयोगी दलों के साथ मिलकर सरकार चलाना पड़ेगी। वहीं इस बार संसद में विपक्ष पहले की तुलना में बहुत मजबूत है और एकजुट है। ऐसी स्थिति में संभावना व्यक्त की जा रही है कि जो भी कानून पिछले 10 वर्षों में पारित किए गए हैं उन पर हर हालत में पुनर्विचार करना इस सरकार की मजबूरी होगी। सभी नागरिकों के लिए न्याय, समानता और स्वतंत्रता संविधान के मौलिक अधिकारों के तहत हो। इसके लिए नागरिकता संशोधन अधिनियम को लेकर भारी विवाद है।

भारतीय दंड संहिता (अपराधिक कानून विधेयक) के कई प्रावधान इस तरह से किए गए हैं जिसका देश में भारी विरोध हो रहा है। मैरिटल रेप राज ध्रुव के नए प्रावधान पुलिस को असीमित अधिकार न्यायपालिका के अधिकारों में कटौती, मोटर व्हीकल एक्ट इत्यादि के कई ऐसे प्रावधान हैं जिनके परिणाम पर चिंता किए बिना इसे लागू किया जाना है। भारतीय दंड संहिता के जो तीन नए कानून हैं यह 1 जुलाई 2024 से लागू होने हैं, जिसके कारण स्पष्ट है कि यह मामला संसद के पहले सत्र में ही पुनर्विचार की मांग को लेकर विपक्ष अपना दबाव बनाएगा। मुख्य चुनाव आयुक्त एवं अन्य चुनाव आयुक्त अधिनियम 2023 में हंगामे के बीच पारित किया गया। इसमें सुप्रीम कोर्ट ने जो दिशा निर्देश दिए थे, उनका पालन नहीं किया गया। जिसका असर 2024 के लोकसभा चुनाव में स्पष्ट रूप से देखने को मिला है। ऐसी स्थिति में इस कानून में भी संशोधन को लेकर विपक्ष दबाव बनाएगा। केंद्र सरकार और राज्यों के बीच खदान एवं खनिज अधिनियम को लेकर भी पिछले कई वर्षों से विवाद चल रहा है। इस मामले की सुनवाई सुप्रीम कोर्ट में संवैधानिक पीठ कर रही है। इस नवीन कानून के द्वारा केंद्र ने अपनी शक्तियों को काफी बढ़ा लिया है और राज्यों की शक्तियों को कम कर दिया है। ऐसी स्थिति में इस पर भी भारी दबाव सरकार पर पड़ना तय माना जा रहा है। इसी तरह ट्रासजेंडर व्यक्ति अधिनियम 2019 के प्रावधान भी भेदभाव पूर्ण होने के कारण इस पर भी विपक्ष द्वारा पुनर्विचार करने की और संशोधन करने की मांग इसी संसद सत्र में की जा सकती है। अपने तीसरे कार्यकाल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार को कई मामलों में अग्नि परीक्षा से गुजरना पड़ेगा वहीं पिछले 10 सालों में ईडी, सीबीआई और आयकर एवं अन्य जांच एजेंसी के माध्यम से विपक्ष को समाप्त करने की कोशिश की गई है, उसको लेकर भी विपक्ष एकजुट हुआ है। एकजुट विपक्ष से लड़ना सरकार के लिए आसान नहीं होगा। पिछले 10 सालों में सरकार ने विपक्ष के लिए जो गड्ढे खोदे थे विशेष रूप से भ्रष्टाचार के मामलों में विपक्ष को जेल के सीखचों तक पहुंचाया गया था। विपक्ष को चुनाव लड़ने से रोकने की कोशिश की गई थी। आर्थिक एवं आपराधिक मामलों में दोषी बनाकर विपक्ष को खत्म करने के लिए जो हथकंडे अपनाए गए थे, विपक्ष अब उन्हीं हथकंडों को सरकार के खिलाफ इस्तेमाल करने के लिए एकजुट हुआ है। निश्चित रूप से नई संसद में पुराने कानून पर विचार होगा। उसमें सरकार को संशोधन भी करने होंगे। कई याचिकाएं इन सारे मामलों की सुप्रीम कोर्ट में लगी हुई हैं। निश्चित रूप से जब संसद में दबाव बढ़ेगा तो सुप्रीम कोर्ट में लंबित याचिकाओं पर सुनवाई होगी और फैसला आएगा। इन सारी स्थितियों को देखते हुए नई संसद का पहला सत्र काफी महत्वपूर्ण होने जा रहा है।

इसमें सरकार को बजट भी पेश करना है। जुलाई के पहले बजट को पास कराना है। सरकार ने मनी बिल के रूप में बहुत सारे बिल पास कराकर सांसदों और संसद के अधिकार भी सरकार के नियंत्रण में आ जाने से सांसदों और संसद के अधिकार पहले की तुलना में बहुत कम हो गए हैं। अब विपक्ष के मजबूत हो जाने के कारण निश्चित रूप से आशा की जा सकती है कि बहुमत के आधार पर जो बिल और कानून पास कराए जा रहे थे उनके स्थान पर अब विवेक पूर्वक पक्ष और विपक्ष विभिन्न मसलों पर चर्चा करने के बाद ही आम सहमति से कानूनो के संशोधन पर पुनर्विचार करेगी। विपक्ष जिस तरह से एकजुट है, जिस आक्रामक ढंग से वह अपनी बात सदन के बाहर रख पा रहा है, उससे ज्यादा प्रभावी और आक्रामक ढंग से संसद के अंदर वह अपनी बात रखेगा। इस तरह की आशा की जा रही है।

ग्रीष्म लहरों से मौत को रोकने के लिये कार्ययोजना

भारत लगातार जारी ग्रीष्म लहरों के चपेट में है। मई- जून 2024 में उत्तर-पश्चिम और मध्य भारत में तापमान पिछले 124 वर्षों में सर्वाधिक उच्च स्तर लगभग 50 डिग्री सेल्सियस पर दर्ज किया गया। ग्रीष्म लहर भारत के लिये कोई नई परिघटना नहीं है, लेकिन इस वर्ष उल्लेखनीय यह है कि उसका समयपूर्व आगमन हुआ है और देश के उत्तर-पश्चिमी सेदक्षिण-पूर्वी हिस्सों तक उसका व्यापक स्थानिक प्रसार रहा है। यह उपयुक्त समय है कि देश को ग्रीष्म लहरों और संबद्ध चरम मौसमी घटनाओं से निपटने के लिये ठोस योजनाओं का निर्माण करना चाहिये। ग्रीष्म लहरों के जानलेवा प्रभावों को कम करने के लिये पूर्व-चेतावनी प्रणाली, हीट-प्रूफ शेल्टर और व्यापक रूप से वृक्षारोपण महत्त्वपूर्ण है। ग्रीष्म लहर असामान्य रूप से उच्च तापमान की अवधि है जो भारत के उत्तर-पश्चिमी और दक्षिण-मध्य भागों में ग्रीष्मकाल के दौरान उत्पन्न होती है। यह वायु के तापमान की वह स्थिति है जिसके संपर्क में आना मानव शरीर के लिये घातक हो जाता है। भारत मौसम विज्ञान विभाग उस स्थिति को ग्रीष्म लहर के रूप में वगीकृत करता है जब मैदानी इलाकों में तापमान कम से कम 40.सी (और पहाड़ी क्षेत्रों में कम से कम 30.सी) तक पहुँच जाए और यह सामान्य तापमान से कम से कम 5-6.सी की वृद्धि को इंगित करता हो। भीषण गर्मी का आसन्न कारण वर्षा-युक्त पश्चिमी विक्षोभ या उष्णकटिबंधीय तूफान की अनुपस्थिति है जो उत्तर भारत में भूमध्यसागर से वर्षा लाते हैं।भारत में पहले से ही गर्म शहरों में ग्लोबल वार्मिंग और जनसंख्या वृद्धि का संयोजन बढ़ते हुए 'हीट एक्सपोजर' का प्राथमिक चालक है। 'अर्बन हीट आइलैंड' शहरों के भीतर भी तापमान की वृद्धि करता है,जिसकी त्वरा ग्रीष्म लहरों के दौरान और बढ़ जाती है। यह स्थिति तब बनती है जब जब शहर प्राकृतिक भूमि आवरण को फुटपाथ, इमारतों और अन्य ठोस सतहों के घने सांद्रता से प्रतिस्थापित कर देते हैं जो गर्मी को अवशोषित करते हैं और देर तक बनाए रखते हैं। मई-जून के माह में भारत में ग्रीष्म लहरों की उपस्थिति एक सामान्य घटना है, लेकिन देश के कई हिस्सों में धीरे-धीरे बढ़ते अधिकतम तापमान के कारण वर्ष 2024 में ग्रीष्म लहरों की समय-पूर्व उत्पत्ति की स्थिति बनी। भारत मौसम विज्ञान विभागके अनुसार भारत में ग्रीष्म लहर दिवसों की संख्या वर्ष 1981-1990 के 413 से बढ़कर वर्ष 2011-2020 में 600 हो गई है। ग्रीष्म लहर दिवसों की संख्या में यह तेज वृद्धि जलवायु परिवर्तन के बढ़ते प्रभाव के कारण घटित हुई है। ग्रीष्म लहरों के कारण जान गँवाने वाले लोगों की संख्या भी वर्ष 1981-1990 में 5,457 से बढ़कर वर्ष 2011-2020 में 11,555 हो गई है। वर्ष 1967 से अब तक पूरे भारत में ग्रीष्म लहरों के कारण 39,815 लोगों की मौत हो चुकी है। भू-जलवायु और सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों के कारण सबसे अधिक मौतें उत्तर प्रदेश (6,745) में हुई हैं; इसके बाद आंध्र प्रदेश (5,088), बिहार (3,364), महाराष्ट्र (2,974), पंजाब (2,720), मध्य प्रदेश (2,607), पश्चिम बंगाल (2,570), ओडिशा (2,406), गुजरात (2,049), राजस्थान (1,951), तमिलनाडु (1,443), हरियाणा (1,116), तेलंगाना (1,067), दिल्ली (996), झारखंड (855), कर्नाटक (560), असम (348) आदि राज्यों का स्थान है, जबकि शेष 12 राज्यों में 954 लोग मौत के शिकार हुए।महाराष्ट्र स्वास्थ्य विभाग के अनुसार इस साल भीषण गर्मी ने राज्य में 25 लोगों की जान ले ली है। ये ग्रीष्म लहरें बहुत अधिक हानिकारक हैं। इसके मुख्य प्रभाव निम्नलिखित हैं -1.मानव मृत्यु दरः बढ़ते तापमान, जन जागरूकता कार्यक्रमों की कमी और अपर्याप्त दीर्घकालिक शमन उपायों के कारण ग्रीष्म लहरों से मृत्यु की स्थिति बनती है।टाटा सेंटर फॉर डेवलपमेंट और शिकागो विश्वविद्यालय की वर्ष 2019 की एक रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2100 तक जलवायु परिवर्तन से प्रेरित अत्यधिक ताप के कारण सालाना5 मिलियन से अधिक लोगों के मरने की संभावना होगी।बढ़ी हुई गर्मी से मधुमेह और परिसंचरण एवं श्वसन संबंधी रोगों के साथ ही मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं में वृद्धि होगी। 2.अर्थव्यवस्था पर प्रभावः ग्रीष्म लहरों की लगातार घटनाएँ अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं। उदाहरण के लिये, कार्य दिवसों के नुकसान के कारण गरीब और सीमांत किसानों की आजीविका नकारात्मक रूप से प्रभावित होती है। ग्रीष्म लहरों का इन श्रमिकों की उत्पादकता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, जिससे अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है।वर्ष 2019 की ILO रिपोर्ट के अनुसार भारत ने वर्ष 1995 में 'हीट स्ट्रेस' के कारण लगभग3% कार्य घंटे गंवाए थे और वर्ष 2030 में इससे 5.8% कार्य घंटे गंवा देने की संभावना है।रिपोर्ट में बताया गया है कि वर्ष 2030 में हीट स्ट्रेस के कारण कृषि और निर्माण क्षेत्र दोनों में से प्रत्येक में 4% कार्य घंटों का नुकसान हो सकता है। 3.फसल की क्षति और खाद्य असुरक्षाः अत्यधिक गर्मी और सूखे की घटनाओं से फसल उत्पादन का नुकसान हो रहा है और वृक्ष सूख रहे हैं।चरम गर्मी से प्रेरित श्रम उत्पादकता हानि से खाद्य उत्पादन को अचानक लगने वाले झटके से स्वास्थ्य एवं खाद्य उत्पादन के लिये जोखिम और अधिक गंभीर हो जाएँगे।ये परस्पर प्रभाव खाद्य कीमतों में वृद्धि करेंगे, घरेलू आय को कम कर देंगे और विशेष रूप से उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में कुपोषण और जलवायु संबंधी मौतों को बढ़ावा देंगे। 4.श्रमिकों पर प्रभावः वर्ष 2030 में कृषि और निर्माण जैसे क्षेत्रों से संलग्न श्रमिक गंभीर रूप से प्रभावित होंगे क्योंकि भारत की एक बड़ी आबादी अपनी आजीविका के लिये इन क्षेत्रों पर निर्भर है।भारत के लिये इस पर विचार करना भी उचित होगा कि अनिश्चित श्रम बाजार स्थिति वाले देशों और क्षेत्रों को इस तरह की चरम गर्मी के साथ उच्च उत्पादकता हानियों का सामना करना पड़ सकता है।समग्र रूप से भारत में हीट स्ट्रेस के कारण वर्ष 2030 में लगभग 34 मिलियन पूर्णकालिक नौकरियों का नुकसान हो सकता है। 5.कमजोर वर्गों पर विशेष प्रभावः जलवायु विज्ञान समुदाय ने वृहत साक्ष्यों के साथ दावा किया है कि ग्रीनहाउस गैसों और एरोसोल के उत्सर्जन में वैश्विक स्तर पर उल्लेखनीय कटौती नहीं की जाएगी तो ग्रीष्म लहर जैसी चरम घटनाओं के भविष्य में और अधिक तीव्र, आवर्ती और दीर्घावधिक होने की ही संभावना है।यह याद रखना महत्त्वपूर्ण है कि भारत में ग्रीष्म लहर की घटनाओं में हजारों कमजोर और गरीब लोगों को प्रभावित करने की क्षमता है, जबकि जलवायु संकट में उन्होंने सबसे कम योगदान किया है।ग्रीष्म लहर प्रभाव शमन रणनीति के मामले में भारत की स्थितिऐसी आपदाओं से निपटने के लिये वर्ष 2015 से पहले कोई राष्ट्रस्तरीय 'हीटवेव एक्शन प्लान" मौजूद नहीं था।क्षेत्रीय स्तर पर अहमदाबाद नगर निगम ने वर्ष 2010 में विनाशकारी ग्रीष्म लहरों से हुई मौतों के बाद वर्ष 2013 में पहला हीट एक्शन प्लान तैयार किया था।वर्ष 2016 में राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने ग्रीष्म लहरों के प्रभाव को कम करने हेतु राष्ट्रीय स्तर की प्रमुख रणनीति तैयार करने के लिये व्यापक दिशानिर्देश जारी किये थे। हालाँकि चरम मौसम संबंधी आघातों के शमन और उनके प्रति अनुकूलन के लिये कुछ निवारक उपाय किये गए हैं, लेकिन इस तरह की पहलें ग्रीष्म लहरों से लोगों की मौतों को रोकने के लिये अपर्याप्त ही साबित हुई हैं क्योंकि निवारक उपायों, शमन और तैयारी कार्यों को लागू करना जटिल बना हुआ है।

- संजय गोस्वामी

मालिक , प्रकाशक और मुद्रक, सरवर जमाल ने आर० डी० प्रिंटस एण्ड पब्लीशर प्रा०लि० प्लाट नं०- 16-17 पाटलिपुत्रा इन्ड्रस्टीयल एरिया रोड नं०-9 पटना - 800013 से छपवाकर कार्यालय 203 बी ब्लाक रंजित रेसीडेन्सीज, साकेत पूरी, मछली गली, राजा बजार पटना पिन- 800014 से प्रकाशित किया। सम्पादकः शबाना प्रविन * पी.आर.बी.एक्ट के तहत खबरों के लिए जिम्मेवार। **PRGI NO - BIHHIN/2023/86924**,E-mail:newsindogulf 730@gmail.com Mob--9472871824/8544031786 मैनेजिंग एडिटर : डा0 राजिव कुमार, सब एडिटर : डा0 नुतन कुमारी

भारत के सबसे वैल्यूएबल

सेलिब्रिटीज की लिस्ट में शामिल हुईं आलिया, दीपिका और कियारा

वित्तीय और जोखिम सलाहकार फर्म क्रॉल की एक नई रिपोर्ट में भारत की सबसे मूल्यवान हस्तियों की शीर्ष रैंक में बदलाव का खुलासा हुआ है। आलिया भट्ट, दीपिका पादुकोण और कियारा आडवाणी भारत की सबसे मूल्यवान हस्तियों की सूची 2023 में अपनी जगह बनाने वाली शीर्ष तीन अभिनेत्रियाँ बन गई हैं।

सेलिब्रिटी ब्रांड वैल्यूएशन रिपोर्ट 2023- ब्रांड, व्यवसाय, बॉलीवुड शीर्षक वाली रिपोर्ट में आलिया भट्ट को .101.1 मिलियन के ब्रांड मूल्य के साथ पांचवें स्थान पर और दीपिका पादुकोण को 96 मिलियन के साथ छठे स्थान पर दिखाया गया है।

दोनों अभिनेत्रियों की 2022 की रैंकिंग में मामूली गिरावट देखी गई। हालांकि, सबसे बड़ी कहानी यह है कि कियारा आडवाणी, जो 2022 में 16वें स्थान पर थीं, 2023 में 60 मिलियन के ब्रांड मूल्य के साथ 12वें स्थान पर पहुँच गईं। यह प्रभावशाली वृद्धि भारतीय बाजार में उनके बढ़ते प्रभाव को उजागर करती है। रिपोर्ट में सेलिब्रिटी एंडोर्समेंट ट्रेंड्स पर भी चर्चा की गई है। इसमें पाया गया कि पिछले साल शीर्ष 25 हस्तियों ने विभिन्न क्षेत्रों में 300 से अधिक ब्रांडों का समर्थन किया, जिसमें टीवी और डिजिटल दोनों तरह के विज्ञापनों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

इससे पता चलता है कि उपभोक्ता विकल्पों को आकार देने में मशहूर हस्तियों की भूमिका बढ़ रही है। कुल मिलाकर, क्रॉल रिपोर्ट एक गतिशील भारतीय सेलिब्रिटी परिदृश्य की तस्वीर पेश करती है.

कास्टिंग काउच लेकर ईशा का छलका दर्द बोलीं-

एक बड़े स्टार ने कहा था बात मान लो या हार मान लो

ईशा कोप्पिकर कास्टिंग काउच के बारे में बातें करते हुए कहती हैं, कई बार निर्माता-निर्देशक मिलने के लिए बुलाते थे और गलत तरीके से न सिर्फ छूते थे बल्कि हाथों को दबा कर कहते थे हीरो से दोस्ती करनी पड़ेगी।

बॉलीवुड की मशहूर अभिनेत्री ईशा कोप्पिकर इन दिनों सुर्खियों में बनी हुई हैं। ईशा कोप्पिकर ने बॉलीवुड में डेब्यू फिजा फिल्म से किया था। उन्होंने हिंदी फिल्मों के अलावा कई साउथ की फिल्मों में भी काम किया है। हाल ही में अभिनेत्री ने कास्टिंग काउच को लेकर एक सनसनीखेज खुलासा किया है। उन्होंने बॉलीवुड के काले सच को एक बार फिर से दुनिया के सामने रखा है।

टाइपकास्ट का शिकार हुई ईशा

ईशा कोप्पिकर आज भी अपने बोल्ड आइटम नंबर के लिए याद की जाती हैं। उनके चाहने वालों को आज भी इश्क समुंदर और खल्लास जैसे गाने याद हैं। हाल ही एक इंटरव्यू के दौरान जब ईशा से जब पूछा गया कि क्या उन्हें टाइपकास्ट कर दिया गया था। इस सवाल के जवाब में अभिनेत्री कहती हैं, सच कहूं तो ऐसा कभी नहीं होता था कि निर्देशक आप से पूछते हों कि आप क्या कर सकते हैं और क्या नहीं। अभिनेत्रियां क्या करेंगी ये अक्सर अभिनेता तय करते थे।

बात मान लो या हार मान लो

ईशा कोप्पिकर ने आगे कहा, आपने मी टू के बारे में सुना है न उसमें सच्चाई है। अगर आपके पास संस्कार हैं तो बॉलीवुड में टिकना मुश्किल है। कई लड़कियों ने तो कास्टिंग काउच के डर से इंडस्ट्री छोड़ दी। लड़कियों से कहा जाता था या तो बात मान लो या हार मान लो। ऐसे बहुत कम लोग हैं जो अभी भी इंडस्ट्री में हैं और उन्होंने हार नहीं मानी है और मैं उनमें से एक हूं।

निर्देशक गलत तरह से छूते थे

ईशा कोप्पिकर कास्टिंग काउच के बारे में बातें करते हुए कहती हैं, कई बार निर्माता-निर्देशक मिलने के लिए बुलाते थे और गलत तरीके से न सिर्फ छूते थे बल्कि हाथों को दबा कर कहते थे हीरो से दोस्ती करनी पड़ेगी। इतना ही नहीं एक बार एक बड़े हीरो ने मुझसे कहा था कि अकेले मिलने आना।

यहां तक कि अपने ड्राइवर को भी साथ नहीं लाना क्योंकि उस समय उनका नाम एक अन्य अभिनेत्री से जुड़ा था। उन्होंने मुझसे कहा कि अगर बॉलीवुड में टिक कर रहना चाहती हो तो मिलनसार बनकर रहना ही पड़ेगा।

जेनिफर और श्रद्धा से तलाक पर करण सिंह ग्रोवर ने पहली बार तोड़ी चुप्पी

जो हुआ, अच्छे के लिए ही हुआ

करण सिंह ग्रोवर ने पहली बार अपनी दो टूटी शादियों और दो बार तलाक पर चुप्पी तोड़ी। करण सिंह ग्रोवर ने कहा कि मूव ऑन करने के बाद लगता है कि जो हुआ अच्छा ही हुआ। करण ने बिपाशा बसु से शादी की और उनकी एक बेटी है, जिसका नाम देवी है। एक्टर करण सिंह ग्रोवर आज बिपाशा बसु के साथ हैप्पी मेरिड लाइफ जी रहे हैं और एक बेटी के पिता भी बन चुके हैं। लेकिन बिपाशा से पहले उनकी दो बार शादी हो चुकी थी और दोनों बार ही तलाक हो गया। पहली शादी श्रद्धा निगम से और दूसरी बार उन्होंने एक्ट्रेस जेनिफर विंगेट के साथ शादी की। करण सिंह ग्रोवर ने हाल ही एक इंटरव्यू में दोनों टूटी शादियों और तलाक पर बात की। उन्होंने कहा कि यह अच्छे के लिए ही हुआ। करण की पहली शादी साल 2008 में एक्ट्रेस श्रद्धा निगम से हुई थी, लेकिन 10 महीने बाद ही उन्होंने तलाक की अर्जी दे दी। फिर 9 अप्रैल 2012 को करण ने Jennifer Winget से शादी कर ली। शादी से पहले उन्होंने कुछ समय तक एक-दूसरे को डेट किया था। पर यह शादी सिर्फ दो साल ही चली और 2014 में उनका तलाक हो गया। इसके बाद करण सिंह ग्रोवर ने एक्ट्रेस बिपाशा बसु के साथ 2016 में शादी की और खुशहाल जिंदगी बिता रहे हैं।

अनोखा बंधन के किरदार के लिए अपनी मां और सास से ली प्रेरणा : रिंकू घोष

भोजपुरी एक्ट्रेस रिंकू घोष टीवी सीरियल अनोखा बंधन में साधना का किरदार निभा रही हैं। एक्ट्रेस ने बताया कि उन्होंने इस किरदार को निभाने के लिए अपनी मां और सास से प्रेरणा ली। शो की कहानी सास और बहू के बीच के रिश्ते पर आधारित है। शो और अपने किरदार के बारे में बात करते हुए, रिंकू ने कहा साधना एक बहुत ही प्यारी और देखभाल करने वाली मां है, जिसके कई शेड्स हैं।

जब बात अपने बेटे वरदान की आती है, तो वह बहुत ही इमोशनल हो जाती है, लेकिन जब बात अपनी बहू की आती है, तो वह मजबूत और सपोर्टिव है। उन्होंने कहा, शो की खासियत है कि यह सास और बहू के बीच के अनोखे रिश्ते पर आधारित है। वे एक-दूसरे की ताकत और सबसे अच्छी दोस्त हैं। दोनों के बीच एक खूबसूरत रिश्ता है। एक्ट्रेस ने आगे कहा, असल जिंदगी में भी मैं बहुत खुशकिस्मत रही कि मुझे बहुत ही सपोर्टिव सास मिली। आप कह सकते हैं कि साधना का किरदार निभाने के लिए मैंने अपनी दोनों मां, मेरी बायोलॉजिकल मां और मेरी सास से प्रेरणा ली।

सेट पर नखरे दिखाते हैं सेलेब्रिटीज रखते हैं 5-5 वैनिटी वैन: नवाज

एक तरफ जहां महंगी बजट वाली फिल्में बॉक्स ऑफिस पर धमाल मचाने में नाकाम हो रही हैं और बॉलीवुड में मंदी का दौर चल रहा है। ऐसे में प्रोडक्शन में बढ़ती लागत और कलाकारों की भरमार पर बॉलीवुड के सबसे बेहतरीन एक्टर्स में से एक नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने बोला है।

हाल ही में दिए अपने एक साक्षात्कार में उन्होंने कहा, यह आज से नहीं बहुत पहले से चल रहा है। आगे उन्होंने कहा कि कुछ ऐसे भी सेलेब्रिटीज हैं जो सेट पर नखरे दिखाते हैं, कुछ तो ऐसे हैं जिनके पास 5 वैनिटी वैन है-खाने के लिए अलग, जिम जाने के लिए अलग और भी अलग-अलग कामों के लिए भी। ये पागलपन है भला कौन 5 वैनिटी वैन रखता है। दमदार अभिनय की बदौलत अपनी छवि बनाने वाले एक्टर ने कहा कि प्रोडक्शन के लिए भला कोई अभिनेता की फीस क्यों बढ़नी चाहिए, यह सरासर गलत है। इसके बजाय फिल्मों में पैसा लगाना चाहिए जो एक समझदारी भरा फैसला होगा। नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने मजाक भरे लहजे में कहा कि इन नवाबों के जितने शौक हैं उतने तो फिल्मी नवाबों के भी नहीं होंगे। अभिनेता ने कहा कि उनकी कोई ऐसी डिमांड नहीं है। वो कहते हैं मेरा मकसद सिर्फ अपने काम को सही तरीके से करना है और मैं कुछ नहीं चाहता, प्रोडक्शन के समय से पहले मैं खड़ा होता हूं शूट के लिए। नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने सिनेमा की दुनिया में अपने 25 साल पूरे कर लिए हैं। उन्होंने अपने कैरियर की शुरूआत 1999 में फिल्म सरफरोश से की थी। एक्टर ने अपनी जर्नी के बारे में कहा कि यह उनके लिए रोमांच भरा सफर रहा जो मैंने सोचा था ऊपर वाले ने मुझे उससे भी ज्यादा दिया, मैं सभी डायरेक्टर का धन्यवाद देना चाहूंगा जिन्होंने मुझे काम करने का मौका दिया। नए फिल्ममेकर्स के बारे में बोलते हुए नवाज ने कहा कि मुझे जानकर बहुत खुशी होती है कि नए नए लोग इंडस्ट्री में नई-नई कहानियों को लेकर आ रहे हैं इससे सिनेमा को नया मुकाम मिलेगा।

हमेशा के लिए बंद होगा प्रियंका का

पूर्व रेस्तरां सोना

प्रियंका चोपड़ा के न्यूयॉर्क सिटी रेस्तरां सोना ने मार्च 2021 में कोविड-19 प्रतिबंधों के बीच अपनी शुरुआत की। इस रेस्तरां की जल्द ही सोशल मीडिया पर अच्छी खासी लोकप्रियता हो गई। हालांकि, प्रियंका ने अगस्त 2023 में घोषणा की थी कि वे सोना से अलग हो रही हैं, जिसकी उन्होंने मनीष गोयल के साथ सह-स्थापना की थी। अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर यह खबर साझा करते हुए रेस्तरां ने घोषणा की है कि तीन साल की यात्रा के बाद यह जल्द ही बंद हो जाएगा। रेस्तरां से बयान जारी कर कहा, तीन से ज्यादा उल्लेखनीय वर्षों के बाद सोना बंद होने जा रहा है। हम उन सभी लोगों के बेहद आभारी हैं जो हमारे दरवाजे से गुजरे। आपकी सेवा करना हमारे लिए सबसे बड़ा सम्मान रहा है। रेस्तरां ने हर दिन स्वादिष्ट भोजन, मुस्कान और गर्मजोशी प्रदान करने के लिए अपनी समर्पित टीम को धन्यवाद दिया। पोस्ट के अनुसार, सोना की अंतिम सेवा रविवार, 30 जून को ब्रंच होगी। सोना ने कहा, हमें उम्मीद है कि हम आपको भोजन या पेय के लिए आखिरी बार देखेंगे। हमारे दरवाजे और दिल खुले हैं। यह रेस्तरां कम समय में ही दिग्गज हस्तियों के लिए पसंदीदा जगह बन गया था। पोस्ट पर प्रतिक्रिया देते हुए कई सोना प्रेमियों ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा कि हम आपको याद करेंगे।

रिमी के साथ हुई धोखाधड़ी

स्टार्स के साथ धोखाधड़ी के मामले अक्सर सामने आते रहते हैं। अब हाल ही में इसमें अजय देवगन की कॉमेडी फिल्म गोलमान-फन अनलिमिटेड में काम कर चुकी एक्ट्रेस रिमी सेन का जुड़ा है। खबर है कि रिमी के एक दोस्त ने उनके साथ करोड़ों रूपयों की ठगी की है, जिसे लेकर एक्ट्रेस ने पुलिस में शिकायत भी दर्ज कराई है। एक्ट्रेस ने बताया, रिमी ने अपने साथ हुई धोखाधड़ी को लेकर पुलिस में 2 साल बाद शिकायत दर्ज कराई है।

साल 2022 में मेरे दोस्त रौनक व्यास ने एक एलईडी लाइट की कंपनी में निवेश करने को लेकर 20 लाख रूपये मांगे। मैंने उसमें 60 दिन के हिसाब से 12 प्रतिशित के इंटरेस्ट रेट पर इन्वेस्ट किया था और उसे बता दिया था कि 60 दिन बाद ये ब्याज दर 16 परसेंट हो जाएगी। उसने मेरा फोन उठाना बंद कर दिया। तय समय और इंटरेस्ट रेट के अनुसार मेरे साथ 4.14 करोड़ का धोखा हुआ है। एक्ट्रेस ने ये भी बताया है कि उन्हें इस केस को फाइल करने में देरी इस वजह से हुई है क्योंकि उनकी एफआईआर फाइल खार पुलिस स्टेशन के स्थांनतरण के कारण गुम हो गई थी, जिसके चलते उन्हें नए सिरे रिपोर्ट दर्ज करानी पड़ी।

दोस्त ने ठगे करोड़ों

लिवइन में रहने पर सोनाक्षी ने किया रिएक्ट, लोगों की सोच पर कहा...

सोनाक्षी सिन्हा इन दिनों काफी खबरों में हैं। रिपोर्ट्स हैं कि वो 23 जून को जहीर इकबाल संग शादी करने जा रही हैं। इसी के साथ ये भी खबरें थीं सोनाक्षी पहले ही अपने पापा के घर रामायण से मूव आउट कर चुकी हैं और वो जहीर संग लिवइन में रह रही हैं।

अब एक्ट्रेस ने इन खबरों पर रिएक्ट किया है। सोनाक्षी सिन्हा ने इन खबरों को नकार दिया है। जब उनसे पूछा गया कि अब तो आप अपने घर में रह रही हैं, तो उन्होंने तुरंत पूछा कि आपसे किसने कहा कि मैं अब रामायण में नहीं रहती? तो होस्ट ने कहा कि मैंने सोचा कि आप अब खुद के घर में रहती हैं। तो इस पर सोनाक्षी ने कहा- आपने सोचा। यही होता है जब लोग खुद से सोचते हैं। मैं अभी भी अपने पेरेंट्स के साथ रहती हूं। हां, मैंने अपना घर खरीदा है। मैं वहां अपनी वर्क मीटिंग्स करती हूं। वहां मैं शूट करती हूं। वहां अपने ईवेंट्स के लिए तैयार होती हूं और जब मैं अपना सारा काम खत्म कर लेती हूं तो मैं वापस घर जाती हूं और सो जाती हूं। कुछ समय पहले ऐसी खबरें थीं कि सोनाक्षी और जहीर 2 साल से एक-दूसरे के साथ हैं।

कुछ समय पहले ही दोनों ने शादी का फैसला लिया और कपल कुछ समय पहले ही साथ रहने लगा। अब दोनों शादी करने वाले हैं। दोनों की शादी प्राइवेट होगी, सिर्फ क्लोज फ्रेंड्स और घरवाले होंगे। सोनाक्षी शादी से पहले इससे जुड़ी डिटेल्स शेयर नहीं करना चाहती और इसे क्लोज सर्कल में रखना चाहती हैं। मालूम हो कि रिपोर्ट्स हैं कि जहीर और सोनाक्षी 23 जून को रजिस्टर मैरिज करेंगे। फिर रात को रिसेप्शन पार्टी होगी। इससे पहले 22 जून को उनके घर पर फंक्शन होगा।

संक्षिप्त समाचार

यूरो कप

स्थानापन्न खिलाड़ी जोविच ने सर्बिया को हार से बचाया, इंजरी समय में दागा गोल, मैच ड्रॉ पर समाप्त

म्यूनिख, एजेंसी। अपने पहले मैच में डेनमार्क से ड्रॉ खेलने वाली स्लोवेनिया की टीम अपना अंतिम ग्रुप मैच मंगलवार को इंग्लैंड के खिलाफ खेलेगी, जबकि इसी दिन सर्बिया की भिड़ंत डेनमार्क से होगी। स्थानापन्न खिलाड़ी लुका जोविच के इंजरी टाइम में दागे गोल की बदौलत सर्बिया ने यूरोपीय फुटबॉल चैंपियनशिप (यूरो 2024) में गुरुवार को स्लोवेनिया को 1-1 से बराबरी पर रोका दिया। इसके साथ ही स्लोवेनिया की टीम यूरोपीय चैंपियनशिप में पहली जीत दर्ज करने से भी महरूम रह गई। सर्बिया को अपने पहले मैच में इंग्लैंड के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा था। जेन कार्निकनिक ने 69वें मिनट में स्लोवेनिया को बढ़त दिलाई और ऐसा लग रहा था कि टीम ऐतिहासिक जीत दर्ज करने में सफल रहेगी लेकिन जोविच ने इंजरी टाइम में गोल दागकर स्कोर 1-1 कर दिया। जोविच के गोल से सर्बिया के दर्शक खुशी से झूम उठे लेकिन उन्होंने मैदान पर चीजें भी फेंकनी शुरू कर दी। गोल होने के बाद खेल शुरू होते ही रेफरी ने मैच खत्म होने का इशारा करने वाली सीटी बजा दी जिसके बाद स्लोवेनिया के खिलाड़ियों के चेहरों पर निराशा साफ देखी जा सकती थी। अपने पहले मैच में डेनमार्क से ड्रॉ खेलने वाली स्लोवेनिया की टीम अपना अंतिम ग्रुप मैच मंगलवार को इंग्लैंड के खिलाफ खेलेगी, जबकि इसी दिन सर्बिया की भिड़ंत डेनमार्क से होगी।

भारत के अर्जुन बने स्तेपान अवज्ञान मेमोरियल ग्रांड मास्टर शतरंज के विजेता

जेरमुक ,अर्मेनिया, एजेंसी। भारत के नंबर एक शतरंज खिलाड़ी और दुनिया के नंबर चार शतरंज खिलाड़ी अर्जुन एरीगैसी नें अर्मेनिया में सम्पन्न हुए स्तेपान अवज्ञान मेमोरियल ग्रांड मास्टर शतरंज टूर्नामेंट का खिताब अपने नाम कर लिया है, अर्जुन नें वैसे तो एक राउंड पहले ही खिताब जीतना सुनिश्चित कर लिया था पर औपचारिक तौर पर अर्जुन नें अंतिम राउंड में मेजबान अर्मेनिया के पेट्रोसियन मेनुएल से ड्रॉ खेलते हुए कुल 6.5 अंक बनाकर पहला स्थान हासिल किया , बड़ी बात यह रही ही दूसरे स्थान पर रहे तीनों खिलाड़ी सेवियन सैमुएल , अमीन तबातबाई और बोगदान डेनियल 5 अंक बनाकर अर्जुन से 1.5 अंक पीछे रहे । अर्जुन नें इस टूर्नामेंट के समापन के साथ ही अपनी लाइव रेटिंग को 2778 पर पहुंचा दिया है और अगर अब अर्जुन इस माह कोई और टूर्नामेंट नहीं खेलते है तो 1 जुलाई को वह दुनिया के नंबर चार खिलाड़ी अधिकृत तौर पर बन जाएँगे और विश्वनाथन आनंद के बाद यह रेटिंग अंक हासिल करने वाले दूसरे खिलाड़ी बन जाएँगे ।

इससे पहले स्तेपान अवज्ञान मेमोरियल ग्रांड मास्टर शतरंज के आठवें राउंड में रूस के ग्रांड मास्टर मुरजिन वोलोदर को पराजित करते हुए एक राउंड पहले ही खिताब जीतना तय कर लिया था । अर्जुन नें आज सफ़ेद मोहरो से राय लोपेज ओपनिंग में शानदार एंडगेम दिखाया और मुरजिन को 63 चालों तक चले मुक़ाबले में पराजित किया ।

टी-20 वर्ल्डकप : इंडिया वर्सेस अफगानिस्तान

7 रन देकर झटके 3 विकेट फिर भी बुमराह के साथ हुआ अन्याय?

बारबाडोस, एजेंसी। रोहित शर्मा की कप्तानी वाली भारतीय क्रिकेट टीम अब भी टी20 वर्ल्ड कप 2024 में एक भी मैच नहीं हारी है। भारत का अभियान ठीक पिछले साल हुए वनडे वर्ल्ड कप की तरह चल रहा है। टीम इंडिया ने 20 जून की रात को सुपर 8 के पहले मुकाबले में अफगानिस्तान को 47 रन से हराया।

भारत की इस जीत में अनुभवी तेज तर्रार गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने अहम भूमिका निभाई। जस्सी की धारदार गेंदबाजी ने एक बार फिर विरोधियों की लंका लगा दी। लेकिन इतनी शानदार गेंदबाजी करने के बाद भी जस्सी के साथ अन्याय हुआ?

जसप्रीत बुमराह ने अपने 4 ओवर के स्पेल में 1.75 की इकॉनमी से गेंदबाजी करते हुए महज 7 रन दिए और 3 विकेट झटके। इसके अलावा उन्होंने एक ओवर मेडिन भी डाला। जस्सी ने रहमानुल्लाह गुरबाज, हजरतुल्लाह जजई और नजीबुल्लाह जादरान का शिकार किया था। हालांकि इतने शानदार प्रदर्शन के बाद भी बुमराह को प्लेयर ऑफ द मैच का अवॉर्ड नहीं मिला।

उनकी जगह सूर्यकुमार यादव को प्लेयर ऑफ द मैच के अवॉर्ड से नवाजा गया, जिन्होंने 28 गेंद पर आक्रमक 53 रन ठोके थे। देखा जाए तो बल्लेबाजी में सूर्या की पारी और गेंदबाजी में जसप्रीत बुमराह का स्पेल दोनों ही भारत की जीत के लिए अहम थे। लेकिन बुमराह ने जिस तरह से अफगानिस्तान के खिलाफ शुरुआत में प्रेशर बनाया। वो तारीफ के काबिल था। बुमराह भी प्लेयर ऑफ द मैच बनने के उतने ही हकदार थे जितने सूर्यकुमार यादव।

कुछ ऐसा रहा मैच का हाल

भारतीय टीम के कप्तान रोहित शर्मा ने अफगानिस्तान के खिलाफ टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया था। ऐसे में भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 8 विकेट पर निर्धारित 20 ओवर में 181 रन ठोक डाले। रोहित शर्मा और विराट कोहली के आउट होने के बाद सूर्यकुमार यादव (53) और हार्दिक पंड्या (32) ने मोर्चा संभाला। अंत में अक्षर पटेल ने भी तेज गति से 12 रन बनाए। अफगानिस्तान की तरफ से राशिद खान ने सर्वाधिक 3 विकेट लिए थे। 182 रन के टारगेट का पीछा करते हुए अफगानिस्तान सिर्फ 134 रन पर ही ढेर हो गई। भारत की तरफ से 3-3 विकेट जसप्रीत बुमराह और अक्षर पटेल ने झटके। 2 विकेट कुलदीप यादव को मिली। वहीं एक-एक सफलता अक्षर पटेल और रविंद्र जडेजा के हाथ भी लगी।

ऑस्ट्रेलिया की इस वर्ल्ड कप में लगातार 5वीं जीत

- बांग्लादेश को DLS मेथड से 28 रन से हराया
- कमिंस की हैट्रिक, वॉर्नर की फिफ्टी

एंटीगुआ, एजेंसी। ऑस्ट्रेलिया ने ICC टी-20 वर्ल्ड कप के चौथे सुपर-8 मुकाबले में बांग्लादेश को 28 रन से हरा दिया। ऑस्ट्रेलिया की यह इस वर्ल्ड कप में लगातार 5वीं जीत है। ऑस्ट्रेलिया ने शुक्रवार को एंटीगुआ के सर विवियन रिचर्ड्स स्टेडियम में टॉस जीतकर पहले बॉलिंग का फैसला लिया। बांग्लादेश ने 20 ओवर में 8 विकेट खोकर 140 रन बनाए और ऑस्ट्रेलिया को 141 रन का टारगेट दिया।

जवाब ऑस्ट्रेलिया ने 11.2 ओवर के बाद 2 विकेट के नुकसान पर 100 रन बनाए थे तभी बारिश की वजह से खेल रोक दिया गया। जो बाद में पूरा नहीं हो सका और ऑस्ट्रेलिया ने यह मैच DLS (डकवर्थ लुईस स्टर्न) मेथड से 28 रन से जीत लिया।

टी-20 वर्ल्डकपः 2024 में ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाज पैट कमिंस ने हैट्रिक ली है. बांग्लादेश के खिलाफ मुकाबले में अपने आखिरी के दो ओवरों में पैट कमिंस ने ये हैट्रिक पूरी की. पैट कमिंस ने महमुदुल्लाह, मेहदी हसन और तौहीद हृदय को आउट कर टी-20 वर्ल्ड कप की अपनी पहली हैट्रिक ली.

बांग्लादेश की इनिंग के18वें ओवर की आखिरी दो गेंदों पर कमिंस ने महमुदुल्लाह, मेहदी हसन का विकेट लिया. जबकि तौहीद हृदय को 20वें ओवर की पहली गेंद पर चलता कर हैट्रिक पूरी की. टी-20 वर्ल्ड कप के इतिहास में ली गई ये 7वीं हैट्रिक रही. वहीं, इस कामयाबी के साथ पैट कमिंस टी-20 वर्ल्ड कप कप में हैट्रिक लेने वाले दूसरे ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाज बन गए.

पैट कमिंस टी-20 वर्ल्डकप में हैट्रिक लेने वाले 7वें गेंदबाज

टी-20 वर्ल्डकप के इतिहास में हैट्रिक लेने वाले कमिंस दुनिया के 7वें गेंदबाज हैं. सबसे पहले ये कारनामा ब्रेट ली ने किया था. उसके बाद 2021 के टी-20 वर्ल्ड कप में आयरलैंड के कर्टिस कैम्फर ने. 2021 के टी-20 वर्ल्ड कप में ही श्रीलंका के वानिंदु हसारंगा और साउथ अफ्रीका के कैगिसो रबाडा के भी हैट्रिक देखने को मिले.

ISSF के कोटा बदलाव को स्वीकार करने के बाद श्रेयसी भारतीय निशानेबाजी टीम से जुड़ीं

नई दिल्ली, एजेंसी। अनुभवी ट्रैप निशानेबाज श्रेयसी सिंह को अंतर्राष्ट्रीय निशानेबाजी महासंघ (आईएसएसएफ) द्वारा कोटा बदलाव का आग्रह स्वीकार करने के बाद पेरिस ओलम्पिक के लिए अंतिम 21 सदस्यीय भारतीय निशानेबाजी टीम में जोड़ दिया गया है। भारतीय राष्ट्रीय राइफल संघ (एनआरएआई) ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। चूंकि मनु भाकर ने महिला 10 मीटर एयर पिस्टल और 25 मीटर पिस्टल स्पर्धाओं दोनों के लिए क्वालीफाई किया है। इन में से एक कोटा स्थान महिला ट्रैप निशानेबाज के लिए निर्धारित है जिससे श्रेयसी को टीम में जगह मिल गयी।

एनआरएआई के महासचिव सुल्तान सिंह ने कहा,÷हमने आईएसएसएफ से 10 मीटर एयर पिस्टल महिला से एक कोटा स्थान को ट्रैप महिला से बदलने का आग्रह किया था और हमें इसे मंजूर किये जाने पत्र प्राप्त हुआ है।इसके परिणामस्वरूप श्रेयसी सिंह को पहले से प्रकाशित 20 नामों की सूची से जोड़ दिया गया है।

श्रेयसी महिला ट्रैप स्पर्धा में राजेश्वरी कुमारी के साथ शुरुआत करेंगी। टीम में अब राइफल में आठ, पिस्टल में सात और शॉटगन स्पर्धा में छह सदस्य शामिल हैं। मिश्रित स्पर्धाओं को शामिल करते हुए, टीम अब खेल महाकुंभ में 28 जुलाई से शुरुआत करेगी।

गंभीर से पहले वीवीएस लक्ष्मण बनेंगे टीम इंडिया के हेड कोच? रिपोर्ट में हुआ बड़ा खुलासा

नईदिल्ली, एजेंसी। भारतीय क्रिकेट टीम के हेड कोच को लेकर इन दिनों चर्चाएं तेज़ हैं. टीम इंडिया इन दिनों टी20 वर्ल्ड कप 2024 खेल रही है. इस विश्व कप के बाद टीम के मौजूदा

हेड कोच राहुल द्रविड़ का कार्यकाल खत्म हो जाएगा. द्रविड़ के बाद कौन भारतीय टीम का कोच बनेगा? इस बात को लेकर अभी कोई आधिकारिक जानकारी तो सामने नहीं आई है.

लेकिन, मीडिया रिपोर्ट्स की माने तो गौतम गंभीर का हेड कोच बनना तय है. लेकिन अब सामने आई जानकारी चौंका देने वाली है, जिसमें बताया गया कि गंभीर से पहले वीवीएस लक्ष्मण टीम इंडिया के हेड कोच बनेंगे. बता दें कि टीम इंडिया टी20 वर्ल्ड 2024 के बाद 5 मैचों की टी20 सीरीज़ के लिए ज़िम्बाब्वे का दौरा करेगी. न्यूज एजेंसी पीटीआई के मुताबिक इस दौरे पर टीम इंडिया के साथ नेशनल क्रिकेट एकेडमी के चीफ वीवीएस लक्ष्मण जा सकते हैं.

अगर गंभीर टीम इंडिया के कोच बनते हैं, तो वह ज़िम्बाब्वे दौरे पर टीम इंडिया के साथ नहीं जाएंगे. हालांकि अभी इस बारे में कोई आधिकारिक जानकारी सामने नहीं आई है. बीसीसीआई के एक सोर्स ने बताया, इस बात की संभावना है कि वीवीएस लक्ष्मण एनसीए के कुछ कोच के साथ ज़िम्बाब्वे जाएंगे. जब भी राहुल द्रविड़ और पहली टीम के कोच ने अपने कार्यकाल के दौरान ब्रेक लिया, तब लक्ष्मण और उनकी टीम हमेशा आगे आई.

कैरन्स कप शतरंज

भारत की हरिका दूसरे स्थान पर कायम

सैंट लुईस , यूएसए, एजेंसी। एक माह बाद होने वाले शतरंज ओलंपियाड के ठीक पहले स्बही भारतीय खिलाड़ी दुनिया भर के महत्वपूर्ण टूर्नामेंट में खेल रहे है । भारतीय महिला टीम की बेहद महत्वपूर्ण सदस्य ग्रांड मास्टर द्रोणावल्ली हरिका इस समय यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका में चल रहे कैरन्स कप शतरंज के चौथे संस्करण में दुनिया की नौ अन्य दिग्गज महिला खिलाड़ियों के साथ खेल रही है और राउंड रॉबिन आधार पर हो रहे इस टूर्नामेंट में पाँच राउंड के बाद 3 अंक बनाकर उक्रेन की मारिया मुजयचूक के साथ सयुंक्त दूसरे स्थान पर चल रही है । चीन की तीन ज़्होंगाई 3.5 अंक बनाकर सबसे आगे चल रही है ।

हरिका नें दूसरे राउंड में स्विट्ज़रलैंड की पूर्व विश्व चैम्पियन अलेक्ज़ेंड्रा कोस्टेनियुक को मात दी थी जबकि अन्य चार मुकाबलों में उन्होने जॉर्जिया की नाना दगनिडजे , यूएसए की एलिस ली ओर इरिना कृश और उक्रेन की मारिया मुजयचूक के साथ बाज़ियाँ ड्रॉ खेली है । वहीं शारजाह मास्टर्स में हुए नुकसान की भरपाई करते हुए उन्होने अब तक अपनी फीडे रेटिंग में इस टूर्नामेंट में 3 अंको का सुधार किया

हॉकी इंडिया ने प्री-ओलंपिक शिविर के लिए किया भारतीय टीम का किया एलान, स्ट्राइकर दिलप्रीत का कटा पत्ता

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय टीम एफआईएच हॉकी प्रो लीग में सफल प्रदर्शन के बाद लौट रही है। फिलहाल टीम 16 मैचों में 24 अंकों के साथ चौथे स्थान पर है।

हॉकी इंडिया ने गुरुवार को प्री-ओलंपिक शिविर के लिए 27 संभावित खिलाड़ियों का एलान कर दिया। यह शिविर 21 जून से 8 जुलाई तक यहां एसएआई केंद्र में आयोजित किया जाएगा। ओलंपिक में भारत को बेल्जियम, अर्जेंटीना, न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया और आयरलैंड के साथ पूल बी में रखा गया है। टोक्यो खेलों के कांस्य पदक विजेता 27 जुलाई को न्यूजीलैंड के खिलाफ अपने ओलंपिक अभियान की शुरुआत करेंगे। भारतीय टीम एफआईएच हॉकी प्रो लीग में सफल प्रदर्शन के बाद लौट रही है।

फिलहाल टीम 16 मैचों में 24 अंकों के साथ चौथे स्थान पर है। कोर ग्रुप में गोलकीपर कृष्ण बहादुर पाठक, पीआर श्रीजेश, सूरज करकेरा और डिफेंडर हरमनप्रीत सिंह,

जरमनप्रीत सिंह, अमित रोहिदास, जुगराज सिंह, संजय और आमिर अली शामिल हैं।

मिडफील्डर्स के तौर मनप्रीत सिंह, हार्दिक सिंह, विवेक सागर प्रसाद, सुमित, शमशेर सिंह, नीलकांत शर्मा, राजकुमार पाल, विष्णुकांत सिंह, आकाशदीप सिंह और मोहम्मद राहील मौसीन को शामिल किया गया है। वहीं, मनदीप सिंह, ललित कुमार उपाध्याय, अभिषेक, दिलप्रीत सिंह, सुखजीत सिंह, गुरजंत सिंह, बॉबी सिंह धामी और अरिजीत सिंह हुंडल फॉरवर्ड हैं जिन्हें शामिल किया गया है। भारतीय पुरुष हॉकी टीम के मुख्य कोच क्रेग फल्टन का मानना है कि दुनिया की शीर्ष टीमों के खिलाफ प्रो लीग मैच उनके लिए एक शानदार अनुभव था।

उन्होंने कहा, हम इस शिविर में प्रशिक्षण का एक महत्वपूर्ण खंड शुरू करना चाहते हैं, और हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि हम पेरिस 2024 ओलंपिक से पहले सर्वश्रेष्ठ फॉर्म में हों।

मिचेल स्टार्क बने वर्ल्ड कप के सबसे महान गेंदबाज़, मलिंगा को पछाड़ बना दिया विश्व रिकॉर्ड

नईदिल्ली, एजेंसी। वर्ल्ड कप इतिहास के सबसे महाने गेंदबाज़ बन गए. वनडे और टी20 फॉर्मेट के विश्व कप को मिलाकर स्टार्क सबसे ज़्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज़ बन गए. उन्होंने श्रीलंका के पूर्व दिग्गज तेज़ गेंदबाज़ लासिथ मलिंगा को पछाड़ दिया. मलिंगा ने अपने करियर में वर्ल्ड कप खेलते हुए 94 विकेट झटके थे.

अब मिचेल स्टार्क उनसे आगे निकलते हुए 95 विकेट के आंकड़े पर पहुंच गए. ऑस्ट्रेलियाई पेसर ने टी20 वर्ल्ड कप 2024 में बांग्लादेश के खिलाफ खेले गए मैच में यह ऐतिहासिक आंकड़ा छुआ. टी20 वर्ल्ड कप 2024 का 44वां मैच ऑस्ट्रेलिया और बांग्लादेश के बीच खेला गया. यह सुपर-8 के चरण का मैच था, जिसमें स्टार्क ने तंज़ीद हसन को बोल्ड कर अपने करियर में विश्व कप का विकेट नंबर 95 चटकाया. स्टार्क ने मैंच के पहले ही ओवर की तीसरी गेंद पर तंजीद को बोल्ड कर दिया था.

स्टार्क ने वर्ल्ड कप में मलिंगा से कम पारियों में सबसे ज़्यादा विकेट लेने का कारनामा किया. मलिंगा ने वर्ल्ड कप की 59 पारियों में में 94 विकेट चटकाए थे, जबकि स्टार्क ने सिर्फ 52 पारियों में 95 विकेट अपने नाम कर लिए. इस लिस्ट में बांग्लादेश के स्टार ऑलराउंडर शाकिब अल हसन तीसरे नंबर पर हैं. शाकिब ने 75 पारियों में 92 विकेट अपने नाम कर लिए हैं.

अब तक ऐसा रहा मिचेल स्टार्क का व्हाइट बॉल करियर

मिचेल स्टार्क ने अब तक अपने करियर में 121 वनडे और 63 टी20 इंटरनेशनल मैच खेल लिए हैं. वनडे की 121 पारियों में उन्होंने 22.96 की औसत से 236 विकेट लिए हैं, जिसमें उनका बेस्ट फिगर 6/28 का रहा है. इसके अलावा टी20 इंटरनेशनल की 63 पारियों में 23.88 की औसत से 76 विकेट अपने नाम कर लिए हैं, जिसमें उनका बेस्ट फिगर 4/20 का रहा है.

वर्ल्ड कप इतिहास में सबसे ज़्यादा विकेट

-मिचेल स्टार्क- 52 पारियां- 95 विकेट
-लासिथ मलिंगा- 59 पारियां- 94 विकेट
-शाकिब अल हसन- 75 पारियां- 92 विकेट
-ट्रेंट बोल्ट- 47 पारियां- 87 विकेट
-मुथैया मुरलीधरन- 48 पारियां- 79 - विकेट
-टिम साऊदी- 47 पारियां- 77 विकेट
-ग्लेन मैक्ग्रा (सिर्फ वनडे वर्ल्ड कप में)- 39 पारियां- 71 विकेट
-मोहम्मद शमी- 32 पारियां- 69 विकेट
-शाहिद अफरीदी- 58 पारियां-69 विकेट
एडम जैम्पा-34 पारियां- 62 विकेट.

संक्षिप्त समाचार

सऊदी अरब में भीषण गर्मी का प्रकोप जारी

मक्का, एजेंसी। सऊदी अरब में भीषण गर्मी के बीच इस साल हज यात्रा के मरने वालों की संख्या 1000 के पार पहुंच गई है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, सऊदी अरब के मक्का में भीषण गर्मी के कारण इस साल हज के दौरान 1,000 से ज़्यादा तीर्थयात्रियों की मौत हो गई है। मक्का में तापमान 49 डिग्री सेल्सियस (120 डिग्री फ़ारेनहाइट) तक पहुंच जाने के कारण हजारों लोगों को हीटस्ट्रोक का इलाज भी कराया जा रहा है। मरने वालों में आधे से ज़्यादा तीर्थयात्री अपंजीकृत थे। एक अरब राजनयिक के अनुसार, मिस्र से आए लगभग 658 तीर्थयात्री मारे गए हैं। इनमें से 630 अपंजीकृत तीर्थयात्री थे।

कई तीर्थयात्रियों के लापता होने की भी खबर है। फेसबुक और अन्य सोशल मीडिया नेटवर्क पर लापता लोगों की तस्वीरें और जानकारी के लिए अनुरोधों की बाढ़ आ गई है। सऊदी सरकार के अनुसार, इस साल हज में 1.8 मिलियन से अधिक लोग हिस्सा ले रहे हैं, जो दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक समारोहों में से एक है। एहतियाती उपायों के तहत, हज अधिकारियों ने तीर्थयात्रियों से छाते साथ रखने और हाइड्रेटेड रहने को कहा है।

सीएनएन की रिपोर्ट के अनुसार, सऊदी सेना ने हीटस्ट्रोक पीड़ितों की देखभाल के लिए चिकित्सा इकाइयों के साथ 1,600 से अधिक कर्मियों और 30 त्वरित प्रतिक्रिया टीमों को तैनात किया है। अन्य 5,000 स्वास्थ्य और प्राथमिक चिकित्सा स्वयंसेवकों को भी तैनात किया गया है। पिछले साल, केवल 240 तीर्थयात्रियों की मृत्यु की सूचना मिली थी, जिनमें से अधिकांश इंडोनेशियाई थे। सोमवार को, राष्ट्रीय मौसम विज्ञान केंद्र ने मक्का में ग्रैंड मस्जिद में 51.8 डिग्री सेल्सियस तापमान दर्ज किया। अध्ययनों से पता चला है कि इस क्षेत्र में तापमान हर दशक में 0.4 डिग्री सेल्सियस बढ़ रहा है।

सर्बिया में तो डॉक्टरों का कहना है कि हार्ट और गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं से पीड़ित लोगों की संख्या में 109 गुना का इजाफा हुआ है। यूरोप में भी गर्मी का खूब असर दिख रहा है। यहां गर्मी के चलते पर्यटकों की संख्या में कमी आई है। अमेरिका में करीब 8 करोड़ लोगों को अलर्ट जारी किया गया है। कई राज्य भीषण गर्मी की चपेट में हैं। इसके अलावा पड़ोसी देश मेक्सिको में भी गर्मी से बुरा हाल है। न्यूयॉर्क में तो पहली बार कूलिंग सेंटर खोले जा रहे हैं ताकि लोगों को चिलचिलाती गर्मी से कुछ राहत दी जा सके। ऐरिजोना में तापमान 45 डिग्री सेल्सियस के करीब पहुंच गया। आमतौर पर यहां इतना तापमान नहीं हुआ करता।

इलटी में इलाज न मिलने से भारतीय मजदूर की दर्दनाक मौत, मशीन में आकर कट गया था हाथ

रोम, एजेंसी। इटली में 31 वर्षीय एक भारतीय मजदूर का हाथ एक भारी मशीन की चपेट में आकर हाथ कट गया। उसके नियोक्ता ने उपचार कराने के बजाए उसे सड़क के किनारे फेंक दिया, जिससे उसकी दुखद मौत हो गई।

दरअसल, रोम के निकट लाजियो में सब्जी के एक खेत में काम करते हुए सतनाम सिंह का हाथ भारी मशीन में आकर कट गया था। रोम में भारतीय दूतावास ने बुधवार को एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि इटली के लैटिना में भारतीय नागरिक की दुर्भाग्यपूर्ण मृत्यु की खबर से वह वाकिफ हैं। दूतावास ने बिना ज्यादा जानकारी दिए हुए कहा, हम स्थानीय अधिकारियों के साथ संपर्क में हैं। परिवार से संपर्क करने और वाणिज्य दूतावास सहायता मुहैया कराने के प्रयास जारी हैं। सिंह पंजाब के रहने वाले थे।

इटली मीडिया की खबर के मुताबिक, सिंह के नियोक्ता एंटोनेलो लोवेटो ने उन्हें और उनकी पत्नी को एक वैन में बिठाया और उनके घर के नजदीक सड़क किनारे छोड़ दिया। एएनएसए समाचार एजेंसी ने घर के मालिक इलारियो पेपे के हवाले से खबर में बताया, हमने सिंह की पत्नी की चीखें सुनीं, जो मदद के लिए पुकार रही थी फिर हमने एक लड़के को देखा, जो उन्हें अपनी बाहों में उठाकर घर के अंदर ले गया। उन्होंने बताया, हमें लगा कि वह उनकी मदद कर रहा है लेकिन फिर वह भी भाग गया। पेपे ने कहा, मैं उसके पीछे भागा और मैंने उसे वैन में चढ़ते हुए देखा और मैंने उससे पूछा कि क्या हुआ था और वह उसे अस्पताल क्यों नहीं ले गया। उन्होंने कहा, उसने (लड़के) जवाब दिया कि वह (सिंह) नियमित कर्मचारी के तौर पर पंजीकृत नहीं है। कटे हुए हाथ को फलों के डिब्बे में रखा गया था। सिंह को डेढ़ घंटे तक उपचार नहीं मिला।

इस साल सबसे ज्यादा 1.75 लाख भारतीय पहुंचे मक्का

हजारों में पहुंची मरने वाले जायरीनो की संख्या, अब कैसे होगा अंतिम संस्कार ?

रियाद , एजेंसी। सऊदी अरब हज के लिए पहुंचे यात्रियों की गर्मी की वजह से मौतों का आंकड़ा बढ़ता जा रहा है। मक्का में दम तोड़ने वाले जायरीनो की संख्या अब हजारों में पहुंच गई है। मृतकों में ईरान, भारत, इंडोनेशिया, मिस्र, ट्यूनीशिया के नागरिक शामिल हैं। इस साल 1.75 लाख भारतीय गए हैं और मृतकों में सबसे ज्यादा संख्या मिस्र के लोगों की है। अलग-अलग देशों के आंकड़ों के आधार पर यह जानकारी दी गई है । अरब राजनायिक ने बताया कि मरने वालों में करीब 658 हाजी अकेले मिस्र के हैं वहीं 1400 लोग अब भी लापता हैं। हालांकि सऊदी अरब की तरह से अब तक मरने वालों की संख्या को लेकर कोई पुष्टि नहीं की गई है।बांग्लादेश के भी 21 लोगों की मौत हज के दौरान हुई है। इनमें से 18 पुरुष हैं और तीन महिलाएं। उन सबकी उम्र 48 से 90 साल के बीच है।बांग्लादेश की ओर से जारी हज संबंधित ताजा बुलेटिन में यह जानकारी दी गई है।

भारत के वाणिज्य दूतावास को लिखा खत

मिडिल ईस्ट में पड़ रही भीषण गर्मी के बीच मक्का में 17 जून को तापमान 51.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। वहीं 18 जून को थोड़ी राहत के साथ पारा 47 डिग्री रहा। रिपोर्ट के मुताबिक, 12 से 19 जून तक चले हज के बीच 90 भारतीय यात्रियों की भी मौत हुई है। हज कमेटी ऑफ इंडिया के मुताबिक, इस साल सबसे ज्यादा 1,75,000 भारतीय हज यात्रा के लिए मक्का पहुंचे। केरल के हज मंत्री अब्दुर्रहीमन ने बुधवार को केंद्र सरकार से भारतीयों की सुरक्षा के लिए जरूरी कदम उठाने की मांग की है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, इसके लिए उन्होंने विदेश मंत्री एस जयशंकर और जेद्दाह में मौजूद भारत के वाणिज्य दूतावास को खत लिखा। केरल से करीब 18 हजार 200 हाजी सऊदी अरब गए थे।मंत्री अब्दुर्रहीमन ने लिखा कि जेद्दाह पहुंचने के बाद जायरीनों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। उन्हें 30 किमी दूर असीसी जाने के लिए घंटों इंतजार करना पड़ा।

मिस्र के यात्रियों की तादाद इसीलिए ज्यादा

इसके अलावा वहां रुकने की व्यवस्था भी ठीक तरह से नहीं की गई थी। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक मरने वालों में मिस्र के यात्रियों की तादाद इसीलिए ज्यादा है, क्योंकि इनमें कई ऐसे हैं जिन्होंने हज के लिए रजिस्टर नहीं कराया था। बता दें कि हर साल हज पर जाने वाले हजारों यात्री ऐसे होते हैं, जिनके पास इसके लिए वीजा नहीं होता है। पैसों की कमी की वजह से इस तरह के यात्री गलत तरीकों से मक्का पहुंचते हैं।

इस महीने की शुरुआत में सऊदी ने बिना रजिस्ट्रेशन वाले हजारों हज यात्रियों को मक्का से हटाया था। सऊदी अरब के अधिकारियों के मुताबिक, मक्का पर जलवायु परिवर्तन का गहरा असर हो रहा है। यहां हर 10 साल में औसत तापमान 0.4 डिग्री सेल्सियस बढ़ रहा है। पिछले साल हज पर गए 240 हज यात्रियों की मौत हुई थी। इनमें से ज्यादातर इंडोनेशिया के थे। इस साल करीब 18 लाख हज यात्री हज के लिए पहुंचे हैं। इनमें से 16 लाख लोग दूसरे देशों के हैं।

अंतिम संस्कार पर उठे सवाल

अब सवाल यह उठता है कि क्या हज दौरान मरने वाले जायरीनों के शव को स्वदेश ले आया जा सकता है? या फिर वहीं अंतिम संस्कार किया जाएगा? शव की शिनाख्त कैसे होगी? मृत्यु प्रमाणपत्र कहां से मिलेगा? ऐसी मामले में सऊदी अरब के हज संबंधित क़ानून में साफ जिक्र किया गया है कि अगर हज के दौरान किसी व्यक्ति की मौत हो जाती है तो उसका शव उसके देश में नहीं भेजा जाता।उसे सऊदी अरब में ही दफना दिया जाता है। हज यात्रा की तैयारी करते समय हर व्यक्ति हज से संबंधित एक आवेदन पत्र पर हस्ताक्षर करता है जिसमें लिखा होता है कि अगर सऊदी अरब की ज़मीन पर या आसमान में उसकी मौत हो जाती है तो उसके शव को वहां दफना दिया जाएगा।उनके परिवार या परिजनों की कोई आपत्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।

यूक्रेन को मिली बड़ी राहत, अब अमेरिकी हथियारों की मदद से रूस में घुसकर जवाब देगा कीव

वॉशिंगटन, एजेंसी। रूस-यूक्रेन युद्ध दो साल से ज्यादा समय से जारी हैं। दोनों में से कोई भी देश हथियार डालने के लिए नहीं मान रहा है। इस जंग के चलते रूस और अमेरिका के रिश्तों में भी तनाव आ गया है। वॉशिंगटन लगातार कीव की मदद कर रहा है। अब एक मीडिया रिपोर्ट में अमेरिकी अधिकारियों के हवाले से बताया गया है कि बाइडन प्रशासन ने यूक्रेन को रूसी बलों पर कहीं भी अमेरिका द्वारा आपूर्ति किए गए हथियारों का इस्तेमाल कर हमला करने की इजाजत दी है। अमेरिका ने कहा है कि यूक्रेन की सेना सिर्फ खार्किव के पास के क्षेत्र से ही नहीं बल्कि सीमा पार से भी हमला कर सकती है।

चुपचाप दी गई थी हरी झंडी : एक मीडिया रिपोर्ट में कहा गया है कि यह रुख अमेरिका द्वारा कीव को रूस के अंदर हमला करने के लिए चुपचाप हरी झंडी दिए जाने के कुछ सप्ताह बाद सामने आया है, जो कि खार्किव शहर पर सीमा पार से हुए हमले का जवाब है। हालांकि, उस उस समय अधिकारियों ने यह जोर देकर कहा था कि इस बदलाव का मतलब नीतियों में बदलाव से नहीं है। नीति खार्किव क्षेत्र तक सीमित है।

तब से, यूक्रेनी सेना ने कम से कम एक बार रूस में हमला करने के लिए अमेरिकी हथियारों का इस्तेमाल किया है। बेलगोरोड शहर में लक्ष्यों को नष्ट कर दिया है और रूसी हमले को कड़ी टक्कर देने का प्रबंध किया है। दूसरी ओर कहा जा रहा कि यूक्रेन और अन्य यूरोपीय अधिकारियों ने अमेरिका से अपने प्रतिबंधों में ढील देने के लिए कहा था।

यूक्रेन के साथ समझौता: इससे पहले मंगलवार को, अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जेक सुलिवन ने बताया कि रूस में अमेरिकी हथियारों से हमला करने के बारे में यूक्रेन के साथ समझौता किया गया है। इसका मतलब है कि कीव की सेना रूसी सेना को कहीं भी मार सकती है।

ट्रंप का चुनाव से पहले बड़ा वादा- अमेरिका से स्नातक करने वाले विदेशी छात्रों को मिलेगा ग्रीन कार्ड

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने गुरुवार को सुझाव दिया कि जो विदेशी छात्र अमेरिका से स्नातक की पढ़ाई करते हैं, उन्हें अपने आप अमेरिका में रहने और काम करने के लिए ग्रीन कार्ड मिल जाना चाहिए। ट्रंप ने कहा कि अमेरिका को दुनिया के बेहतरीन दिमाग वाले लोगों को यहां रोकने की जरूरत है। जो लोग यहां रुकना चाहते हैं और उनके पास कोई अच्छी योजना है, जिससे देश को फायदा हो सकता है तो उन्हें यहां रोकना चाहिए।

डोनाल्ड ट्रंप का बड़ा वादा

दरअसल एक पॉडकास्ट के दौरान कई उद्यम पूंजीदाताओं के साथ बातचीत के दौरान डोनाल्ड ट्रंप से सवाल किया गया कि हम कैसे दुनियाभर के बेहतरीन दिमाग को अमेरिका ला सकते हैं? इसके जवाब में ट्रंप ने कहा कि अगर आप (विदेशी छात्र) किसी कॉलेज से स्नातक की डिग्री हासिल करते हैं तो आपको अपने आप ही इस देश में रहने के लिए ग्रीन कार्ड मिल जाना चाहिए। इसमें जूनियर कॉलेज भी शामिल हैं। ट्रंप ने कहा कि मैं कई ऐसी कहानियां जानता हूं, जहां लोगों ने हमारे देश के शीर्ष कॉलेजों से स्नातक की डिग्री ली और वो हमारे देश में रहने के इच्छुक थे और उनके पास बेहतरीन बिजनेस आइडिया था, लेकिन वे यहां रह नहीं सके। अगर कोई यहां से पढ़ाई करता है, लेकिन वह किसी कंपनी के साथ सिर्फ इसलिए डील नहीं कर सकता क्योंकि वह यहां रहने में सक्षम नहीं है तो यह उनके राष्ट्रपति बनने के बाद पहले दिन से यह खत्म होगा। डोनाल्ड ट्रंप जो वादा कर रहे हैं, अगर वह उसे पूरा करते हैं तो यकीनन इस फैसले का भारतीयों को सबसे ज्यादा फायदा होगा क्योंकि अमेरिका में हर साल लाखों की तादाद में भारतीय छात्र पढ़ते हैं।

अप्रवासियों के मुद्दे पर मुखर रहे हैं ट्रंप

उल्लेखनीय है कि ट्रंप जहां एक तरफ अमेरिका से स्नातक करने वालों को अमेरिका की नागरिकता देने की बात कर रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ ट्रंप का अप्रवासियों के खिलाफ रवैया सख्त रहा है।

पाकिस्तान में कुरान की बेअदबी पर भीड़ ने थाने में लगा दी आग, आरोपी को जिंदा जलाया

स्वात, एजेंसी। पाकिस्तान में खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के स्वात जिले में कुरान की कथित तौर पर बेअदबी से गुस्साई भीड़ ने एक व्यक्ति की हत्या कर दी और इस दौरान फैली हिंसा में आठ लोग घायल हो गए। गुस्साई भीड़ ने आरोपी को गोलीमारकर उसे जला दिया। इसके बाद शव घसीटकर बाहर लाए और अधजले शव को लटका दिया। पुलिस ने यह जानकारी दी। स्वात के जिला पुलिस अधिकारी (डीपीओ) जहीदुल्ला ने बताया कि पंजाब के सियालकोट के रहने वाले व्यक्ति ने गुरुवार रात को स्वात की मदयान तहसील में कुरान के कुछ पन्ने कथित तौर पर जलाए थे। जहीदुल्ला ने बताया कि संदिग्ध को हिरासत में लेकर मदयान थाने लाया गया। थाने के बाहर भीड़ जमा हो गई और उन्होंने संदिग्ध को सौंपने की मांग की, जब पुलिस ने ऐसा करने से इनकार कर दिया तो भीड़ में से किसी ने गोली चला दी, जिसके बाद पुलिस ने जवाबी कार्रवाई की। उन्होंने बताया कि दोनों ओर से हुई गोलीबारी में एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया, जिसे मदयान अस्पताल में भर्ती कराया गया। अधिकारी ने बताया कि भीड़ ने उसके बाद थाने में आग लगा दी।

दुनिया पर चढ़ा योग का खुमार

वॉशिंगटन, एजेंसी। देश से लेकर विदेश तक 10वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का उत्साह देखा जा रहा है। न्यूयॉर्क में भीषण गर्मी पड़ रही है, इसके लिए चेतावनी भी जारी की गई है। दिन के समय यहां का तापमान 33.8 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया था। इतनी प्रचंड गर्मी के बावजूद योग के प्रेमियों का उत्साह कम नहीं हुआ। सभी राज्यों और क्षेत्रों से लोग सुबह-सुबह ही यहां पहुंच गए और योग करने के लिए मैट बिछा लिए।

दो दशकों से अधिक का अनुभव

योग प्रशिक्षक और श्वास ध्यान शिक्षिका त्रह्वा ढेकने ने न्यूयॉर्क में भारत के महावाणिज्य दूतावास द्वारा आयोजित योग और ध्यान सत्र का नेतृत्व किया। बता दें आर्ट ऑफ लिविंग फाउंडेशन की स्वयंसेवक के रूप में ढेकने को दो दशकों से अधिक का अनुभव है। कई अन्य योग शिक्षकों और विशेषज्ञों ने भी टाइम्स स्क्वायर पर पूरे दिन अलग-अलग तरीके के ध्यान, व्यायाम और श्वास से जुड़े योग कराए। दिनभर चली गतिविधियों में हजारों लोगों ने भाग लिया।

करीब आठ हजार से 10 हजार प्रतिभागी आए

वहीं, न्यूयॉर्क में भारत के महावाणिज्य दूत बिनय श्रीकांत प्रधान ने कहा कि जैसा कि आप देख सकते हैं कि यहां कई देशों से आए योग प्रतिभागी मौजूद हैं और

यह आज पूरे दिन चलने वाला है। उन्होंने कहा कि यहां करीब आठ हजार से 10 हजार प्रतिभागियों के योगाभ्यास करने की उम्मीद है। उन्होंने कहा, मुझे वाकई खुशी है कि इस साल योग दिवस की थीम स्वयं और समाज के लिए योग है। मुझे यकीन है कि यह आज यहां और अमेरिका के अन्य विभिन्न हिस्सों में भाग लेने वाले सभी लोगों को प्रेरित करेगा।

सात योग सत्र आयोजित हुए

भारत के महावाणिज्य दूतावास ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर कहा कि न्यूयॉर्क के टाइम्स स्क्वायर पर 10वां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया।इस दौरान सात योग सत्र आयोजित किए गए, जिनमें विभिन्न देशों के लगभग 10,000 लोगों ने भाग लिया। प्रधान ने प्रतिभागियों का अभिवादन किया और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए योग के फायदों के साथ ही प्रकृति के साथ सद्भाव को बढ़ावा देने में इसकी भूमिका पर प्रकाश डाला। भारतीय वाणिज्य दूतावास के अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ-साथ प्रवासी भारतीयों के सदस्यों ने भी योग सत्र में भाग लिया।

चीन बाल चैरिटी दिवस : बच्चों की देखभाल और उज्वल भविष्य की कामना को समर्पित दिन

बीजिंग, एजेंसी। चाइना चिल्ड्रेन एंड टीनएजर्स फाउंडेशन ने 22 जून 2002 को रचनात्मक रूप से एक बड़े पैमाने पर सामाजिक कल्याण कार्यक्रम चीन बाल चैरिटी दिवस प्रस्तुत किया, जिसका उद्देश्य बच्चों के मुद्दों पर समाज का ध्यान आकर्षित करना और बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य कार्य का समर्थन करने के लिए धन जुटाना है। इस वर्ष का चीन बाल चैरिटी दिवस निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार आ रहा है। इस दिन में चीन भर में बड़े शहरों से लेकर दूरदराज के गांवों तक विभिन्न प्रकार की चैरिटी गतिविधियां आयोजित की जाएंगी और अनगिनत हृदयस्पर्शी कहानियां देखी जाएंगी, जिससे पूरे देश में बच्चों की भलाई के लिए गहरी चिंता का प्रदर्शन किया जाएगा।

गतिविधियां विभिन्न रूपों में आती हैं, मार्मिक चैरिटी प्रदर्शनों से लेकर उत्साही

चैरिटी रन तक, उत्साहवर्धक चैरिटी बिक्री से लेकर कॉर्पोरेट दान तक, समाज के सभी जगतों के लोग मदद के लिए हाथ बढ़ाकर बच्चों की स्वास्थ्य और शिक्षा के लिए ठोस सहायता प्रदान करते हैं। स्वयंसेवक और दानी संगठन भी सक्रिय रूप से गतिविधियों के माध्यम से गरीब और विकलांग बच्चों को सहायता प्रदान करते हैं, ताकि प्रत्येक बच्चा बेहतर जीवन स्थितियों और शैक्षिक संसाधनों का आनंद ले सके।

चीन बाल चैरिटी दिवस का महत्व धन जुटाने से कहीं अधिक है, वह शिक्षा और वकालत के लिए भी एक महत्वपूर्ण मंच है। सरकारी संस्थाएं और गैर-सरकारी संगठन सेमिनारों, सार्वजनिक व्याख्यानों आदि के माध्यम से बच्चों के अधिकारों और हितों की सुरक्षा के बारे में जनता की जागरूकता बढ़ाते हैं और संबंधित कानूनों और विनियमों के सुधार और कार्यान्वयन को बढ़ावा देते हैं। मीडिया भी रिपोर्टों और विशेष कार्यक्रमों के माध्यम से दान गतिविधियों के प्रभाव को फैलाने में पीछे नहीं रहती, ताकि अधिक लोग इस महान कार्य के बारे में समझ सकें और इसमें भाग ले सकें। जैसे-जैसे बच्चों के मुद्दों पर समाज का ध्यान गहराता जा रहा है, चीन बाल चैरिटी दिवस का प्रभाव भी बढ़ रहा है।

यह दिन न केवल दान गतिविधियों का एक केंद्रित प्रदर्शन है, बल्कि बच्चों के लिए पूरे समाज की देखभाल और जिम्मेदारी का भी प्रतिबिंब है। हम आशा करते हैं कि ऐसे प्रयासों के माध्यम से, प्रत्येक बच्चा अधिक समान और मैत्रीपूर्ण वातावरण में बड़ा हो सकता है और उसका कल आशाओं और सपनों से भरा हो सकता है।

चीन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी उद्योग की विकास रिपोर्ट जारी

बीजिंग, एजेंसी। चीन के थ्येनचिन शहर में गुरुवार को विश्व स्मार्ट व्यवसाय मेला-2024 आयोजित हुआ। मेले में चीन की नई पीढ़ी की कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी उद्योग की वर्ष 2024 विकास रिपोर्ट जारी की गई। रिपोर्ट में कहा गया है कि अब चीन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता उद्यमों की संख्या चार हजार से अधिक हो चुकी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता नए चरण की तकनीकी क्रांति और औद्योगिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण प्रेरक शक्ति और रणनीतिक प्रौद्योगिकी बन गया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि चीन ने नवाचार पर निर्भर रहते हुए स्मार्ट चिप्स, बड़े मॉडल, बुनियादी ढांचा और ऑपरेटिंग सिस्टम, टूल चेन, डीप लर्निंग प्लेटफॉर्म और एप्लिकेशन प्रौद्योगिकी समेत कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी व्यवस्था, औद्योगिक नवाचार पारिस्थितिकी और उद्यम गठबंधन स्थापित किया है। औद्योगिक व्यवस्था को नया आकार देने और नवीन औद्योगीकरण को बढ़ाने में इसकी समर्थन की भूमिका दिख रही है। आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2023 में चीन में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के कोर उद्योग का पैमाना 5 खरब 78 अरब 40 करोड़ युआन रहा, जिसकी वृद्धि दर 13.9 प्रतिशत है। योजना है कि वर्ष 2027 तक सालाना आय 2 करोड़ युआन से अधिक वाले राजकीय औद्योगिक उद्यमों में डिजिटल अनुसंधान और डिजाइन उपकरणों की प्रवेश दर 90 प्रतिशत से अधिक होगी।

जम्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनाव करने की तैयारी में चुनाव आयोग, जमीनी स्तर पर शुरु किया काम

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव 2024 में जम्मू और कश्मीर की ऐतिहासिक भागीदारी ने भारतीय चुनाव आयोग को मतदाता सूची को अद्यतन करने के साथ केंद्र शासित प्रदेश में विधानसभा चुनाव की तैयारी शुरू करने के लिए प्रेरित किया है। पिछली बार जम्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनाव 2014 में हुआ था, जब यह अभी भी एक राज्य था और अनुच्छेद 370 के तहत विशेष दर्जा प्राप्त था। 2019 में, राज्य का विशेष दर्जा रद्द कर दिया गया और दो केंद्र शासित प्रदेशों - जम्मू-कश्मीर और लद्दाख में विभाजित कर दिया गया। तब से यूटी विधानसभा चुनावों का इंतजार कर रहा है। सुप्रीम कोर्ट ने जम्मू-कश्मीर में चुनाव प्रक्रिया पूरी करने के लिए चुनाव आयोग के लिए 30 सितंबर, 2024 की समय सीमा तय की है। बताया जा रहा है, चुनाव आयोग ने केंद्रशासित प्रदेश में जमीनी काम शुरू कर दिया है और विधानसभा चुनाव कराने के लिए अगस्त और सितंबर के बीच की अवधि पर विचार हो रहा है। हालाँकि, चुनाव आयोग ने अभी तक चुनावों के लिए अस्थायी समयसीमा की घोषणा नहीं की है। शुक्रवार को जारी बयान में, चुनाव निकाय ने कहा कि लोकसभा चुनाव सफलतापूर्वक संपन्न होने के बाद, हरियाणा, महाराष्ट्र और झारखंड में विधानसभा चुनावों की तैयारी शुरू कर दी है और इन राज्यों में मतदाता सूची को अद्यतन करने की प्रक्रिया 1 जुलाई 2024 को अर्हता तिथि के रूप में निर्धारित की गई है। बयान में कहा गया है कि इसके अलावा, निर्वाचन क्षेत्रों के परिसीमन के बाद एक नए सदन के गठन के लिए केंद्र शासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर की विधान सभा के लिए आम चुनाव भी आयोजित किया जाना है।

पुणे कार दुर्घटना मामला : सुनवाई पूरी...फैसला 25 जून को

मुंबई । पुणे कार दुर्घटना मामले में बॉम्बे हाईकोर्ट ने शुक्रवार को नाबालिग आरोपी की चाची द्वारा उसकी गिरफ्तारी के खिलाफ दायर याचिका पर अपना फैसला सुरक्षित रखा। 17 वर्षीय आरोपी पिछले माह कल्याणी नगर में हुई एक सड़क दुर्घटना में कथित रूप से शामिल था, जिसमें दो युवा तकनीशियन मारे गए थे। कोर्ट ने दोनों पक्षों की सुनवाई के बाद अपना फैसला सुरक्षित रखा। कोर्ट 25 जून को अपना फैसला सुनाएगा। मामले की सुनवाई कर हाईकोर्ट ने कहा, पीड़ितों के परिवार सदमे में हैं। लेकिन शराब के नशे में दुर्घटना करने वाला किशोर भी सदमे में है। स्वाभाविक रूप से, इसका उसके दिमाग पर असर पड़ा होगा। इसके पहले 19 जून को पुलिस ने किशोर न्याय बोर्ड (जेजेबी) को अपनी अंतिम रिपोर्ट सौंपी, जिसमें आरोपी के खिलाफ सभी सबूतों का विवरण दिया था। पुलिस ने मामले में सुनवाई के लिए किशोर को वयस्क के रूप में मानने की अनुमति देने के लिए याचिका दायर की थी। उन्होंने कहा, हमने जेजेबी को सभी साक्ष्य प्रस्तुत किए हैं, जो साबित करते हैं कि वह 19 मई की शाम को अपने घर से शुरू होकर दुर्घटना होने तक पोर्श कार चला रहा था। रिपोर्ट में उन प्रत्यक्षदर्शियों के बयान शामिल हैं, जिन्होंने नाबालिग को कार चलाते हुए देखा, जांच के दौरान बरामद सीसीटीवी फुटेज और कोसी रेस्तरां और ब्लैक क्लब में उसके शराब पीने के साक्ष्य शामिल हैं। अपराध शाखा के अधिकारी ने कहा कि रिपोर्ट किशोर को वयस्क के रूप में सुनवाई के लिए मानने की उनकी याचिका का समर्थन करती है। उन्होंने कहा इस बीच, जांच से पता चला है कि किशोर के रक्त के नमूने, जो उसकी मां के रक्त के नमूनों के साथ बदले गए थे, को ससून जनरल अस्पताल में जैव-चिकित्सा अपशिष्ट के रूप में निपटाया गया था। नाबालिग लड़के की मां और पिता, दो डॉक्टरों- डॉ अजय टावरे और डॉ श्रीहरि हल्नोर - और एक अस्पताल कर्मचारी, अतुल घाटकांबले, वर्तमान में रक्त के नमूने की अदला-बदली के मामले में उनकी कथित संलिप्तता के लिए जेल में हैं।

अदालत में सिंघवी का तक... क्या जजों को बदनाम करने अधिकार

नई दिल्ली । जेल में बंद दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को राउज एवेन्यू कोर्ट से गुरुवार शाम को जमानत मिली थी लेकिन शुक्रवार को रिहाई पर रोक लगा दी। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने शराब घोटाले से जुड़े धन शोधन मामले में निचली अदालत के जमानत आदेश को चुनौती देकर हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया। ईडी की ओर से अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल (एएसजी) एसवी राजू ने की वेकेशन बेंच में याचिका लगाई, सुनवाई के बाद हाईकोर्ट ने रिहाई पर रोक लगा दी। एएसजी राजू ने कहा कि मैं तत्काल रोक की मांग कर रहा हूं। हमारी बात निचली अदालत में नहीं सुनी गई। सीएम केजरीवाल का प्रतिनिधित्व कर रहे वरिष्ठ अधिवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी ने स्टे लगाने की मांग का विरोध किया। सिंघवी ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट के दस फैसले हैं कि जमानत रद्द करना जमानत देने से बिल्कुल अलग होता है। दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद हाईकोर्ट ने निर्देश दिया कि मामले की पूरी सुनवाई होने तक जमानत आदेश लागू नहीं किया जाएगा। वकील सिंघवी ने दलीलें देकर कहा कि जमानत की सुनवाई कैसी होनी चाहिए? इस बारे में गलत धारणा है। सिर्फ इसलिए कि इसमें राजनीतिक विरोध शामिल है और अगर जज द्वारा सभी मांगों का निपटारा नहीं किया जाता है, तब इससे एएसजी राजू को जज को बदनाम करने का अधिकार मिल जाता है। यह निंदनीय है, दुखद है। सिंघवी ने कहा कि ईडी पूरी तरह से पक्षपातपूर्ण है। हर तर्क में पूरी तरह पक्षपात दिखता है। निचली अदालत में मामला पांच घंटे चला। राजू ने करीब 3 घंटे 45 मिनट का समय लिया और फिर ट्रायल जज पर दोष मढ़ दिया। सिंघवी ने हाईकोर्ट में दलील दी कि ईडी को लगता है कि चूंकि सीएम का मामला है, तब घंटों सुना जाना चाहिए और जज को निबंध लिखना चाहिए।

यादव सरकार में मंत्री शाह ने मदरसों को लेकर दिया बड़ा बयान

खंडवा । मध्य प्रदेश के मंत्री विजय शाह ने मदरसों को लेकर बड़ा बयान दिया है। मंत्री शाह ने कहा है कि हिंदुस्तान में कोई भी शिक्षण संस्थान अगर तिरंगे का अपमान करेंगी, यहां राष्ट्रगान नहीं होगा, तब उनका बहुत-कुछ बंद हो जाएगा। उन्होंने यह बात खंडवा के हॉली स्प्रिट कॉन्वेंट स्कूल में कही। शाह ने अंतरराष्ट्रीय विश्व योग दिवस पर स्कूल में योग किया। गौरतलब है कि जनजातीय कार्य मंत्री शाह दो दिन पहले भी इसी तरह की मांग की थी। उन्होंने कहा था कि मैं कुछ समय के लिए स्कूल शिक्षा मंत्री था। तब ये आदेश निकाला था कि हर सरकारी, प्राइवेट स्कूल में झंडा वंदन होगा, जन गण मन होगा। लेकिन उस आदेश में थोड़ी सी कमी रह गई थी। वह आदेश छठवीं से 12वीं तक के विद्यालयों के लिए था। लेकिन इस आदेश को पहली से लागू कर दिया जाए। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से मेरा अनुरोध है। उनकी इस बात ने पूरे प्रदेश में सुर्खियां बटोरी थीं। कैबिनेट और जनजातीय कार्य मंत्री विजय शाह ने जब मदरसों में राष्ट्रगान और ध्वजारोहण अनिवार्य करने की मांग की थी, तब मध्य प्रदेश के स्कूल शिक्षा मंत्री राव उदय प्रताप सिंह ने नकार दिया था।

नीट पेपर लीक मामले में देशभर में कांग्रेस का धरना-प्रदर्शन

नई दिल्ली । भारत में नीट यूजी के रिजल्ट पर हंगामा बपर हुआ है। परीक्षा में धांधली को लेकर मध्यप्रदेश सहित देशभर में कांग्रेस जबरदस्त प्रदर्शन कर रही है।मेडिकल व डेंटल कॉलेजों में दाखिले के लिए हुए नेशनल एलिजिबिलिटी कम एंट्रेंस टेस्ट फॉर यूजी (नीट-यूजी) में हुई गड़बड़ियों के विरोध में स्टूडेंट्स जमकर विरोध प्रदर्शन कर रहे है। कांग्रेस ने दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। कांग्रेस कार्यकर्ता बड़ी संख्या में भोपाल, दिल्ली, जम्मू, लखनऊ, तेलंगाना सहित देश भर में पेपर लीक के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे हैं। कांग्रेस मांग कर रही है कि स्टूडेंट्स की चिंताओं का समाधान तत्काल किया जाए। **भोपाल में कांग्रेस का धरना** - वहीं नीट परीक्षा को लेकर अभ्यर्थियों को कांग्रेस की यूथ विंग का भी साथ मिल गया है। भोपाल के रोशनपुरा चौराहे पर कांग्रेस के धरना-प्रदर्शन में पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह, प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी सहित कई बड़े नेता शामिल है। कांग्रेस ने एनडीए सरकार का पुतला भी दहन किया। विपक्षी नेता आरोपों के तीर छोड़ रहे हैं। सत्तारूढ़ दल, परीक्षा एजेंसी और अफसर बचाव में बयान दे रहे हैं। मध्यप्रदेश कांग्रेस का आरोप हैं कि मध्यप्रदेश में पांच अलग-अलग तरह की परीक्षाओं के पेपर लीक हो चुके हैं। इन पांच परीक्षाओं में कुल 3 हजार 690 पदों पर आवेदन मांगे गए थे, इसमें 1 लाख 64 अभ्यर्थी परीक्षा में बैठने वाले थे। आरोप हैं कि पिछले दिनों ही इंदौर में कांग्रेस नेता अक्षय कांति बम की अगुआई में चलने वाले एक कॉलेज से पेपर लीक हुए थे। इस मामले में पुलिस ने कुछ गिरफ्तारियां भी की हैं।

दिल्ली के लोगों को राहत, 27 जून से देश के कई हिस्सों में होगी बारिश

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली और इसके आसपास के क्षेत्रों में आज बारिश और धूल भरी आंधी चलने की संभावना है। भारतीय मौसम विभाग के मुताबिक दिन में दिल्ली में आंशिक रूप से बादल छाए रहने का अनुमान है। आज यानी शुक्रवार को अधिकतम और न्यूनतम तापमान 40 और 29 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

इससे पहले गुरुवार को मौसम विभाग ने कहा था कि हल्की बारिश और आंधी ने दिल्ली में गर्मी से लोगों को कुछ राहत मिली है। उत्तर भारत में पश्चिमी विक्षोभ ने गुरुवार को उत्तर भारत के कुछ हिस्सों को प्रभावित किया, जो भीषण गर्मी की चपेट में था। विभाग ने कहा कि अगले चार से पांच दिनों में देश के ज्यादातर हिस्सों में लू नहीं चलेगी।

अनुमान है कि मानसून 27 जून से तीन जुलाई तक मध्य भारत और उत्तर-

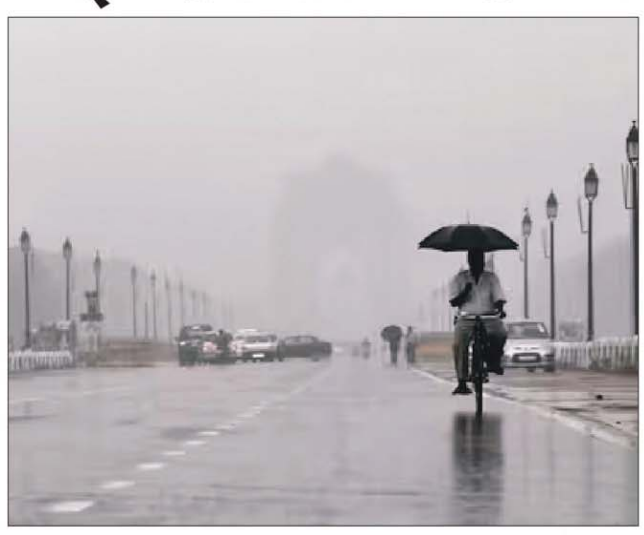

पश्चिम भारत के ज्यादातर हिस्सों में आ जाएगा। मौसम विभाग ने कहा कि पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान, उत्तरी मध्य प्रदेश और यूपी के कई हिस्सों में 20 जून को लू की स्थिति खत्म हो गई है। पश्चिमी विक्षोभ और बंगाल की खाड़ी से निचले स्तर की पूर्वी हवाओं के प्रभाव के तहत, जम्मू, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, उत्तरी हरियाणा, चंडीगढ़ और उत्तरी यूपी में काफी व्यापक रूप से हल्की बारिश देखी गई है। सुबह 8.30 बजे खत्म होने वाले 24 घंटों में उत्तराखंड में अलग-अलग स्थानों पर बहुत भारी बारिश देखी गई और हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और पंजाब में अलग-अलग स्थानों पर ओलावृष्टि हुई।

लू के कारण दिल्ली समेत उत्तर भारत में हीट स्ट्रोक से मरने वालों की संख्या में बढ़ोतरी हुई, जिसके बाद केंद्र ने अस्पतालों को रोगियों की देखभाल के लिए विशेष इकाइयां स्थापित करने के लिए की सलाह दी थी। भीषण गर्मी ने पानी की सप्लाई और बिजली ग्रिडों को प्रभावित कर दिया है, जिससे दिल्ली और हरियाणा के लोग जल संकट से जूझ रहे हैं।

ढाई साल बाद प्रतिज्ञा पूरी होने पर आंध्रप्रदेश विधानसभा लौटे नायडू

अमरावती। मैं सत्ता में लौटने तक सदन से दूर रहूंगा। इस प्रतिज्ञा के साथ, टीडीपी प्रमुख और राज्य के पूर्व सीएम चंद्रबाबू नायडू नवंबर 2021 में तत्कालीन सत्तारूढ़ वाईएसआर कांग्रेस के सदस्यों के साथ भावनात्मक और तीखी नोकझोंक के बाद आंध्र प्रदेश विधानसभा से चले गए थे। लगभग ढाई साल बाद, नायडू ने शुक्रवार को अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर मुख्यमंत्री के रूप में आंध्रप्रदेश विधानसभा में लौट आए। अपने से बहुत छोटे जगन मोहन रेड्डी के हाथों अपमानजनक हार झेलने के पांच साल बाद, नायडू ने सहयोगी भाजपा और जनसेना पार्टी (जेएनपी) के साथ मिलकर अपनी पार्टी को आंध्र प्रदेश विधानसभा चुनावों में भारी जीत की ओर अग्रसर किया। अपने नवीनतम कार्यकाल में नायडू की प्राथमिकताओं में मुख्यमंत्री अमरावती का विकास है। उन्होंने ग्रीनफील्ड राजधानी में रुकी हुई परियोजनाओं का जायजा लेने के बाद कहा कि वह अमरावती को लेकर दुविधा में हैं। उन्होंने अमरावती की स्थिति पर जल्द ही एक श्वेत पत्र जारी करने और आगे बढ़ने के लिए लोगों से सुझाव लेने का वादा किया। पिछले वाईएसआरसीपी शासन के तहत अमरावती राजधानी शहर परियोजना 2019 से 2024 तक रुकी रही। हालाँकि, सरकार में बदलाव ने राजधानी शहर परियोजना में जान फूंक दी है, क्योंकि नायडू ने घोषणा की है कि अमरावती आंध्र प्रदेश की एकमात्र राजधानी होगी।

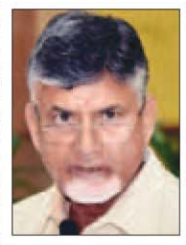

विदेश मंत्रालय ने किया साफ, हज यात्र के दौरान कम से कम 98 भारतीय यात्रियों की अब तक जा चुकी है जान

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत से हज यात्रियों की मौत पर विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जयसवाल ने बताया कि इस साल अब तक 175,000 भारतीय तीर्थयात्री हज यात्रा पर गए हैं। अब तब 98 भारतीय तीर्थयात्री हैं जिनकी हज के दौरान मौत हो गई है। उन्होंने विस्तार से बताया कि इस वर्ष हमारे 175,000 भारतीय पहले ही हज पर जा चुके हैं। अब तक हम अपने 98 नागरिकों को खो चुके हैं। उन्होंने आगे कहा कि ये मौतें प्राकृतिक बीमारी, प्राकृतिक कारणों, पुरानी बीमारी और बुढ़ापे के कारण भी हुई हैं।

रणधीर जयसवाल ने बताया कि अराफ़ात के दिन छह भारतीयों की मृत्यु हो गई और चार भारतीयों की मृत्यु दुर्घटनाओं के कारण हुई। पिछले साल हज में मरने वाले भारतीयों का आंकड़ा 187 था। अमेरिकी कांग्रेस के प्रतिनिधिमंडल के भारत दौरे को लेकर विदेश मंत्रालय का भी बयान सामने आया है।

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जयसवाल ने कहा कि यह सात सदस्यीय कांग्रेस प्रतिनिधिमंडल था जिसने 16 से 20 जून तक भारत का दौरा किया। इसका नेतृत्व हाउस फॉरेन अफेयर्स कमेटी के अध्यक्ष प्रतिनिधि माइकल मैककॉल ने किया। उन्होंने 18 और 19 जून को धर्मशाला का दौरा किया। उन्होंने प्रधानमंत्री से भी मुलाकात की। उन्होंने विदेश मंत्री और वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री से भी मुलाकात की।

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने साफ तौर पर कहा कि मैं परम पावन दलाई लामा पर भारत की स्थिति को दोहराना चाहूंगा। वह एक सम्मानित धार्मिक नेता हैं और भारत के लोग उनका गहरा सम्मान करते हैं। परम पावन को अपनी धार्मिक और आध्यात्मिक गतिविधियों के संचालन के लिए उचित शिष्टाचार और स्वतंत्रता दी गई है। अमेरिका के एक शीर्ष सांसद ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से कहा कि चीन को कड़ा संदेश देने के लिए मिलकर काम करना भारत और अमेरिका के रणनीतिक हित में है। उन्होंने कहा कि दोनों लोकतांत्रिक देशों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि अगली पीढ़ी के हथियारों और प्रौद्योगिकी के उत्पादन में वे अग्रणी बने रहें। सांसद माइकल मैककॉल ने नयी दिल्ली में प्रधानमंत्री के साथ एक मुलाकात के दौरान यह बात कही।

तमिलनाडु में जहरीली शराब से मरने वालों की संख्या 47 हुई, कई गंभीर

-सीएम ने कहा-लापरवाही बरतने वाले अधिकारियों को बख्शा नहीं जाएगा

चेन्नई (एजेंसी)। तमिलनाडु के कल्लाकुरिची जिले में जहरीली शराब पीने से मरने वाले लोगों की संख्या 47 पहुंच गई है। 60 से ज्यादा लोग अस्पतालों में भर्ती कराए गए हैं। मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन ने घटना पर दुःख व्यक्त किया और इसे रोकने में विफल रहने वाले अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की गई है। स्टालिन ने मृतकों के परिवार को दस-दस लाख रुपए और अस्पताल में भर्ती लोगों को 50-50 हजार रुपए देने की घोषणा की है। पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति बी गोकुलदास की मौजूदगी में गठित एक सदस्यीय आयोग ने मामले की जांच करने की घोषणा की है, जिसकी रिपोर्ट तीन महीने के अंदर पेश करने को कहा गया है। स्टालिन ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि कल्लाकुरिची में मिलावटी शराब पीने वाले लोगों की मौत की खबर सुनकर मैं स्तब्ध और दुःखी हूं। इस अपराध में शामिल लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया है। इसे रोकने में विफल रहने वाले अधिकारियों के खिलाफ भी कार्रवाई की गई है। राज्यपाल आर.एन. रवि ने भी शोक व्यक्त करते हुए बीमारों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। उन्होंने कहा कि कल्लाकुरिची में अवैध शराब के सेवन से हुई मौतों से गहरा सदमा लगा है। कई और पीड़ित गंभीर हालत में हैं और जिंदगी के लिए संघर्ष कर रहे हैं। शोक संतप्त परिवारों के प्रति मेरी हार्दिक संवेदना है और अस्पतालों में भर्ती लोगों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना करता हूं। राज्य के कई हिस्सों से अवैध शराब के सेवन से अक्सर लोगों की दुःखद मौत की खबरें आती हैं। यह अवैध शराब के उत्पादन और खपत को रोकने में हो रही चूक को दर्शाता है। यह गंभीर चिंता का विषय है।

पर्यावरण को नुकसान पहुंचाए बिना विकास की कोशिश होनी चाहिए : प्रियंका गांधी

नयी दिल्ली। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा ने भीषण गर्मी और लू के कारण हुई कई मौतों पर चिंता व्यक्त करते हुए शुक्रवार को कहा कि विकास इस तरह से होना चाहिए कि पर्यावरण को नुकसान नहीं हो और लोगों की तरक्की भी हो सके। उन्होंने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर पोस्ट किया, ''कई राज्यों में बड़ी संख्या में पेड़ काटे जाने संबंधी खबरें देखीं। दूसरी तरफ, गर्मी से पूरे देश में मौतें हो रही हैं। बढ़ता तापमान नये रिकॉर्ड बना रहा है। इस बार अप्रैल का महीना जलवायु के इतिहास में सबसे गर्म अप्रैल के रूप में दर्ज हुआ है।'' प्रियंका गांधी ने कहा कि विकास कार्य जरूरी हैं, लेकिन हमें ज्यादा से ज्यादा पर्यावरण को सुरक्षित रखने की जरूरत है। उन्होंने कहा, '' हम सबको मिलकर ऐसे विकास की कोशिश करनी होगी, जो हमारे पर्यावरण को नुकसान पहुंचाए बिना हमें आगे बढ़ाए।

सैक्सटॉर्शन के जरिए सर्वाधिक ठगी का शिकार होते हैं युवा और बुजुर्ग

नई दिल्ली (एजेंसी)। आजकल साइबर ठग लड़कियों की डीपी लगाकर फेसबुक या इंस्टाग्राम पर दोस्ती करते हैं। इसके बाद व्हाट्स एप पर नंबर लेकर वीडियो कॉल करते हैं। अचानक ही युवती की अश्लील वीडियो स्क्रीन पर दिखने लगती है। सामने वाला वीडियो कॉल रिकार्ड कर लेता है। वीडियो दिखाकर वसूली का खेल चल रहा है। इसमें सबसे ज्यादा युवा और बुजुर्ग फंस रहे हैं।

साइबर सेल के एक एक्सपर्ट ने सेक्सटार्शन से बचाने के लिए स्टिंग ऑपरेशन करके सोशल मीडिया पर वीडियो साझा किया है। वीडियो में दिखाया है कि कैसे साइबर ठग रिकार्डेड पोर्न वीडियो को स्क्रीन पर ऑन करके सामने वाले से अश्लील बात करते हैं। इस जाल में फंसने वाला शर्म के मारे किसी से शिकायत नहीं करता और रुपये भेजता है। पुलिस ने शर्म छोड़कर साइबर सेल में शिकायत करने की सलाह दी है। पुलिस का कहना है कि ऐसी गैंग सक्रिय हैं जो लड़कियों का झांसा देकर युवाओं और व्यापारियों को फंसाती है और मोटी रकम वसूलती है।क्षेत्र के एक चर्चित डॉक्टर को युवती बनकर साइबर ठग ने फेसबुक पर संपर्क किया। फ्रेंड रिकवेस्ट भेजी। व्हाट्स एप नंबर लिया। तीन दिन तक उनके साथ चैटिंग की। इसके बाद रात में अश्लील वीडियो कॉल करने लगा। न्यूड वीडियो कॉल को रिकार्ड करके डॉक्टर से रुपये मांगे। इसके बाद धमकी दी कि उनका वीडियो यूट्यूब पर अपलोड का देगा। यही नहीं, दिल्ली क्राइम ब्रांच के नाम पर उनको धमकी दी गई। डॉक्टर ने कई बार में कुल 10 लाख रुपये साइबर ठग के चार बैंक खातों में जमा कर दिए। ब्लैकमेलिंग की जा रही थी। आखिर में डॉक्टर ने साइबर थाने में मुकदमा दर्ज कराया।

महाराष्ट्र में शिंदे के मंत्री के पाला बदलने की खबरों ने मचाई हलचल

-भुजबल, अजित की पत्नी सुनेत्रा के राज्यसभा नामांकन से हैं नाराज

नई दिल्ली (एजेंसी)। महाराष्ट्र की शिंदे सरकार के खाद्य और नागरिक आपूर्ति मंत्री छगन भुजबल की महाराष्ट्र के बड़े नेताओं में गिनती होती है। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के वरिष्ठ नेता को तेजतर्रार नेता के रूप में जाना जाता है। भुजबल ने एक बार फिर अपनी पार्टी और महायुति गठबंधन की मुश्किलें बढ़ा दी हैं। इस बार उन्होंने मराठा आरक्षण और पार्टी प्रमुख अजित पवार की पत्नी सुनेत्रा के राज्यसभा नामांकन का मुद्दा उठाया है।

हाल ही में संपन्न हुए लोकसभा चुनाव में एनडीए गठबंधन के खराब प्रदर्शन को लेकर बीजेपी, सीएम एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना और अजित की एनसीपी जैसे महायुति सहयोगियों में टेंशन बना हुआ है। इस बीच भुजबल के अपनी पार्टी छोड़ने की अटकलें तेज हो गई हैं। ऐसे में इस साल अक्टूबर में महाराष्ट्र में होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले शिंदे सरकार की मुश्किलें बढ़ी हुई हैं। साथ ही अजित पवार के साथ खेला हो सकता है।

छगन भुजबल ने बीते दिनों इस बात को दोहराया कि मराठा समुदाय को ओबीसी के कोटे में से आरक्षण नहीं दिया जा सकता। उन्होंने राज्य में जाति आधारित जनगणना कराने की अपनी मांग भी दोहराई। भुजबल का बयान मराठा आरक्षण कार्यकर्ता लक्ष्मण हाके और नवनाथ वाघमारे के विरोध प्रदर्शन के बीच आया जो पिछले छह दिन से अनशन पर हैं।

भुजबल ने कहा कि वे मराठा समुदाय को आरक्षण दिए जाने के खिलाफ नहीं हैं, लेकिन इससे ओबीसी आरक्षण प्रभावित नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा कि मराठा समुदाय को ओबीसी कोटे से आरक्षण नहीं दिया जा सकता। हम यह बात नहीं कह रहे, बल्कि पहले चार आयोग यह बात कह चुके हैं। देश की उच्च अदालत सुप्रीम कोर्ट ने भी इसके लिए इनकार कर दिया है। साथ ही राज्य में जाति आधारित जनगणना से ओबीसी समुदाय के लिए और धन आवंटन का रास्ता साफ होगा। उन्होंने मराठा आरक्षण कार्यकर्ता मनोज जरांगे के प्रदर्शन का जिक्र करते हुए कहा कि फिर से ओबीसी कोटे में से मराठा समुदाय के लिए आरक्षण की मांग उठ रही है।

छगन भुजबल ने कहा था कि उनकी इच्छा सांसद बनने की है और इसीलिए वह नासिक से लोकसभा चुनाव लड़ना चाहते थे। वह राज्यसभा नामांकन के लिए भी उत्सुक थे। भुजबल महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम और एनसीपी अध्यक्ष अजित पवार की पत्नी सुनेत्रा पवार को राज्यसभा उम्मीदवार बनाए जाने के बाद वह परेशान हैं। क्या लोकसभा और राज्यसभा टिकट को लेकर उनके साथ अन्याय हुआ है? इस पर भुजबल ने कहा कि यह सवाल उनसे पूछा जाना चाहिए।

भुजबल की नाराजगी पर अजित पवार ने कहा कि उनकी पार्टी के सहयोगी ने खुद उनसे कहा था कि वह नाराज नहीं हैं। उन्होंने कहा कि विपक्ष समेत कुछ लोग और हमारे करीबी मित्र ऐसी अफवाह फैला रहे हैं, लेकिन उनमें कोई सच्चाई नहीं है। इस बीच, शिवसेना (यूबीटी) अध्यक्ष उद्धव ठाकरे ने भुजबल के एनसीपी से बाहर निकलने की खबरों का जिक्र कर दिया।

भुजबल ने ऐसे किसी भी कदम से इनकार किया है। सुनेत्रा पवार के राज्यसभा नामांकन से नाराजगी पर उन्होंने कहा कि वह परेशान नहीं हैं। राजनीतिक दल में रहते समय आपको मिलजुलकर फैसले लेने होते हैं। हर चीज किसी की इच्छा से नहीं होती। उन्होंने कहा कि वह निर्दलीय नहीं हैं कि अपनी मर्जी से चलेंगे।

भारत-पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय सीमा पर अंतरराष्ट्रीय योग दिवस समारोह का नया कीर्तिमान

- मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल की अध्यक्षता में नडाबेट में गौरवपूर्वक मनाया गया 10वाँ अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

- सुदूरवर्ती क्षेत्रों में रहने वाले लोगों तक योग को पहुँचाने के लिए राज्य सरकार कटिबद्ध

नई दिल्ली (एजेंसी)। अहमदाबाद (ईएमएस)7 इतिहास में पहली बार भारत-पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय सीमा पर बनासकाँठा स्थित ज़ीरो पॉइंट नडाबेट में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल तथा विधानसभा अध्यक्ष शंकरभाई चौधरी की प्रोत्साहक उपस्थिति में शुक्रवार को राज्य स्तरीय अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने पहली बार अंतरराष्ट्रीय सीमा पर अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मना कर नया कीर्तिमान स्थापित किया है। इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर श्रीनगर से किए गए संबोधन का सीधा प्रसारण भी देखा गया। राज्य योग बोर्ड द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय अंतरराष्ट्रीय योग दिवस समारोह के उपलक्ष्य में मुख्यमंत्री ने राज्य के लोगों को शुभकामनाएँ देते हुए योग को दैनिक जीवन में अपनाने का आह्वान किया। मुख्यमंत्री ने जोड़ा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हमारी प्राचीन परंपरा योग को वैश्विक पहचान दिलाई है। मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि राज्य में सवा करोड़ से अधिक लोग आज विश्व योग दिवस समारोह में सहभागी हुए हैं, जो आनंद की बात है। उन्होंने जोड़ा कि सुदूरवर्ती क्षेत्रों में रहने वाले लोगों तक योग को पहुँचाने के लिए राज्य सरकार कटिबद्ध है। राज्य में योग के प्रचार-प्रसार के लिए 51 योग स्टूडियो की स्थापना की गई है। पटेल ने योग के महत्व के विषय में चर्चा करते हुए कहा कि योग स्वास्थ्य सुख का सबल माध्यम बना है। तनावमुक्त व स्वास्थ्यप्रद जीवन शैली के लिए योग उत्तम उपाय है। योग आत्मविश्वास नहीं, अपितु आत्म संयम है। उन्होंने जोड़ा कि स्वास्थ्य सुख के लिए योग सर्वोत्तम है। कोरोना काल में योग ने घर-घर में स्वीकृत प्राप्त की थी। उन्होंने आगे कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रयासों के चलते संयुक्त राष्ट्र संघ (हह) द्वारा 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस घोषित किया गया है। आज विश्व के कोने-कोने में योग पहुँचा है। योग लोगों को स्वस्थ जीवन शैली की प्रेरणा प्रदान करता है। मुख्यमंत्री ने राज्य के सभी नागरिकों को निरामय जीवन की शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि हम सभी नियमित योगाभ्यास के माध्यम से जीवन को सार्थक बनाने के लिए संकल्पबद्ध बनें।

विधानसभा अध्यक्ष शंकरभाई चौधरी ने सीमावर्ती क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस समारोह के आयोजन के लिए राज्य योग बोर्ड तथा मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल का आभार व्यक्त किया। चौधरी ने योग दिवस की शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि आज पूरी दुनिया योग के महत्व को समझने लगी है। जहाँ मानवता है, वहाँ योग है। उन्होंने जोड़ा कि शरीर के सुख के लिए नहीं, अपितु संपूर्ण शाश्वत सुख के लिए योग आवश्यक है।

राज्य योग बोर्ड के अध्यक्ष शीशपाल राजपूत ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस समारोह में सहभागी हुए सभी लोगों का स्वागत किया। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय योग प्रॉटोकोल के अनुसार विभिन्न आसनों व प्राणायामों का निदर्शन कर योग कराए। उन्होंने कहा कि दैनिक जीवन में योग अपनाए जाएँ तो योगी व निरोगी बनने के साथ समाज में सहयोगी एवं उपयोगी बनने की प्रेरणात्मक ऊर्जा मिलती है।

उल्लेखनीय है कि प्रति वर्ष 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है। इस वर्ष 'स्वयं और समाज के लिए योग' थीम पर राज्य में विभिन्न स्थानों पर योग दिवस मनाया गया। राज्य स्तरीय समारोह का सीधा प्रसारण समग्र राज्य में किया गया। नडाबेट में आयोजित राज्य स्तरीय अंतरराष्ट्रीय योग दिवस समारोह में खेल, युवा एवं सांस्कृतिक गतिविधि विभाग के प्रधान सचिव अश्विनी कुमार, सीमा सुरक्षा बल के महानिरीक्षक अभिषेक पाठक, पूर्व सांसद परबतभाई पटेल, विधायक केशाजी चौहाण, प्रवीणभाई माळी, अनिकेत ठाकर, लविंगजी सोलंकी, बनासकाँठा जिला कलेक्टर वरुण कुमार बरनवाल, जिला पुलिस अधीक्षक अक्षयराज मकवाणा, सुईगाम प्रांत अधिकारी कार्तिक जीवाणी सहित अधिकारीगण, कर्मचारीगण, योग प्रशिक्षक, योग प्रेमी, योगाभ्यर्थी सहित लगभग 3000 लोग सहभागी हुए।